साहित्य-मंजरी

भाग-1

साहित्य-मंजरी

भाग-1

कक्षा 9 'अ' पाठ्यक्रम के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

संपादक

स्नेह लता प्रसाद

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
सितम्बर 2002
भाद्रपद 1924

PD 475T MK

ISBN 81-7450-014-6

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**बैंगलूर 560085**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

प्रकाशन सहयोग

संपादन : मीरा कांत
उत्पादन : अरुण चितकारा
सुनील कुमार

सज्जा एवं आवरण
कल्याण बैनर्जी

रु. 27.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसेट प्रेस, 92–बी, गली नं.4, कृष्णा नगर, सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली 110029 द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्वावधान में विद्यालयी स्तर पर विभिन्न शैक्षिक विषयों के लिए पाठ्यचर्या एवं तदनुरूप पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य लगभग चार दशकों से हो रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के लागू होने पर तद्निहित सिद्धांतों, सुझावों और उद्देश्यों के अनुसार उपयुक्त शिक्षण-सामग्री एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया, जिनमें बाल-केंद्रित शिक्षा एवं शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में यह सुझाव भी दिया गया था कि कुछ समय के पश्चात ज्ञान-विज्ञान के विकास, सामाजिक रचना और नवीन दृष्टिकोण तथा मूल्यपरक शैक्षिक आवश्यकताओं को देखते हुए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्पुस्तकों में यथावश्यक संशोधन और परिवर्तन अवश्य किए जाएँ। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000' का निर्माण हुआ। तत्पश्चात नवीन पाठ्यचर्या में सुझाए गए नवीन उद्देश्यों, जीवन मूल्यों, सूचना-संसाधनों एवं शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष की दृष्टि से अपेक्षित शैक्षिक बिंदुओं को समाहित करते हुए विविध विषयों का नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया गया। तदनुसार नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य हाथ में लिया गया। इसी शृंखला में नवीं कक्षा के हिंदी 'अ' पाठ्यक्रम के लिए गद्य-पद्य की इस पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

(क) पुस्तक में गद्य-खंड की पाठ्यसामग्री का चुनाव विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता, रुचि तथा उनकी भाषिक दक्षता के विकास को दृष्टि में रखकर किया गया है। पाठों के चयन में जहाँ जीवन के विविध संदर्भों, नागरिक के मूल कर्तव्यों, मानवाधिकार, केंद्रिक शिक्षाक्रमों के

घटकों तथा मूल्यपरक विषयों के समावेश पर बल दिया गया है, वहीं पद्य-खंड में जीवन के विभिन्न संदर्भों, मानवीय भावों और संवेदनाओं, मूल्यपूरक विषयों तथा काव्य शैली के विविध रूपों के समावेश का ध्यान रखा गया है।

(ख) विविधता और रोचकता की दृष्टि से पुस्तक के गद्य-खंड में वर्णनात्मक तथा विचारात्मक निबंध, कहानी, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, यात्रावृत्तांत आदि गद्य की विभिन्न विधाओं पर आधारित पाठ सम्मिलित किए गए हैं। इन विभिन्न विधागत पाठों के चयन में विषयों की विविधता का विशेष ध्यान रखा गया है।

पुस्तक के पद्य-खंड में हिंदी साहित्य के प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं को कालक्रम के अनुसार सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी आरंभ से अद्यतन हिंदी काव्य की विकास यात्रा से परिचित हो सकें। विषय, भाव, भाषा और शैली के आधार पर सरलता और कठिनाई को ध्यान में रखते हुए कुछ कवियों की रचनाओं को नवी कक्षा में रखा गया है और कुछ को दसवीं कक्षा में। पद्य-खंड में चयनित विषय हैं: बाह्याडंबरों का विरोध, आध्यात्मिकता, बाल-सौंदर्य, भक्ति एवं नीति, प्राकृतिक सौंदर्य, देश-प्रेम, मानवीय गुण एवं कर्तव्य तथा आधुनिक जीवन-दृष्टि।

(ग) प्रत्येक पाठ के अंत में 'प्रश्न-अभ्यास' दिए गए हैं, जिनसे प्रत्येक पाठ में निहित तथ्यों, भावों, विचारों, जीवनमूल्यों एवं भाषा-शैलीगत विशेषताओं को समझने में छात्र-छात्राओं को सहायता मिलेगी। इन प्रश्नों से उनमें कविता के सौंदर्य तत्त्वों को समझने और सराहना करने की क्षमता का भी विकास होगा।

प्रश्न-अभ्यास में इस बार मौखिक प्रश्नों को भी जोड़ दिया गया है जिससे इनके द्वारा विद्यार्थियों में शुद्ध एवं स्पष्ट भाषा में भाव एवं विचार व्यक्त करने की कुशलता का विकास हो सके।

प्रश्न-अभ्यास में कुछ ऐसे भी प्रश्न दिए गए हैं जिनसे छात्र-छात्राओं में स्वयं सोचने एवं मौलिक रूप से अपने विचार लिखकर व्यक्त करने की क्षमता का विकास हो सके। अंत में योग्यता-विस्तार में

कुछ ऐसे प्रश्न और क्रियाकलाप दिए गए हैं, जिनके द्वारा विद्यार्थियों में पठित विषय के बारे में और अधिक ज्ञान संवर्धन हो तथा उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी विकसित हो सके।

जिन लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाएँ इस पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किए जाने की अनुमति दी है उनके प्रति मैं विशेष रूप से अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इस पुस्तक के परिष्कार के लिए शिक्षाविदों और अध्यापकों द्वारा व्यक्त उनकी प्रतिक्रियाओं और सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
फ़रवरी 2001

पांडुलिपि समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. *प्रो. विद्यानिवास मिश्र*
   अवकाश प्राप्त कुलपति, काशी विद्यापीठ, वाराणसी
2. *श्री निरंजन कुमार सिंह,* अवकाश प्राप्त प्रवाचक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
3. *डॉ. माणिक गोविंद चतुर्वेदी*
   अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान
   श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली
4. *डॉ. आनंद प्रकाश व्यास*
   अवकाश प्राप्त प्रवाचक, शिक्षा विभाग
   दिल्ली विश्वविद्यालय
5. *डॉ. मान सिंह वर्मा,* अध्यक्ष
   हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज, दिल्ली
6. *डॉ. वीणा श्रीवास्तव,* प्रवाचक
   सत्यवती कॉलेज, अशोक विहार,दिल्ली
7. *डॉ. प्रभात कुमार*
   प्रवाचक, हंसराज कॉलेज
   मलका गंज, दिल्ली
8. *श्री प्रभाकर द्विवेदी*
   अवकाश प्राप्त मुख्य संपादक
   प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी
   नई दिल्ली
9. *डॉ. नीरा नारंग*
   वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
   दिल्ली विश्वविद्यालय
10. *डॉ. रामनिवास,* प्रवक्ता
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    (एन.सी.ई.आर.टी.), अजमेर
11. *श्री अमर गोस्वामी*
    स्वतंत्र लेखक, सी-181, सेक्टर-26
    नोएडा, गाज़ियाबाद
12. *डॉ. सुरेश पंत,* अवकाश प्राप्त प्रवक्ता
    राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल
    विद्यालय, जनकपुरी, नई दिल्ली
13. *कुमारी इंद्रा सक्सेना*, वरिष्ठ हिंदी अध्यापिका
    डी.एम.स्कूल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    (एन.सी.ई.आर.टी), अजमेर
14. *कुमारी कुसुम सिन्हा,* वरिष्ठ हिंदी
    अध्यापिका, केंद्रीय विद्यालय
    सी.आर.पी.एफ. ग्रुप सेन्टर-1, अजमेर
15. *कुमारी कुसुमलता अग्रवाल*
    हिंदी अध्यापिका, सर्वोदय बाल विद्यालय
    रमेश नगर, नई दिल्ली
16. *श्री अशोक शुक्ल,* हिंदी अध्यापक
    सर्वोदय सहशिक्षा विद्यालय
    एफ.यू. ब्लॉक, पीतम पुरा, दिल्ली
17. *श्रीमती सावित्री शर्मा*, हिंदी अध्यापिका
    डी.एम. स्कूल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    (एन.सी.ई.आर.टी.), अजमेर

एन.सी.ई.आर.टी. के अकादमिक सदस्य

1. *डॉ. (कु.) स्नेह लता प्रसाद,* रीडर, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शि ।
2. *डॉ. अनिरुद्ध राय,* प्रोफ़ेसर, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
3. *डॉ. सत्येंद्र वर्मा,* प्रोफ़ेसर, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग

विषय-क्रम

गद्य - खंड

भूमिका

प्रस्तुत संकलन नौवीं कक्षा के उन छात्र-छात्राओं के लिए तैयार किया गया है जिनकी मातृभाषा हिंदी है और जो आठवीं कक्षा तक प्रथम भाषा के रूप में हिंदी का विधिवत अध्ययन करते आए हैं। इस संकलन की पाठ्य-सामग्री के चयन में नवीनता, स्तर-अनुकूलता, विषयगत विविधता और विधागत विशेषता को यथोचित महत्त्व दिया गया है। पुराने लेखकों की रचनाओं के साथ नए लेखकों की रचनाओं का भी समावेश इस उद्देश्य से किया गया है कि विद्यार्थी नवीन साहित्यिक प्रवृत्तियां तथा अद्यतन भाषा-शैली का भी परिचय प्राप्त कर सकें।

पाठों का क्रमायोजन कालक्रम अथवा विधाओं के अनुसार नहीं किया है बल्कि 'सरलता से कठिनता की ओर' के शैक्षणिक सूत्र को ध्यान में रखकर किया गया है। विषयों, विधाओं और शैलियों की विविधताओं के ताने-बाने द्वारा इसे जीवंत बनाने का भरसक प्रयत्न किया गया है ताकि विद्यार्थियों की रुचियों और योग्यताओं का संतुलित विकास हो सके। इस प्रकार इस पुस्तक का प्रस्तावित क्रम विशुद्ध शिक्षणपरक है।

हमारा प्रयत्न रहा है कि इस पुस्तक से हिंदी गद्य-साहित्य की समृद्धि और शक्ति दोनों की एक झलक हमारे किशोर छात्र-छात्राओं को मिल सके। इसमें निबंध, व्यंग्य, ललित निबंध, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वर्णन आदि विधाओं की रचनाएँ संगृहीत हैं। विधाओं की विविधता से विषय-वस्तु के वर्णन, संदेश, उद्देश्य, प्रस्तुतीकरण और भाषा-शैली में भी अंतर आ जाता है। ये सभी तत्त्व रुचिवर्धक तो होते ही हैं, साथ ही विद्यार्थियों के अनुभव, जानकारी और अभिव्यक्ति को भी समृद्ध करते हैं।

इस पुस्तक के निर्माण में विद्यार्थियों के मानसिक, भावात्मक और भाषिक स्तर तथा उनकी रुचियों को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है, ताकि वे पाठ्य-विषय का आसानी से बोध कर सकें

उस पर मुक्त रूप से विचार कर सकें और विषय-वस्तु को आत्मसात कर सकें। आशा है कि यह रुचिकर साहित्य उन्हें मानसिक स्फूर्ति प्रदान करेगा, अन्य साहित्यिक रचनाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा और प्रकारांतर से उनकी रुचियों का परिष्कार भी करेगा। हम यह मानकर चलते हैं कि इस पुस्तक में संकलित सामग्री के अतिरिक्त विद्यार्थियों की पठन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति एक समृद्ध पुस्तकालय के नियमित उपयोग द्वारा ही हो सकती है। अतः विद्यार्थी पुस्तकालय में बैठकर स्वयं अध्ययन करने की आदत अवश्य डालें।

इस पुस्तक में निबंधों को इसलिए अधिक स्थान दिया गया है कि ये गहन अध्ययन के लिए विशेष उपयोगी होते हैं। निबंध में विषय-वस्तु के प्रतिपादन, लेखक के व्यक्तित्व की व्यंजना तथा अभिव्यंजना-शैली के सूक्ष्म अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है। इसी प्रकार अन्य विधाओं की रचनाओं का चयन करते समय स्वयं उनकी विविधता पर भी यथेष्ट ध्यान दिया गया है।

इसके बावजूद यह पुस्तक एक साधन मात्र है, साध्य तो है भाषा की प्रकृति को समझना तथा कथ्य और अभिव्यक्ति संबंधी विशेषताओं को परख सकना। इस पुस्तक को आधार बनाकर ये सभी भाषा-योग्यताएँ सरलता से विकसित की जा सकती हैं।

पठन-पाठन

प्रस्तावित पुस्तक गहन एवं विशद अध्ययन के लिए है। विषय-वस्तु तथा भाषिक तत्त्वों के ज्ञान और व्यवहार के लिए पाठों को बार-बार पढ़ा जाना चाहिए। भाषा का जितना ही प्रयोग और अभ्यास किया जाता है, अर्थग्रहण एवं अभिव्यक्ति में उतनी ही सुविधा होती है। इसमें जितनी ही स्वाभाविकता की स्थिति आती जाती है, विद्यार्थी भाषा-प्रयोग में उतने ही सक्षम और कुशल होते जाते हैं। सारांश यह है कि विचारों और भावों की अभिव्यक्ति के लिए विद्यार्थी भाषा के सहज प्रयोग में सक्षम हो सकें।

संपूर्ण अध्ययन-काल में पढ़ना विद्यार्थी-जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि इसी कार्य पर समस्त विषयों का ज्ञानार्जन निर्भर है। बोलने और लिखने की योग्यताएँ भी मुख्य रूप से पढ़ने पर ही आधारित हैं। जो व्यक्ति जितना ही अधिक अर्थबोध के साथ पढ़ता है और पठित वस्तु का मनन करता है, वह उतना ही अच्छा वक्ता और लेखक बनता है।

सहायक पुस्तकों की अपेक्षा इस पुस्तक को पढ़ाने में अध्यापक निश्चय ही अधिक क्रियाशील रहेंगे, फिर भी यह अपेक्षित है कि वे उतना ही मार्गदर्शन करें जितना आवश्यक हो। विद्यार्थी स्वयं जितना क्रियाशील और तत्पर रहेंगे उतना ही अच्छा रहेगा। इस पुस्तक का एक लक्ष्य यह भी है कि जहाँ तक संभव हो सके विद्यार्थी स्वयं पढ़कर पाठ्येतर पठित वस्तु का अधिकाधिक उपयोग करने और साहित्य को समझने और आनंद लेने में स्वाश्रयी बनें।

किसी पाठ्यपुस्तक का पठन-पाठन तभी रुचिकर हो सकता है, जब इस प्रक्रिया में सृजनात्मकता और मौलिकता लाई जाए और यथासंभव एकरसता एवं यांत्रिकता से बचा जाए। साहित्यिक कृतियों का अनुशीलन सुरुचिपूर्ण होना बहुत आवश्यक है। अतएव अध्यापक बंधुओं से विशेष अनुरोध है कि वे अपने विद्यार्थियों को यांत्रिकता से बचाएँ और उनमें स्वतंत्र चिंतन तथा मौलिक अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करने का प्रयास करें।

वाचन के बाद पाठों की विस्तृत विवेचना अपेक्षित है। इसके अंतर्गत विषय-वस्तु, विधा, भाषा और शैली से संबंधित विशेषताओं को स्पष्ट करना चाहिए। पहले वैचारिक पाठ्यबिंदुओं का चयन कर लेना चाहिए और तब इनका स्पष्टीकरण विद्यार्थियों से कराना चाहिए। जो तथ्य विद्यार्थियों के सहज बोध से ऊपर प्रतीत हो उसकी व्याख्या प्रभूत उदाहरणों, दृष्टांतों, तुलनाओं आदि द्वारा अध्यापक करें। विधागत संरचनात्मक विशेषताओं का परिचय भी विषय-वस्तु के साथ ही यथाप्रसंग उन्हें करा देना चाहिए। भाषायी पाठ्यबिंदुओं का विवेचन भी यथाप्रसंग ही करना चाहिए।

पठन के तीन स्तर होते हैं– अर्थग्रहण, आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक पठन। अर्थग्रहण के अंतर्गत निबंध पाठों में आए हुए भावों, विचारों का बोध, प्रस्तुत तर्कों का संग्रह आदि तथ्यों को भली-भाँति समझना पड़ता है। कथा साहित्य में कथा-प्रवाह, घटना-क्रम, पात्रों के विविध कार्यकलापों एवं घात-प्रतिघातों को समझकर कथा-सूत्र को ग्रहण करना होता है। आलोचनात्मक पठन के अंतर्गत इनसे आगे बढ़कर उपर्युक्त वर्णित तथ्यों की तुलना करनी पड़ती है, उनकी तर्क-संगतता परखनी पड़ती है, उनमें कार्य-कारण संबंध देखना होता है और अंत में मूल्यांकन आदि युक्तियों का सहारा लेकर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना होता है। किंतु सृजनात्मक पठन में, पाठों में वर्णित तथ्यों या घटनाओं की भाषिक अभिव्यक्तियों से परे जाकर उनकी वास्तविक प्रतीति करनी

होती है। साहित्यिक कृतियों में प्रायः सभी बातें तथ्यात्मक रूप से वर्णित नहीं होतीं, बल्कि सांकेतिक रहती हैं। इन संकेतों को भली प्रकार समझे बिना लेखक के मंतव्य को समझना प्रायः कठिन होता है। इस प्रकार अध्यापक का यह कर्तव्य है कि वह अपने विद्यार्थियों को पठन के इस अंतिम चरण तक पहुँचाने में यथावश्यक मार्गदर्शन प्रदान करे।

इस कार्य में इस पुस्तक के प्रश्न-अभ्यासों से प्रभूत सहायता मिल सकती है। प्रत्येक पाठ में मौखिक एवं लिखित प्रश्न दिए गए हैं। आलोचनात्मक पठन एवं सृजनात्मक पठन के लिए पाठ की संरचना, विधा, प्रस्तुतीकरण और भाषा-शैली संबंधी प्रश्न-अभ्यास निश्चय ही विद्यार्थियों को सृजनात्मक पठन की ओर ले जाएँगे।

उपर्युक्त बिंदुओं पर विचार करने से विद्यार्थियों का विषय-बोध बढ़ेगा और उन्हें अपनी भाषा-शैली विकसित करने में सहायता मिलेगी। इन क्रियाओं से वस्तु, विधा, भाषा-शैली आदि के आधार पर अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की स्पष्ट जानकारी भी उन्हें हो सकेगी।

रामधारी सिंह 'दिनकर'

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार प्रदेश के मुंगेर ज़िले में गंगा के उत्तरी तट पर स्थित गाँव सिमरिया में सन 1908 में हुआ था।

दिनकर के पिता अत्यंत साधारण स्थिति के किसान थे। उनका देहांत तभी हो गया जब दिनकर दो वर्ष के थे। उनका लालन-पालन उनकी माँ ने किया। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही पाकर, मैट्रिक की परीक्षा दिनकर ने मोकामाघाट के हाई स्कूल से 1928 में पास की। इसके बाद उन्होंने पटना कॉलेज से सन 1932 में बी. ए. किया। परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी न थी कि दिनकर आगे पढ़ सकते। इसलिए वे एक हाई स्कूल में पढ़ाने लगे ।

सन 1934 में उन्होंने बिहार सरकार में नौकरी आरंभ की और सन 1952 तक विभिन्न पदों पर कार्य करते रहे। सन 1952 में कांग्रेस ने उन्हें राज्य सभा के लिए मनोनीत किया। सन 1965 में भारत सरकार ने उन्हें हिंदी सलाहकार के पद पर नियुक्त किया। इस पद पर वे मृत्युपर्यंत (सन 1974 तक) बने रहे।

दिनकर जी का गद्‌य और पद्‌य दोनों पर समान अधिकार था। उनकी गद्‌य की पुस्तक **संस्कृति के चार अध्याय** को साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं काव्य-ग्रंथ **उर्वशी** को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। राष्ट्रपति ने उन्हें 'पद्‌मभूषण' से अलंकृत किया।

उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं –

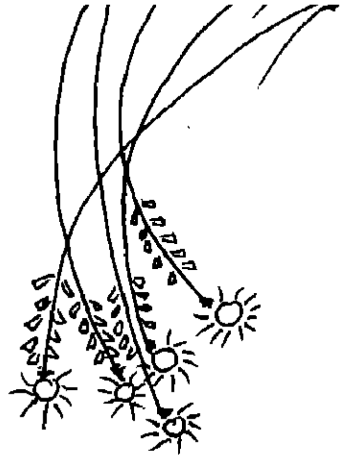
गद्‌य : **मिट्टी की ओर, अर्धनारीश्वर, उजली आग, संस्कृति के चार अध्याय, देश-विदेश, भारत की सांस्कृतिक कहानी, काव्य की भूमिका, पंत-प्रसाद और मैथिलीशरण, वेणुवन, धर्म-नैतिकता और विज्ञान, वट-पीपल, चित्तौर का साका, हमारी सांस्कृतिक एकता, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, रेती के फूल** आदि।

पद्य : **प्रणभंग, रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वंद्व गीत, कुरुक्षेत्र, सामधेनी, बापू, इतिहास के आँसू, धूप और धुआँ, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, नए सुभाषित, कवि श्री, सीपी और शंख, नील कुसुम, नीम के पत्ते, दिल्ली, हारे को हरिनाम** आदि ।

दिनकर के निबंधों में विचारों की स्पष्टता और अभिव्यक्ति की सहजता एवं सजीवता का अद्भुत मेल है। उन्होंने सामाजिक जीवन, संस्कृति एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारोत्तेजक लेख लिखे हैं।

प्रस्तुत पाठ **हिम्मत और ज़िंदगी** दिनकर जी का ऐसा ही एक विचारोत्तेजक निबंध है। इसमें लेखक ने कहा है कि जीवन में धूप में तपने वाला ही चाँदनी का आनंद ले सकता है। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो बिना खाए भी रह सकता है। इस पाठ की प्रस्तुति अत्यंत रोचक है। लेखक ने अपनी बात को छोटे-छोटे वाक्यों में कहा है। हर वाक्य सूक्ति जैसा है। हर सूक्ति कुछ सोचने के लिए प्रेरित करती है।





हिम्मत और ज़िंदगी

ज़िंदगी के असली मज़े उनके लिए नहीं हैं जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं। बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं जिनका कंठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत वाला तत्त्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है।

सुख देनेवाली चीज़ें पहले भी थीं और अब भी हैं। फ़र्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मज़े बाद में लेते हैं उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है।

जो लोग पाँव भीगने के खौफ़ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

चाँदनी की ताज़गी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिनभर धूप में थककर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की ज़रूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है।

इसके विपरीत वह आदमी भी है जो दिन भर खिड़कियाँ बंद करके पंखे के नीचे छिपा हुआ था और अब रात में जिसकी सेज बाहर चाँदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चाँदनी के मज़े ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है।

भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीथा,' जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता ।

बड़ी चीज़ें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पलकर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था, और वह भी उस समय, जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी।

महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था।

श्री विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िंदगी की सबसे बड़ी सिफ़त हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

जिंदगी की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए।

दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ती है। इस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है?

अगर रास्ता आगे ही आगे निकल रहा हो तो फिर असली मज़ा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेख़ौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है।

साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिलकुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, ज़िंदगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता । बड़े मौके पर साहस नहीं दिखाने वाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज़ सुनता रहता है। एक ऐसी आवाज़ जिसे वही सुन सकता

है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता । यह आवाज़ उसे बराबर कहती रहती है, "तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए ।" सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुममें हिम्मत की कमी थी , कि तुममें साहस का अभाव था, कि तुम ठीक वक्त पर ज़िंदगी से भाग खड़े हुए ।

ज़िंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और ज़िंदगी का कोई मज़ा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने ज़िंदगी को ही आने से रोक रखा है।

ज़िंदगी से, अंत में, हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। यह पूँजी लगाना ज़िंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। ज़िंदगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकर चलता है कि ज़िंदगी कभी भी खत्म न होने वाली चीज़ है।

अरे ! ओ जीवन के साधको! अगर किनारे की भरी हुई सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाए तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक-कोष को कौन बाहर लाएगा?

दुनिया में जितने भी मज़े बिखेरे गए हैं, उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज़ भी तुम्हारी हो सकती है जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मान कर लौटे जा रहे हो।

कामना का अंचल छोटा मत करो, ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

यह अरण्य, झुरमुट जो काटे अपनी राह बना ले।
क्रीतदास यह नहीं किसी का जो चाहे अपना ले ।
जीवन उसका नहीं युधिष्ठिर ! जो उससे डरते हैं।
वह उनका जो चरण रोप निर्भय होकर लड़ते हैं।।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. किन व्यक्तियों को सुखों का स्वाद अधिक मिलता है?
2. पाठ की किन पंक्तियों का अर्थ इस दोहे में व्यंजित हो रहा है –
   जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
   मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।।
3. गोधूलि वाली दुनिया के लोगों से अभिप्राय है –
   (क) विवशता और अभाव में जीने वाले लोग
   (ख) जय-पराजय के अनुभव से परे लोग
   (ग) फल की कामना न करने वाले लोग
   (घ) जीवन को दाँव पर लगाने वाले लोग
4. साहसी मनुष्य की सबसे पहली पहचान यह है कि वह –
   (क) सदा आगे बढ़ता जाता है
   (ख) बाधाओं से नहीं घबराता
   (ग) लोगों के सोच की परवाह नहीं करता
   (घ) बिलकुल निडर होता है
5. लेखक ने अकेले चलने वाले की तुलना सिंह से क्यों की है?
6. ज़िंदगी का भेद किसे मालूम है?
7. लेखक ने जीवन के साधकों को क्या चुनौती दी है?

लिखित

1. लेखक के अनुसार ज़िंदगी के असली मज़े किसके लिए हैं?
2. चाँदनी की शीतलता का आनंद कैसा मनुष्य उठा पाता है?
3. लेखक ने ज़िंदगी की कौन-सी दो सूरतें बताई हैं और उनमें से किसे बेहतर माना है?
4. 'जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है।' संसार के कुछ महापुरुषों के उदाहरण देते हुए टिप्पणी कीजिए।
5. जीवन में सुख प्राप्त न होना और मौके पर हिम्मत न दिखा पाना – इन दोनों में से लेखक ने किसे श्रेष्ठ माना है और क्यों?

6. पाठ के अंत में दी गई कविता की पंक्तियों में युधिष्ठिर को क्या सीख दी गई है?
7. आशय स्पष्ट कीजिए --
   (क) साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है।
   (ख) जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंतत: अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है।
   (ग) कामना का अंचल छोटा मत करो, ज़िंदगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए --
   (क) भोजन का असली स्वाद **उसको** मिलता है, **जो** कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है।
   (ख) लहरों में तैरने का **जिन्हें** अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आएँगे ।
   (ग) **जो** सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं **उन्हें** स्वाद अधिक मिलता है।

   इन वाक्यों में मोटे छपे शब्द 'उसको', 'जो', 'जिन्हें', 'वे' और 'उन्हें' संबंधवाचक सर्वनाम हैं क्योंकि वाक्यों में इनका परस्पर संबंध है। संबंधवाचक सर्वनामों का प्रयोग करते हुए कोई अन्य पाँच वाक्य बनाइए ।
2. इस पाठ में अरबी-फ़ारसी के अनेक शब्द आए हैं जैसे मज़ा, ज़िंदगी। इनके हिंदी रूप हैं -- आनंद, जीवन। यहाँ कुछ हिंदी शब्द दिए जा रहे हैं। पाठ में से उनके अरबी-फ़ारसी रूप छाँटकर लिखिए --

   भय, सुगंधित, अनुभव, विशेषता, अंतर, वास्तविक, प्रयास, आवश्यकता।

योग्यता-विस्तार

1. दिनकर कृत 'कुरुक्षेत्र' में से 'भीष्म-युधिष्ठिर' संवाद को पढ़िए और कक्षा में सुनाइए ।
2. साहस और उत्साह का संदेश देने वाली कुछ कहानियों का संकलन कीजिए ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

खौफ़ : भय, डर

तरलाई : शीतलता, तरलता

कस्तूरी : एक अत्यंत सुगंधित बहुमूल्य पदार्थ जो एक विशेष प्रकार के नर हिरन की नाभि के पास की गाँठ में पैदा होता है (यह दवा के काम भी आता है)

लाक्षागृह : लाख का घर जिसे पांडवों को मारने के लिए कौरवों ने बनवाया था

विंस्टन चर्चिल : द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन के प्रधान मंत्री

सिफ़त : विशेषता

मकसद : उद्देश्य, हेतु

पंजा डालना : हासिल करना

हमजोली : संगी-साथी

गोधूलि : संध्या वेला

बँधे हुए घाट का पानी पीना : आराम की ज़िंदगी जीना, चुनौती स्वीकार न करना

दाँव लगाना : बाज़ी लगाना

मद्धिम : धीमी

अर्नाल्ड बेनेट : इंग्लैंड का उच्चकोटि का विचारक

कबूल : स्वीकार

अंतराल : गहरा तल

मौक्तिक-कोष : मोतियों का भंडार, महान उपलब्धियाँ

निर्झरी : झरना

अरण्य : वन, जंगल

क्रीतदास : खरीदा या मोल लिया हुआ गुलाम

रोप : रोपण, धान आदि की पौद भूमि में लगाना

प्रदीप पंत

प्रदीप पंत का जन्म उत्तरांचल के नैनीताल जिले के हलद्वानी नगर में सन 1941 में हुआ। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.ए. डब्ल्यू. की उपाधि प्राप्त की।

आजीविका के लिए इन्होंने सरकारी नौकरी में प्रवेश लिया और आकाशवाणी के समाचार प्रभाग से जुड़ गए। वहाँ पंद्रह वर्षों तक इन्होंने समाचारों का संपादन किया। तत्पश्चात केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड से संबद्ध हो गए, जहाँ इन्होंने बोर्ड की पत्रिका 'समाज कल्याण' का सफल संपादन किया और फिर वहाँ प्रशासन का काम देखने लगे। सन 2001 में बोर्ड के संयुक्त निदेशक के पद से इन्होंने अवकाश ग्रहण किया। आजकल दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन और पत्रकारिता कर रहे हैं।

उपन्यासकार और कहानी लेखक के रूप में प्रतिष्ठित प्रदीप पंत अपने व्यंग्य लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं। अब तक इनके चार व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

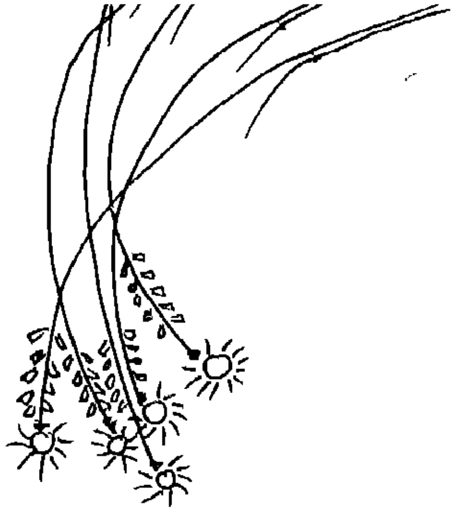
इन्होंने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ की हैं। इनके यात्रा-संस्मरण चार पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। जिनके नाम हैं – **सफ़र-हम-सफ़र, कुछ और सफ़र, लौटने से पहले** तथा **महादेश की दुनिया**।

प्रदीप पंत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं जिनमें दिल्ली की हिंदी अकादमी और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा प्रदत्त पुरस्कार प्रमुख हैं। प्रदीप पंत के उपन्यास **महामहिम** को साहित्य समाज में विशेष सम्मान प्राप्त हुआ। इन्होंने बच्चों के लिए भी अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

यहाँ दिए गए पाठ **चेरापूँजी से आया हूँ** की प्रेरणा लेखक को कविता की इन पंक्तियों से मिली है –

चेरापूँजी से आया हूँ
फिर भी प्यासा .....

चेरापूँजी मेघालय में शिलंग से 53 किलोमीटर दूर है। यह विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाले स्थानों में से एक है। किंतु लेखक ने इन बातों को केवल प्रसंगवश ही लिखा है। उनके लेख का प्रमुख स्वर है – सारा देश एक है। यद्यपि हमारे विभिन्न प्रदेशों की अपनी-अपनी विविधता है फिर भी हमारी सभ्यता और संस्कृति हम सबको एक सूत्र में बाँधे रहती है।



चेरापूँजी से आया हूँ

मेघालय — यानी बादलों का घर।

और मेघालय की राजधानी शिलंग? एक हरा-भरा पर्वतीय नगर, जहाँ हर वक्त बादल उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं। दूर-दूर तक कहीं बर्फ़ का नाम नहीं, फिर भी अनायास बाबा नागार्जुन की कविता याद आ जाती है —



अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है।

इतना बड़ा, स्वच्छ, सुंदर पर्वतीय नगर अपने उत्तर भारत में कहीं नहीं है। ऐसी हरीतिमा भी शायद ही कहीं देखने को मिले। शिलंग का मुख्य बाज़ार अल्मोड़ा के 'लाला बाज़ार' से मिलता-जुलता है। स्त्री-पुरुषों के चेहरे, नाक-नक्श भी कुछ-कुछ वैसे ही। लेकिन न तो अल्मोड़ा का मौसम ही शिलंग जैसा सुहाना है, न अल्मोड़ा में शिलंग जैसी सघन हरीतिमा है।

और शिलंग से चेरापूँजी की ओर जाता मार्ग? दोनों ओर पहाड़ों और दरख्तों से पटा पड़ा है यह ऊँचा-नीचा सर्पाकार रास्ता। रास्ते को पार करते हुए दिखाई पड़ते हैं बादल, बहती है सुहानी हवा और कभी-कभी हो जाती है बूँदाबाँदी।

हमारी जीप शिलंग से 53 किलोमीटर दूर चेरापूँजी की ओर बढ़ रही है। मेरे साथ राज्य के एक अधिकारी श्री संगमा और उनके दो दोस्त बैठे हैं। चलते हुए उन्होंने परिचय कराया था, लेकिन मैं उनके नाम नहीं समझ सका। मैं जीप की खिड़की बंद करते हुए संगमा से पूछता हूँ, "क्या साल-भर यहाँ वर्षा होती रहती है?"

"जी हाँ।" संगमा कहते हैं।

अब हम पहाड़ों को निहारते हुए चेरापूँजी की ओर बढ़ रहे हैं। सड़क के उस पार पहाड़ी कुहरे से घिरी हुई है। कुछ नहीं दिखाई देता, सिवाय धवल-उज्ज्वल कुहरे के। या फिर कहीं-कहीं कुहरे को चीरते हुए कुछ चोटियाँ और वृक्ष नज़र आते हैं।

तीन पर्वतीय अंचलों में बँटा हुआ है मेघालय – खासी पर्वत, गारो पर्वत और जयंतिया पर्वत। और इन्हीं तीन पर्वतीय अंचलों से बने हैं पाँच ज़िले – पूर्वी खासी पर्वत ज़िला, पश्चिमी खासी पर्वत ज़िला, पूर्वी गारो पर्वत ज़िला, पश्चिमी गारो पर्वत ज़िला और जयंतिया पर्वत ज़िला। हर अंचल की अपनी अलग संस्कृति है, रीति-रिवाज, पर्व-उत्सव हैं, लेकिन हर कहीं पारिवारिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक है – भूमि, धन, संपत्ति सब माँ से बेटी को मिलती है।

"मातृसत्तात्मक व्यवस्था होने के कारण यहाँ नारी-शोषण की वैसी घटनाएँ नहीं होतीं, जैसी कि देश के अन्य भागों में देखने-सुनने को मिलती हैं," संगमा कहते हैं।

स्त्री का यहाँ वर्चस्व है, यह अहसास गुवाहाटी से मेघालय की सीमा में घुसने के साथ ही होने लगता है। तमाम दुकानों पर स्त्रियाँ सौदा बेचती और बेहिचक बतियाती दिखाई देती हैं। शायद कमोबेश यह स्थिति पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में भी है, भले ही वहाँ मातृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था न हो। कुछ साल पहले मणिपुर की राजधानी इम्फाल में भी यही सब देखा

था। स्त्रियों का एक पूरा का पूरा बाज़ार ही है वहाँ, जिसे 'माइती बाज़ार' कहते हैं – यानी माँ का बाज़ार। दिन-दोपहर हुई नहीं कि सिर पर सब्ज़ी, कपड़ों या अन्य सामान के टोकरे रखे स्त्रियाँ इस बाज़ार में आ पहुँचती हैं। दिन-भर सामान की बिक्री कर शाम को अपने-अपने घर लौट पड़ती हैं। किसी प्रकार का वर्गभेद नहीं। यानी अमीर घरों की स्त्रियाँ भी इस 'माइती बाज़ार' में मिल जाएँगी और गरीब घरों की स्त्रियाँ भी। और यह बाज़ार केवल इम्फाल में ही नहीं है, मणिपुर के हर नगर, कस्बे, गाँव में है – वहाँ की संस्कृति का एक अटूट सिलसिला।

बड़ी दिलचस्प बात बताई श्री इम्फाल में मिली एक महिला ने जो लखनऊ की रहनेवाली थी और जिसका लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय के एक मणिपुरी छात्र से प्रेम हो गया था। वह छात्र शिक्षा पूरी करके इम्फाल लौटते समय इस महिला को अपनी पत्नी बनाकर साथ ले आया था। इस उत्तर भारतीय पत्नी ने जब अपनी सास को सवेरे-सवेरे सिर पर टोकरा रखकर बाज़ार जाते देखा तो एक दिन, दो दिन, तीन दिन बीत जाने के बाद आखिर एक दिन उसे टोकरे के साथ सामान बेचने बाज़ार जाने से रोक दिया। सास चेहरे पर उदासी लिए दो-चार दिन रुकी रही, पर आखिर एक दिन वह फिर 'माइती बाज़ार' की ओर चल ही दी। यह घटना धीरे-धीरे सास-बहू के बीच टकराव का कारण बन गई। अंततः एक दिन इस उत्तर भारतीय महिला के मणिपुरी पति ने उसे समझाया, "इसके पीछे कोई आर्थिक मजबूरी नहीं, माइती बाज़ार हमारी समाज-व्यवस्था का, हमारी संस्कृति का सदियों पुराना अंग है। माँ को वहाँ जाने दो, उसे रोको नहीं।"

इम्फाल के काँचीपुर में स्थित मणिपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में आयोजित एक साहित्यिक सम्मेलन में मिली इस उत्तर भारतीय महिला ने हँसते हुए हम लोगों से कहा था," अगर आप लोग चाहें तो माइती बाज़ार में मेरी सास से आज शाम की सब्ज़ी खरीद सकते हैं।"

हम आगे बढ़ जाते हैं। अब आ गया है माँसमाई गाँव।

कुछ आगे बढ़कर संगमा ने जीप रुकवा दी है। हम सभी नीचे उतर गए हैं। सामने दिखाई पड़ रहा है नोहशंगथियांग प्रपात जो मॉसमाई प्रपात के नाम से लोकप्रिय है। पास ही एक पर्यटक बस खड़ी है। उससे उतरकर कुछ दक्षिण भारतीय इस अद्‌भुत प्रपात को निहार रहे हैं। ऊँचे पहाड़ से सैंकड़ों फुट नीचे पानी लगातार, बेरोकटोक गिर रहा है। लगातार-लगातार गिरता चला जा रहा है – जाने कब से, कितनी सदियों से, इस प्रपात से पानी निरंतर झरता रहता है और कलकल करता हुआ बंगला देश की ओर चला जाता है।

"वाह देखिए, सामने रहा बंगला देश।" संगमा के साथियों में से एक कहता है।

हालाँकि सामने हलका कोहरा है, लेकिन पानी में डूबा हुआ-सा बंगला देश का कुछ मैदानी भाग नज़र आ जाता है।

अभी-अभी, जब जीप से उतरे थे, हलकी धूप थी और अभी, क्षण-भर बाद ही, बादल घिरे और हलकी-हलकी वर्षा होने लगी। मैं संगमा के आगे अपना पुराना सवाल दोहराता हूँ, "क्या साल-भर यहाँ वर्षा होती रहती है?"

संगमा हँसते हुए कहते हैं, "पंत साहब, यह चेरापूँजी है।"

हाँ , ख्याल आया, यह चेरापूँजी है – समुद्र की सतह से कोई तेरह सौ मीटर ऊपर, *जो विश्व में अत्यधिक वर्षा वाले स्थान के लिए प्रसिद्‌ध है।*

बहुत पहले पढ़ी एक कविता याद आ जाती है –

'चेरापूँजी से आया हूँ,
फिर भी प्यासा....'

हम लोग कभी कलकल-छलछल करते प्रपात को निहार रहे हैं, कभी पानी से घिरे बंगला देश के भूभाग को।

आसपास चाय-पानी की दो-चार छोटी-छोटी दुकानें हैं। हलकी-हलकी ठंड लगने लगी है। हम लोगों ने स्वेटर पहन लिए हैं और एक दुकान से लेकर चाय पीने लगे हैं।

वर्षा फिर बंद हो गई है।

धूप फिर खिल आई है।

इसी तरह वर्षा, धूप, कोहरे की लुका-छिपी का खेल चलता रहता है यहाँ – जी हाँ, इस चेरापूँजी में खासी पर्वत-शृंखलाओं के इस शांत एकांत सौंदर्य स्थल में।

मन करता है, प्रपात को बस निहारते रहो। केवल निहारते ही न रहो, बल्कि उसके जल-कणों को नज़दीक से छू लो। लेकिन नज़दीक जाने का कोई रास्ता नहीं है। और यह अच्छा ही है कि मेघालय सरकार ने इस प्रपात तक जाने का कोई रज्जुमार्ग नहीं बनाया। बनाया होता तो पर्यटन-स्थलों को कमाई के अड्डे में बदल देने वाले तथाकथित 'टूरिस्ट प्रमोटर' इस अछूते प्राकृतिक सौंदर्य-स्थल को नष्ट करने में कोई कसर न रख छोड़ते।

हम लोग अब जीप में बैठकर लौट रहे हैं।

संगमा रास्ते में खासी, जयंतिया और गारो पहाड़ियों के लोगों के बारे में बताने लगते हैं। वह कहते हैं, "खासियों को यहाँ सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। यानी जो खासी है, वह समझ लीजिए कि समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति है।"

" आप?" मैं पूछता हूँ।

"जी हाँ, मैं भी खासी ही हूँ और मेरी पत्नी भी।" संगमा हँसते हुए कहते हैं।

"मैं भी उत्तरप्रदेश के उच्चकुलीन पर्वतीय परिवार से ही हूँ।" हँसते हुए मैं कहता हूँ।

और फिर हम दोनों ठहाका लगाकर हँस पड़ते हैं। हमारा यह ठहाका हम दोनों पर ही व्यंग्य है।

छात्र जीवन में समाजशास्त्र का अध्ययन करते हुए कभी खासी, जयंतिया और गारो पर्वतमालाओं और वहाँ के लोगों के बारे में पढ़ा था और अब, इस पल, अपने को खासी हिल्स में पाकर लगा, उस सुदूर अतीत के सपने में पहुँच गया हूँ। तब मन में उत्सुकता जागी

थी, कैसे होंगे वहाँ के लोग? अब कम से कम खासी पर्वतमालाओं का एक छोर तो देख ही लिया है। और लोग?

याद आता है, बहुत पहले बेलगाँव में एक कर्नाटक निवासी से भेंट हुई थी। मैं कानपुर के क्रांतिकारी श्री सुरेंद्र पांडे के साथ था। कर्नाटक के यह सज्जन उत्तर भारत घूमकर आए थे और पांडे जी को अपने संस्मरण सुना रहे थे। पांडे जी ने सहसा उनसे पूछ लिया था, "उत्तर के लोग तुम्हें कैसे लगे?"

"भारत में जहाँ जाओ, लोग सब जगह एक-से ही हैं।" उन्होंने कहा था, "हाँ, बोली, पहनावे, नाक-नक्श में थोड़ा अंतर है।"

वह स्वाभाविक ही है। भौगोलिक स्थितियाँ ही ऐसा अंतर कर देती हैं। यहाँ इन खासी पर्वतमालाओं के लोग शेष भारतीयों जैसे ही हैं। हाँ, उनके नाक-नक्श, उनके पहनावे, उनकी बोली में ज़रूर अंतर है। उनके पर्व-त्योहार भी अलग हैं। उनके रंगारंग नृत्यों का अपना सौंदर्य है। पिछली रात एक समारोह में खासियों का नोंगक्रेम नृत्य देखा था। उनका प्रमुख नृत्य है यह, जो पाँच दिन धार्मिक उत्सव के अवसर पर किया जाता है। समूह-नृत्य में कई जोड़े स्त्री-पुरुष पाँव थिरक उठते हैं। नृत्य और उत्सव के ज़रिए शांति और संपन्नता की कामना की जाती है और अच्छी फसल के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया जाता है। अपने ढंग का अलग नृत्य है यह — अपने अंचल की विविधता को समेटे हुए, लेकिन इसके पीछे उत्तर और दक्षिण भारत के उन नृत्यों जैसी ही भावना निहित है, जो फसल-कटाई की खुशी में गाँव-गाँव में आयोजित किए जाते हैं। इसी तरह फसल की बुआई या उसके बाद विभिन्न अंचलों में उत्सव मनाए जाते हैं। जयंतिया पहाड़ियों में भी ऐसा ही उत्सव आयोजित किया जाता है हर वर्ष, जिसका नाम है बेहडेनखलाम। नाम में भले ही भिन्नता है, किंतु ऐसे उत्सव देश में हर कहीं मनाए जाते हैं। रात के समारोह में बांग्ला नृत्य भी देखा था — फसल कटाई के हर्षोल्लास का नृत्य। बड़ी-बड़ी लंबी ढोलकों के आकार वाले वाद्यों को साथ लिए अनेक पुरुष मंच पर आ गए थे। उनके साथ थीं स्त्रियाँ। और फिर अपनी लय में डूबे वे जाने कित

देर तक नाचते-गाते रहे थे। संगीत की लयबद्ध धारा बह चली थी। संस्कृति की यह परंपरागत अजस्र धारा जाने कितनी शताब्दियों से बहती चली आ रही है – यहाँ, इन पर्वतमालाओं में ही नहीं , देश के हर कोने में, जिसका नाम कहीं बैसाखी हो जाता है तो कहीं पोंगल या बीहू या कहीं कुछ और।

मैं यही सब सोच रहा हूँ कि तभी एक स्थान पर जीप रुकती है। हम उतरते हैं। यह ऊँची पहाड़ी है। नीचे जंगल।

बगल में एक गोलाकार विशाल पत्थर है। संगमा बताते हैं,"यह प्राकृतिक शिवलिंग है।"

फिर वह कुछ दूर पर वैसे ही एक अन्य शिवलिंग की ओर संकेत करते हैं।

सचमुच प्रकृति का आश्चर्य हैं ये शिवलिंग।

और आश्चर्य तो माँसमाई गाँव की गुफ़ाएँ भी हैं।

हमारी जीप इन गुफ़ाओं की ओर बढ़ रही है। तभी कुछ बच्चे हाथों में बिना जली मशालें लिए दीखते हैं।

जीप रुकती है। संगमा अपनी भाषा में इन हँसते-खिलखिलाते बच्चों से कुछ पूछते हैं-- शायद यह कि एक मशाल कितने की है।

बच्चे एक साथ उत्तर देते हैं।

और संगमा जेब से दो रुपए के दो नोट निकालकर उन्हें देते हैं और दो मशालें ले लेते हैं।

"ये क्यों?" मैं पूछता हूँ।

"गुफ़ाएँ इतनी अँधेरी हैं कि आप मशाल या टॉर्च जलाए बिना उनमें प्रवेश नहीं कर सकते।" संगमा का एक साथी कहता है।

और हम गुफ़ाओं के एकदम निकट पहुँच गए हैं।

द्वार के पास ही अँधेरा है। अंदर तो जाने कितना अँधेरा होगा।

हमने मशालें जला ली हैं।

और हम गुफ़ाओं के अंदर आगे बढ़ रहे हैं। अलग-अलग, ऊपर-नीचे पत्थर ही पत्थर। अभी ये पत्थर गिर पड़ें तो हम लोगों का किसी को पता तक न चले।

लेकिन संगमा बताते हैं, "सदियों से ये गुफ़ाएँ इसी तरह हैं और दूर, बहुत दूर तक चली गई हैं।"

कहीं कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है इन प्राकृतिक गुफ़ाओं के साथ। जैसी थीं, वैसी ही रहने दिया गया है।

हम लोग कुछ दूर जाकर लौट पड़ते हैं, जैसे किसी आश्चर्यलोक से लौट रहे हों।

मशालें अब भी जल रही हैं।

हमने उन्हें बुझाकर एक तरफ़ फेंक दिया है।

संगमा बताते हैं, "ये गुफ़ाएँ गाँव वालों की अपनी संपत्ति है, लेकिन गाँव वालों ने इन्हें देखने के लिए टिकट नहीं लगाया है। बस, गाँव के बच्चे मशालें बेचकर आठ-दस रुपए रोज़ कमा लेते हैं। टूरिस्ट सीज़न में आमदनी ज़रूर कुछ बढ़ जाती है।"

अब हम लोग शिलांग की तरफ़ लौट रहे हैं। आते समय सड़क के उस पार जो पहाड़ कोहरे में छिपे हुए थे, वे अब साफ़ दिखाई दे रहे हैं। कोहरा छँट गया है। पहाड़ों से बहते हुए एक के बगल एक दर्जन-भर झरने नज़र आ रहे हैं। झरनों से गिरते पानी का संगीत चारों ओर गूँज रहा है। इस संगीत और दिल्ली, मुंबई की सड़कों के शोर में अंतर है। संगीत और शोर में तो अंतर होता ही है। पर यदि सैंकड़ों फुट ऊपर से गिरते पानी की आवाज़ को शोर भी कहा जाए, तो इस शोर और दिल्ली, मुंबई की सड़कों पर भागते वाहनों के शोर में अंतर है। मन करता है, झरनों के इस शोर और संगीत में सदा-सदा के लिए खो जाओ, लेकिन चाहते हुए भी यह संभव नहीं है। अगले दिन दिल्ली लौटना है — एक महानगर, जो महानगर

कम और महाकस्बा अधिक है, जिसे हम रोज़ जाने कितनी बार कोसते हैं लेकिन अपने ही फैलाए जाल में फँसकर जहाँ रहने के लिए हम अभिशप्त हैं। अकेला मैं ही नहीं, तमाम लोग, जो देश के कोने-कोने से आकर दिल्ली की भीड़ में खो गए हैं, अपनी पहचान गँवा बैठे हैं। उनके पास कहने को बस केवल अपना 'नाम' ही है। धरती और आकाश से, प्रकृति और उसके आश्चर्यों से उनका संपर्क मानो भंग हो गया है।

हम लोग फिर वहीं ऊँची-नीची, सर्पाकार सड़कों पर हैं। दोनों तरफ़ कभी पहाड़ आते हैं तो कभी सपाट, हरी-भरी ज़मीन – खासी पहाड़ के लोगों की ज़मीन, जिस पर उन्होंने खेती की हुई है।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. लेखक ने शिलंग और अल्मोड़ा में क्या समानताएँ और भिन्नताएँ बताई हैं?
2. मेघालय किन तीन पर्वतीय अंचलों में बँटा हुआ है?
3. मेघालय के तीनों पर्वतीय अंचलों की अलग-अलग संस्कृति होने पर भी उनमें क्या समानता है?
4. मातृसत्तात्मक व्यवस्था से क्या लाभ है?
5. प्रपात तक जाने के लिए रज्जुमार्ग न बनाने को लेखक ने अच्छा क्यों माना है?
6. गुफ़ाएँ देखने के लिए टिकट न लगाने के पीछे गाँव वालों की क्या मनोवृत्ति झलकती है?

लिखित

1. 'माइती बाज़ार' का क्या अर्थ है? माइती बाज़ार से मणिपुर की संस्कृति कैसे उजागर होती है?

2. उत्तर भारतीय महिला और उसकी सास के बीच टकराव किस कारण से था?
3. 'हमारा यह ठहाका हम दोनों पर ही व्यंग्य है।' इसमें 'हम दोनों' किनके लिए आया है और ठहाके को व्यंग्य क्यों कहा गया है?
4. भौगोलिक स्थितियों में अंतर होते हुए भी भारत की संस्कृति की परंपरा एक है। कैसे?
5. लेखक ने मॉसमाई गाँव की गुफ़ाओं को प्रकृति का आश्चर्य क्यों कहा है?
6. झरनों के शोर और संगीत में खो जाने का मन होते हुए भी लेखक के लिए ऐसा करना क्यों संभव नहीं था?
7. लेखक ने झरनों और वाहनों की आवाज़ को शोर कहते हुए भी दोनों में अंतर क्यों माना है?
8. 'आपने ही फैलाए जाल में फँसकर जहाँ रहने के लिए हम अभिशप्त हैं।' लेखक ने दिल्ली के जीवन को ऐसा क्यों कहा है?

भाषा-अध्ययन

1. - **एक हरा-भरा पर्वतीय *नगर***, जहाँ हर वक्त बादल उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं।
   - कुछ नहीं दिखाई देता सिवाय **धवल उज्ज्वल *कुहरे*** के ।
   - मैं भी उत्तर प्रदेश के **उच्चकुलीन पर्वतीय *परिवार*** से हूँ।

   उपर्युक्त वाक्यों में मोटे शब्दों में छपे अंश संज्ञा पदबंध हैं क्योंकि इनमें नगर, कुहरे और परिवार शब्द संज्ञा हैं और 'एक हरा-भरा पर्वतीय', 'धवल उज्ज्वल' और 'उच्चकुलीन पर्वतीय' पद क्रमशः इनकी विशेषताएँ बता रहे हैं। इस पाठ में से ऐसे तीन अन्य पदबंध छाँटिए।

2. एक ही वाक्य को दो प्रकार से कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्यों को देखिए —

   एक प्रकार— यह ऊँचा-नीचा सर्पाकार रास्ता दरख्तों से पटा पड़ा है।

   दूसरा प्रकार — दरख्तों से पटा पड़ा है यह ऊँचा-नीचा सर्पाकार रास्ता ।

   एक प्रकार— सुहानी हवा बहती है और कभी-कभी बूँदाबाँदी हो जाती है !

   दूसरा प्रकार — बहती है सुहानी हवा और कभी-कभी हो जाती है बूँदाबाँदी !

   इन्हें ध्यान से पढ़िए। आप पाएँगे कि कभी-कभी वाक्य संरचना बदल देने से अभिव्यक्ति-सौंदर्य बढ़ जाता है। ऐसा इस यात्रावृत्तांत में भी हुआ है। पाठ में आए ऐसे ही कुछ अन्य वाक्य छाँटिए।

योग्यता-विस्तार

1. प्रस्तुत पाठ एक यात्रावृत्तांत है। पाठ में से यात्रावृत्तांत के निम्नलिखित तत्त्वों को पहचानिए –

   (क) भौगोलिक स्थिति (ख) प्राकृतिक सौंदर्य वर्णन

   (ग) लोक संस्कृति की झलक (घ) लेखक पर हुई प्रतिक्रिया

2. 'महानगर की भीड़ में खोया आदमी' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

हरीतिमा : हरियाली

वर्चस्व : प्राबल्य, प्राधान्य

सिलसिला : क्रम, शृंखला

संकाय : विभाग

रज्जुमार्ग : पहाड़ों पर आने-जाने के लिए प्रायः मोटी रस्सी से बनाया जाने वाला सीढ़ीनुमा रास्ता है।

टूरिस्ट प्रमोटर : पर्यटकों को आकर्षित करने वाला

अजस्त्र : अनवरत, निरंतर

अभिशप्त : शापित

शिलंग (शिलांग) : मेघालय की राजधानी

हरिशंकर परसाई

प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के जमनिया ग्राम में सन 1922 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा होशंगाबाद में हुई । उच्च शिक्षा के लिए वे नागपुर चले गए जहाँ इन्होंने विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए. किया । अनेक वर्षों तक इन्होंने स्कूल-कॉलेजों में अध्यापन किया और साथ-साथ लेखन कार्य भी करते रहे ।

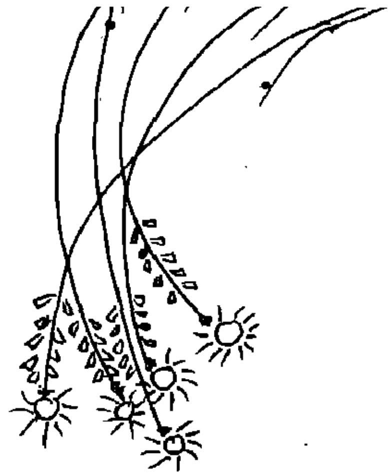
लेखन को पूर्णकालिक कार्य मानते हुए इन्होंने नौकरी को लेखन के मार्ग में बाधक समझा। इन्होंने नौकरी छोड़ दी और जबलपुर में रहकर स्वतंत्र लेखन करने लगे। वहाँ से इन्होंने **वसुधा** नाम की एक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। साहित्य-संसार ने पत्रिका का बड़ा स्वागत किया। कई वर्षों तक चलने के बाद आर्थिक घाटे के कारण **वसुधा** का प्रकाशन बंद करना पड़ा ।

आर्थिक विपन्नता के बावजूद हरिशंकर परसाई ने दोबारा नौकरी नहीं की और स्वतंत्र लेखन को ही आजीविका का माध्यम बनाए रखा। यह एक साहसिक कदम था। सन 1995 में इनका स्वर्गवास हो गया।

हरिशंकर परसाई ने प्रचुर लेखन कार्य किया। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी पुस्तकों में प्रमुख हैं – **जैसे उनके दिन फिरे, भूत के पाँव पीछे, सदाचार की ताबीज़, बेईमानी की परत, पगडंडियों का ज़माना, शिकायत मुझे भी है, और अंत में, तिरछी रेखाएँ, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, विकलांग श्रद्धा का दौर, तब की बात और थी, हँसते हैं रोते हैं, रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, वैष्णव की फिसलन** आदि। **परसाई रचनावली** के छह भाग भी प्रकाशित हो चुके हैं।

हरिशंकर परसाई ने व्यंग्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखा । वे व्यंग्य के द्वारा पाठकों का ध्यान व्यक्ति और समाज की विसंगतियों की ओर ले जाते हैं। सामाजिक और राजनीतिक जीवन में फैले हुए भ्रष्टाचार पर उन्होंने बड़ा करारा व्यंग्य किया है।

प्रस्तुत रचना **भेड़ें और भेड़िये** में एक तीखा व्यंग्य है जिसमें चुनाव-व्यवस्था की धज्जियाँ उड़ाई गई हैं। इस रचना में साहित्यकारों, नेताओं, पत्रकारों तथा धर्मगुरुओं पर कड़े प्रहार किए गए हैं। जनता को भेड़ें और चुनाव प्रत्याशियों को भेड़िये कहा गया है जो जनता का शोषण करते हैं। इन भेड़ियों को जिताने वाला वर्ग स्वार्थी बुद्धिजीवियों का है।



भेड़ें और भेड़िये

एक बार एक वन के पशुओं को ऐसा लगा कि वे सभ्यता के उस स्तर पर पहुँच गए हैं, जहाँ उन्हें एक अच्छी शासन-व्यवस्था अपनानी चाहिए।

और, एक मत से यह तय हो गया कि वन-प्रदेश में प्रजातंत्र की स्थापना हो।

पशु-समाज में इस 'क्रांतिकारी' परिवर्तन से हर्ष की लहर दौड़ गई कि सुख-समृद्धि और सुरक्षा का स्वर्ण-युग अब आया और वह आया।

जिस वन-प्रदेश में हमारी कहानी ने चरण धरे हैं, उसमें भेड़ें बहुत थीं — निहायत नेक, ईमानदार, कोमल, विनयी, दयालु, निर्दोष पशु, जो घास तक को फूँक-फूँककर खाता है।

भेड़ों ने सोचा कि अब हमारा भय दूर हो जाएगा। हम अपने प्रतिनिधियों से कानून बनवाएँगे कि कोई जीवधारी किसी को न सताए, न मारे। सब जिएँ और जीने दें। शांति, स्नेह, बंधुत्व और सहयोग पर समाज आधारित हो।

और, इधर भेड़ियों ने सोचा कि हमारा अब संकटकाल आया। भेड़ों की संख्या इतनी अधिक है कि पंचायत में उनका ही बहुमत होगा और अगर उन्होंने कानून बना दिया कि कोई पशु किसी को न मारे, तो हम खाएँगे क्या? क्या हमें घास चरना सीखना पड़ेगा?

ज्यों-ज्यों चुनाव समीप आता, भेड़ों का उल्लास बढ़ता जाता।

ज्यों-ज्यों चुनाव समीप आता, भेड़ियों का दिल बैठता जाता।

एक दिन बूढ़े रियार ने भेड़िये से कहा, "मालिक, आजकल आप बड़े उदास रहते हैं।"

हर भेड़िये के आस-पास दो-चार सियार रहते ही हैं। जब भेड़िया अपना शिकार खा लेता है, तब ये सियार हड्डियों में लगे मांस को कुतरकर खाते हैं और हड्डियाँ चूसते रहते हैं। ये भेड़िये के आस-पास दुम हिलाते चलते हैं, उनकी सेवा करते हैं और मौके-बेमौके "हुआँ-हुआँ" चिल्लाकर उसकी जय बोलते हैं।

तो बूढ़े रियार ने बड़ी गंभीरता से पूछा, "महाराज, आपके मुखचंद्र पर चिंता के मेघ क्यों छाए हैं?" वह सियार कुछ कविता भी करना जानता होगा या शायद दूसरे की उक्ति को अपना बनाकर कहता हो ।

खैर भेड़िये ने कहा, "तुझे क्या मालूम नहीं है कि वन-प्रदेश में नई सरकार बनने वाली है? हमारा राज तो अब गया।"

सियार ने दाँत निपोर कर कहा, "हम क्या जानें महाराज ! हमारे तो आप ही 'माई-बाप' हैं। हम तो कोई और सरकार नहीं जानते। आपका दिया खाते हैं, आपके गुण गाते हैं।"

भेड़िये ने कहा, "मगर अब समय ऐसा आ रहा है कि सूखी हड्डियाँ भी चबाने को नहीं मिलेंगी।"

सियार सब जानता था मगर जानकर भी न जानने का नाटक करना न आता, तो सियार शेर न हो गया होता !

आखिर भेड़िये ने वन-प्रदेश की पंचायत के चुनाव की बात बूढ़े सियार को समझाई और बड़े गिरे मन से कहा, "चुनाव अब पास आता जा रहा है। अब यहाँ से भागने के सिवा कोई चारा नहीं । पर जाएँ भी कहाँ?"

सियार ने कहा, "मालिक सरकस में भरती हो जाइए ।"

भेड़िये ने कहा, "अरे वहाँ भी शेर और रीछ को तो ले लेते हैं, पर हम इतने बदनाम हैं कि हमें वहाँ भी कोई नहीं पूछता ।"

"तो," सियार ने खूब सोचकर कहा, "अजायबघर में चले जाइए ।"

भेड़िये ने कहा, "अरे, वहाँ भी जगह नहीं है। सुना है वहाँ तो आदमी रखे जाने लगे हैं।"

बूढ़ा सियार अब ध्यानमग्न हो गया । उसने एक आँख बंद की, नीचे के होंठ को ऊपर के दाँत से दबाया और एकटक आकाश की तरफ़ देखने लगा जैसे विश्वात्मा से कनेक्शन जोड़ रहा हो । फिर बोला, " बस सब समझ में आ गया । मालिक, अगर पंचायत में आप की भेड़िया जाति का बहुमत हो जाए तो?"

भेड़िया चिढ़कर बोला, "कहाँ की आसमानी बातें करता है? अरे हमारी जाति कुल दस फ़ीसदी है और भेड़ें तथा अन्य छोटे पशु नब्बे फ़ीसदी । भला वे हमें काहे को चुनेंगे ! अरे, कहीं ज़िंदगी अपने को मौत के हाथ सौंप सकती है? मगर हाँ, ऐसा हो सकता तो क्या बात थी !"

बूढ़ा सियार बोला, "आप खिन्न मत होइए सरकार ! एक दिन का समय दीजिए । कल तक कोई योजना बन ही जाएगी । मगर एक बात है। आपको मेरे कहे अनुसार कार्य करना पड़ेगा ।"

मुसीबत में फँसे भेड़िये ने आखिर सियार को अपना गुरु माना और आज्ञापालन की शपथ ली।

दूसरे दिन बूढ़ा सियार अपने तीन सियारों को लेकर आया । उनमें से उसने एक को पीले रंग में रँग दिया था, दूसरे को नीले में और तीसरे को हरे में ।

भेड़िये ने देखा और पूछा, "अरे ये कौन हैं?" बूढ़ा सियार बोला, " ये भी सियार हैं सरकार, मगर रँगे सियार हैं। आपकी सेवा करेंगे। आपके चुनाव का प्रचार करेंगे।"

भेड़िये ने शंका की, "मगर इनकी बात मानेगा कौन? ये तो वैसे ही छल-कपट के लिए बदनाम हैं।"

सियार ने भेड़िये का हाथ चूमकर कहा, "बड़े भोले हैं आप सरकार ! अरे मालिक, रूप-रंग बदल देने से तो सुना है आदमी तक बदल जाते हैं। फिर ये तो सियार हैं।"

और, तब बूढ़े सियार ने भेड़िये का भी रूप बदला। मस्तक पर तिलक लगाया, गले में कंठी पहनाई और मुँह में घास के तिनके खोंस दिए। बोला, "अब आप पूरे संत हो गए। अब भेड़ों की सभा में चलेंगे। मगर तीन बातों का ख्याल रखना – अपनी हिंसक आँखों को ऊपर मत उठाना, हमेशा ज़मीन की ओर देखना और कुछ बोलना मत, नहीं तो सब पोल खुल जाएगी और वहाँ बहुत-सी भेड़ें आएँगी, सुंदर-सुंदर, मुलायम-मुलायम, तो कहीं किसी को तोड़ मत खाना ।"

भेड़िये ने पूछा, "लेकिन ये रँगे सियार क्या करेंगे? ये किस काम आएँगे?"

बूढ़ा सियार बोला, "ये बड़े काम के हैं। आपका सारा प्रचार तो ये ही करेंगे। इन्हीं के बल पर आप चुनाव लड़ेंगे। यह पीला वाला सियार बड़ा विद्वान है, विचारक है, कवि भी है, लेखक भी। यह नीला सियार नेता और पत्रकार है। और यह हरा धर्मगुरु। बस अब चलिए।"

"ज़रा ठहरो।" भेड़िये ने बूढ़े सियार को रोका, "कवि, लेखक, नेता, विचारक – ये तो सुना है बड़े अच्छे लोग होते हैं। और ये तीनों ...."

बात काटकर सियार बोला, "ये तीनों सच्चे नहीं हैं, रँगे हुए हैं महाराज। अब चलिए, देर मत करिए।"

और वे चले। आगे बूढ़ा सियार था, उसके पीछे रँगे सियारों के बीच भेड़िया चल रहा था – मस्तक पर तिलक, गले में कंठी, मुख में घास के तिनके। धीरे-धीरे चल रहा था, अत्यंत गंभीरतापूर्वक, सिर झुकाए विनय की मूर्ति !

उधर एक स्थान पर सहस्त्रों भेड़ें इकट्ठी हो गई थीं, उस संत के दर्शन के लिए जिसकी चर्चा बूढ़े सियार ने फैला रखी थी।

चारों सियार भेड़िये की जय बोलते हुए भेड़ों के झुंड के पास आए ।

बूढ़े सियार ने एक बार ज़ोर से संत भेड़िये की जय बोली ! भेड़ों में पहले से ही यहाँ-वहाँ बैठे सियारों ने भी जयध्वनि की।

भेड़ों ने देखा तो वे बोलीं, "अरे भागो, यह तो भेड़िया है।"

तुरंत बूढ़े सियार ने उन्हें रोककर कहा, "भाइयो और बहनो । अब भय मत करो । भेड़िया राजा संत हो गए हैं। उन्होंने हिंसा बिलकुल छोड़ दी है। उनका 'हृदय परिवर्तन' हो गया है। वे आज सात दिनों से घास खा रहे हैं। रात-दिन भगवान के भजन और परोपकार में लगे रहते हैं। उन्होंने अपना जीवन जीव-मात्र की सेवा में अर्पित कर दिया है। अब वे किसी का दिल नहीं दुखाते, किसी का रोम तक नहीं छूते। भेड़ों से उन्हें विशेष प्रेम है। इस जाति ने जो कष्ट सहे हैं, उनकी याद करके कभी-कभी भेड़िया संत की आँखों में आँसू आ जाते हैं। उनकी अपनी भेड़िया जाति ने जो अत्याचार आप पर किए हैं उनके कारण भेड़िया संत का माथा लज्जा से जो झुका है, सो झुका ही हुआ है। परंतु अब वे शेष जीवन आपकी सेवा में लगाकर तमाम पापों का प्रायश्चित करेंगे। आज सवेरे की ही बात है कि एक मासूम भेड़ के बच्चे के पाँव में काँटा लग गया, तो भेड़िया संत ने उसे दाँतों से निकाला, दाँतों से! पर जब वह बेचारा कष्ट से चल बसा, तो भेड़िया संत ने सम्मानपूर्वक उसकी अंत्येष्टि-क्रिया की। उनके घर के पास हड्डियों का जो ढेर लगा है उसके दान की घोषणा उन्होंने आज ही सवेरे की। अब तो वे सर्वस्व त्याग चुके हैं। अब आप उनसे भय मत करें। उन्हें अपना भाई समझें। बोलो, सब मिलकर संत भेड़िया जी की जय ! "

भेड़िया जी अभी तक उसी तरह गरदन डाले विनय की मूर्ति बने बैठे थे। बीच में कभी-कभी सामने की ओर इकट्ठी भेड़ों को देख लेते और टपकती हुई लार को गुटक जाते।

बूढ़ा सियार फिर बोला, "भाइयो और बहनो, मैं भेड़िया संत से अपने मुखारविंद से आपको प्रेम और दया का संदेश देने की प्रार्थना करता पर प्रेमवश उनका हृदय भर आया है, वे गद्गद हो गए हैं और भावातिरेक से उनका कंठ अवरुद्ध हो गया है। वे बोल नहीं सकते। अब आप इन तीनों रंगीन प्राणियों को देखिए। आप इन्हें न पहचान पाए होंगे। पहचानें भी कैसे? ये इस लोक के जीव तो हैं नहीं। ये तो स्वर्ग के देवता हैं जो हमें सदुपदेश देने के लिए पृथ्वी पर उतरे हैं। ये पीले विचारक हैं, कवि हैं, लेखक हैं। नीले नेता हैं और स्वर्ग के पत्रकार हैं और हरे वाले धर्मगुरु हैं। अब कविराज आप को स्वर्ग-संगीत सुनाएँगे। हाँ कवि जी ...."

पीले सियार को 'हुआँ-हुआँ' के सिवा कुछ और तो आता ही नहीं था। 'हुआँ-हुआँ' चिल्ला दिया। शेष सियार भी 'हुआँ-हुआँ' बोल पड़े। बूढ़े सियार ने आँख के इशारे से शेष सियारों को मना किया और चतुराई से बात को यों कहकर सँभाला, "भई कवि जी तो कोरस में गीत गाते हैं। पर कुछ समझे आप लोग? कैसे समझ सकते हैं? अरे, कवि की बात सबकी समझ में आ जाए तो वह कवि काहे का? उनकी कविता में से शाश्वत के स्वर फूट रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जैसे स्वर्ग में परमात्मा वैसे ही पृथ्वी पर भेड़िया। हे भेड़िया जी, महान ! आप सर्वत्र व्याप्त हैं, सर्वशक्तिमान हैं। प्रातः आपके मस्तक पर तिलक करती है, साँझ की लाली आपका मुख चूमती है, पवन आप पर पंखा करता है और रात्रि को आपकी ही ज्योति लक्ष-लक्ष खंड होकर आकाश में तारे बनकर चमकती है। हे विराट ! आपके चरणों में इस क्षुद्र का प्रणाम है।"

फिर नीले रंग के सियार ने कहा, "निर्बलों की रक्षा बलवान ही कर सकते हैं। भेड़ें कोमल हैं, निर्बल हैं, अपनी रक्षा नहीं कर सकतीं। भेड़िये बलवान हैं इसलिए उनके हाथ में अपने हितों को छोड़ निश्चिंत हो जाओ, वे भी तुम्हारे भाई हैं। तुम एक ही जाति के हो। तुम भेड़, वे भेड़िये। कितना कम अंतर है ! और बेचारे भेड़िये व्यर्थ ही बदनाम कर दिए गए हैं कि वे भेड़ों को खाते हैं। अरे खाते और हैं हड्डियाँ उनके द्वार पर फेंक जाते हैं। ये व्यर्थ

बदनाम होते हैं। तुम लोग तो पंचायत में बोल भी नहीं पाओगे। भेड़िये बलवान होते हैं। यदि तुम पर कोई अन्याय होगा, तो डटकर लड़ेंगे। इसलिए अपने हित की रक्षा के लिए भेड़ियों को चुनकर पंचायत में भेजो। बोलो संत भेड़िया की जय !"

फिर हरे रंग के धर्मगुरु ने उपदेश दिया, "जो यहाँ त्याग करेगा, वह उस लोक में पाएगा। जो यहाँ दुःख भोगेगा, वह वहाँ सुख पाएगा। जो यहाँ राजा बनाएगा, वह वहाँ राजा बनेगा। जो यहाँ वोट देगा, वह वहाँ वोट पाएगा। इसलिए सब मिलकर भेड़िया को वोट दो। वे दानी हैं, परोपकारी हैं, संत हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूँ।"

यह एक भेड़िये की कथा नहीं है, यह सब भेड़ियों की कथा है। सब जगह इस प्रकार प्रचार हो गया और भेड़ों को विश्वास हो गया कि भेड़ियों से बड़ा उनका कोई हित-चिंतक और हित-रक्षक नहीं है।

और, जब पंचायत का चुनाव हुआ तो भेड़ों ने अपनी हित-रक्षा के लिए भेड़ियों को चुना।

और, पंचायत में भेड़ों के हितों की रक्षा के लिए भेड़िये प्रतिनिधि बनकर गए।

और, पंचायत में भेड़ियों ने भेड़ों की भलाई के लिए पहला कानून यह बनाया – हर भेड़िये को सवेरे नाश्ते के लिए भेड़ का एक मुलायम बच्चा दिया जाए, दोपहर के भोजन में एक पूरी भेड़ तथा शाम को स्वास्थ्य के ख्याल से कम खाना चाहिए, इसलिए आधी भेड़ दी जाए ।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. वन के पशुओं ने शासन व्यवस्था की आवश्यकता क्यों महसूस की?
2. पशुओं ने किस शासन व्यवस्था को अच्छा माना?
3. प्रजातंत्र की स्थापना की बात से पशु समाज में हर्ष की लहर क्यों दौड़ गई?
4. भेड़ों की सभा में जाने के लिए भेड़िये ने क्या रूप धारण किया?
5. बूढ़े सियार ने रँगे हुए सियारों का परिचय किन शब्दों में दिया?

लिखित

1. प्रजातंत्र की स्थापना के समाचार से भेड़ों और भेड़ियों पर भिन्न-भिन्न क्या प्रतिक्रिया हुई?
2. 'हर भेड़िये के आस-पास दो-चार सियार रहते ही हैं।' यह कथन मानव-समाज पर किस प्रकार लागू होता है?
3. बूढ़ा सियार नई सरकार बनने की बात जानकर भी अनजान क्यों बन रहा था?
4. बूढ़े सियार ने भेड़िये को चुनाव जीतने की क्या तरकीब बताई? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
5. बूढ़े सियार ने भेड़िये के 'हृदय-परिवर्तन' के क्या क्या प्रमाण दिए?
6. भेड़ों को संदेश देने में भेड़िये की असमर्थता के बारे में बूढ़े सियार ने क्या कारण बताए?
7. बूढ़े सियार ने पीले सियार की 'हुआँ-हुआँ' ध्वनि की किस प्रकार व्याख्या की?
8. नीले और हरे सियार ने भेड़िये का गुणगान कैसे किया?
9. चुनाव से पूर्व दिए गए आश्वासन के संदर्भ में चुनाव के बाद बनाए गए पहले कानून पर टिप्पणी कीजिए।
10. 'प्रचार-तंत्र गलत को सही और सही को गलत सिद्ध करने में सफल हो सकता है' — प्रस्तुत कहानी के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।
11. निम्नलिखित कथनों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए —

    (क) कवि की बात सबकी समझ में आ जाए तो वह कवि काहे का?

(ख) भेड़ों से उन्हें विशेष प्रेम है। इस जाति ने जो कष्ट सहे हैं, उनकी याद करके कभी-कभी भेड़िया संत की आँखों में आँसू आ जाते हैं।

(ग) यह एक भेड़िये की कथा नहीं है, यह सब भेड़ियों की कथा है।

12. यह कथा आज की चुनावी राजनीति को उजागर करती है। सिद्ध कीजिए।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम बताइए –
   शासन-व्यवस्था, मुखचंद्र, स्वर्ण-युग, छल-कपट, ध्यानमग्न, सुख-समृद्धि, हित-रक्षक ।
2. पाठ में भेड़ों की विशेषताएँ बताने के लिए निम्नलिखित विशेषण प्रयुक्त हुए हैं –
   नेक, ईमानदार, कोमल, विनयी, दयालु, निर्दोष ।
   आपकी दृष्टि में भेड़िये और बूढ़े सियार के चरित्र-चित्रण के लिए कौन-कौन से विशेषण उपयुक्त होंगे?

योग्यता -विस्तार

1. पाठ में से उन अंशों को चुनिए, जिनमें मानव-समाज के विभिन्न वर्गों पर चुटीला व्यंग्य हुआ है।
2. 'चुनावी वायदे : कितने सच्चे, कितने खोखले' वर्तमान राजनीति के संदर्भ में इस संबंध में चर्चा कीजिए ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

निहायत : अत्यधिक, बहुत ज़्यादा

फूँक-फूँक कर खाना : सोच-समझ कर कार्य करना ।

बंधुत्व : भाई चारे की भावना

उल्लास : प्रसन्नता, खुशी

दाँत निपोरना : गिड़गिड़ाना

चारा : उपाय

दिल बैठना : घबरा जाना

अजायबघर : दुर्लभ या पुरानी वस्तुओं का संग्रहालय

फ़ीसदी : प्रतिशत

आसमानी बातें करना : ऊँची-ऊँची बातें करना ।

खिन्न : उदासीन, चिंतित, अप्रसन्न

रँगा सियार : कपटी व्यक्ति

प्रायश्चित : पश्चाताप

अंत्येष्टि : अंतिम संस्कार

गद्‌गद होना : प्रेम आदि के अतिरेक से गला भर आना, हर्ष

भावातिरेक : भाव विह्वलता, अधिक भावुक होना

कंठ अवरुद्ध होना : गला रुँध जाना, भावुकता के कारण बोल न पाना

सदुपदेश : उत्तम शिक्षा, उचित सलाह

लक्ष-लक्ष : लाखों

क्षुद्र : तुच्छ

प्रभाकर द्विवेदी

प्रभाकर द्विवेदी का जन्म मध्य भारत की रियासत धार में सन 1933 में हुआ। बचपन विभिन्न स्थानों पर बीता। प्रारंभिक शिक्षा भी विभिन्न कस्बों और विभिन्न जनपदों में हुई। उच्च शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय में प्राप्त की।

आजीविका के लिए विभिन्न नौकरियाँ कीं। भारतीय ज्ञानपीठ में किताबें बेचीं। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के 'हिंदी-विश्वकोश' में सहायक संपादक रहे। राउरकेला स्टील प्लांट में जन-संपर्क अधिकारी का काम किया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रकाशन विभाग में मुख्य संपादक रह कर सन 1994 में सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण किया। आजकल दिल्ली में स्वतंत्र रूप से लेखन कर रहे हैं।

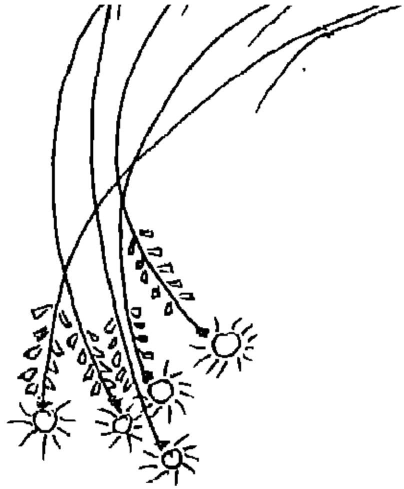
शैशवकाल से ही प्रभाकर द्विवेदी की रुचि शौकिया भ्रमण में थी। उन्होंने इस प्रकार के भ्रमण के विवरण पहले तो डायरी के रूप में लिखे बाद में रिपोर्ताज के रूप में प्रकाशित करवाए। बी.ए. में पढ़ते समय गरमी की छुट्टियों में एक ग्रामीण नदी के किनारे उन्होंने भ्रमण किया। छुट्टियों के बाकी बचे भाग में भ्रमण का वृत्तांत लिख डाला जो भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित किया गया। इस रचना का नाम है – **पार उतरि कहँ जइहौ।**

इनकी अन्य पुस्तकों में से कुछ हैं –

धूप में सोई नदी, मेरी अंतिम कविता, इकाइयों के बीच, वही आदिम आँच, मरुभूमि में खोई नदी, फिर बहुत दिन बाद, शीतला बहू का प्रसंग, किसको नमन करूँ।

यहाँ **पार उतरि कहँ जइहौ** का अंतिम अंश दिया जा रहा है। चिलचिलाती धूप में भ्रमण करते हुए लेखक को लगता है कि इस भ्रमण का अंत यहीं होना चाहिए। गरमी से बेहाल हुए लोग

इंद्र भगवान से वर्षा की याचना करते हैं। गाँव के बच्चे कीचड़ में लोट कर वर्षा के देवता से पानी माँगते हैं। तभी लेखक कीचड़ में फिसल जाता है। उसे अच्छा लगता है क्योंकि यह तो वर्षा मंगल है, जन-जन का त्योहार है जिसमें व्यक्ति समाज का हो जाता है। फिर वह भी इस जनसमूह का अंग क्यों न बन जाए!



धरती की गंध

छोटी सी ग्रामीण नदी। नाम मनोरामा। लगा जैसे अपनी ही हो। उसके किनारे-किनारे दूर तक भ्रमण करने की इच्छा मन में जागी। समय की कमी न थी। सामने पसरी पड़ी थीं गरमी की छुट्टियाँ।

नाले के आकार वाली मनोरामा के किनारे-किनारे कई दिनों तक चलता रहा। शुरू में पानी मटमैला, कीचड़-सना था। ज्यों-ज्यों नदी की चौड़ाई बढ़ी, उसके इस्तेमाल के तरीके भी बढ़ते गए। पानी में नहाते हुए, कपड़े धोते हुए, भैंसों को नहलाते हुए लोग दिखते रहे ।

चिलचिलाती धूप में छाँव तलाशता हुआ मैं आगे बढ़ता गया। ग्रीष्म की तपन सह नहीं पा रहा था। गरमी से बेहाल पशु नदी के गंदे पानी में लोट रहे थे। किनारे के पेड़ की छाँह में चरवाहे कौड़ी या चौसर खेल रहे थे। छोटे बच्चे गोट्टी खेल रहे थे।

लगता है कि युगों से ऐसा ही चला आया होगा। यही नदी-तट होगा, ऐसे ही खेत-परती। चरवाहे और गोरू भी इसी प्रकार। सब कुछ इसी प्रकार। फिर भी हर इकाई स्वयं में संपूर्ण

होगी। हर इकाई की अपनी कथा होगी। संपूर्ण तट-कथा एक है किंतु इस तट-कथा का प्रत्येक बिंदु एक बिंदु-कथा कहने को लालायित होगा। कहाँ तक सुना जाए – कहाँ तक कहा जाए? यह एक चिरंतन कथा है। यह मन की कथा है। मन ही की आकांक्षा-वासना है। मन दीवारों में घिरकर बैठा रहे तो उसकी कथा वहीं तक है। पर यह इतना संकोची और गंभीर है तो नहीं। यह तो सदैव उड़ता है। इसके पंखों को कोई बाँध पाया है आज तक?

अगम-दुर्गम पथों का विजेता है यह मन। जानी-पहचानी राहों को उपेक्षित करने वाला है यह मन।

मन, तू पार उतरि कहँ जइहौ।
आगे पंथी पंथ न कोई, कूच मुकाम न पइहौ।

सेवार से ढकी मनोरामा के किनारे-किनारे दस बजे तक चला। तन भी थका, मन भी। एक सद्गृहस्थ के घर रुका। गाँव में बनिये की दुकान से चावल खरीद लाया। घर से बटलोई माँग ली। नहाकर अहरा सुलगाया। चावल पक गया। गृहिणी ने जब यह जाना कि गाँव के अहीर के यहाँ दही खरीदने जा रहे हैं तो अपने यहाँ से ले आई।

खाकर, बटलोई माँजकर, ओसारे में लेट रहा।

गरमी से बेहाल गाँव के कुछ लड़के पानी माँगने को आए। पानी से कीचड़ बना वे घर के सामने लोटने लगे :

कारे बदरा पानी दे
पानी दे गुड़ धानी दे
पानी दे पानी दे
बरखा दे चानी दे
कारे बदरा पानी दे

क्या अब भी इंद्र भगवान प्रसन्न न होंगे?

ऊष्मा सही नहीं जाती। उसमें प्राण फँसते हैं। पसीने में भी नींद आ ही जाती है।

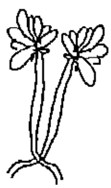
आँख खुली तो कुछ उजले-उजले बादल घिरे थे। छाँह किए थे, घाम न था। पर गरमी थी। सब लोग रह-रहकर बादलों की ओर देख लेते थे। यक्ष ने भी इतनी आतुरता से न देखा होगा।

"एक लहरा गिर जाता तो तपन मिट जाती।"

" फिर चाहे तो ना ही बरसता।"

"आम-जामुन पानी पाते ही मिठाय जाते।"

"पसु-प्रानी सीतल हुइ जाते।"



पानी पानी पानी।

बरखा बरखा बरखा।

फिर आँख लग गई। खुली तो 'टप-टप-टप' बूँदें गिर रही थीं। बड़ी-बड़ी बिड़र बूँदें गिर रही थीं टप-टप। थोड़ी-सी गिरकर रुक गईं।

बरसना रुका तो पानी सूख चुका था। धरती की प्यास कितनी चिरंतन है।

ओसारे में बैठा था। हवा का एक झोंका दक्खिन ओर के खेतों से आया तो सुगंध से मन भर गया । वनतुलसी की पत्तियों की महक । ऐसी गंध कि बैठा न रहा जाय। इच्छा हो कि पत्तियों का एक डंठल तोड़ लाएँ और हाथ में लिए बैठे रहें। सफ़ेदे की पत्तियों की महक-सी गंध।

उठकर खेत में गया। किंतु वहाँ कहीं वनतुलसी नहीं। पर महक थी। इधर-उधर देखा-ढूँढ़ा-खोजा। पर वहाँ कहीं नहीं। महक नाक में भरी आ रही थी।

गृहस्वामी ने पूछा, "क्या ढूँढ़ रहे हैं?"

"यहाँ वनतुलसी तो है नहीं । यह महक कहाँ से आती है?"

हँसे वे, "वनतुलसी नहीं, यह धरती की साँस है। पानी पीकर धरती साँस लेती है तो ऐसी ही गमक देती है।"

धरती की सुवास।

सुना था कि धरती की सोंधी गंध होती है। आज जाना कि वह क्या होती है।

गंध फूलों में होती है, मंजरियों में होती है। मोथे और कचूर की जड़ में भी होती है। पर इन सबकी — हम सबकी जो माँ है, उस आद्या की तुष्टि-निश्वास में भी गंध होती है। वह गंध है जो नासिका को, मन को खींचती है।

मन देस-देस घूमा-भटका, पर आज आकर वह सुवास-बिंदु पाया जहाँ मन टिका है। असंख्य बूँदें गिरीं, बादलों ने भटकना छोड़ा तब धरती ने सुवास दी।

माँ धरती, तुम्हें असंख्य प्रणाम !

अलस भाव से चारपाई पर आ बैठा। आगे जाने की इच्छा न हुई। लगा कि जैसे सब कुछ पा लिया। अब और कहाँ चलूँ। संघर्ष के बाद मिलने वाले आशाप्रद फल का जो संतोष होता है वह मन को विश्राम देता है। वह विश्वास पाया।

थोड़ी देर में और बादल घिरे। इस बार गरजे भी —

गड़ ड़ ड़ ऽ ऽ ऽ गड़ गड़ गड़ गड़ गड़ ड़ ड़ ड़

जैसे कहीं नगाड़ा बजा हो ताज़ियों के उठने का —

कुड़ुक्कुड़ुक्कड़ड़झँइक्झक्कड़........

सब ओर छाँह घिर आई। हवा बही तेज़। और फिर वर्षा आई। पहले बूँदें छिटकीं फिर झीनी-झीनी बुनिया मेहा बरसे। फिर पानी गिरा। फिर मूसलाधार। सामने पानी ही पानी हो गया। तब फिर बूँदें पड़ने लगीं। बूँद गिरती है तो पानी में बिंदु बनता है। बिंदु का वृत्त बनता है। बूँदें गिरती हैं— चूड़ियाँ बनती हैं। कई-कई चूड़ियाँ। हर चूड़ी पूरी बन जाती है — संपूर्ण वृत्त।

एक चूड़ी दूसरी को काटती भी है पर स्वयं पूर्णता को प्राप्त कर और दूसरी को भी पूर्ण हो जाने का मौका देकर। हर बिंदु की अपनी कथा है। हर कथा स्वयं में पूर्ण है। फिर भी एक कथा है तट की — तट-कथा।

शाम तक बारिश रुकी नहीं। अच्छा लगा।

शाम को कहाँ जाऊँ? फिर अहरा सुलगाया। खिचड़ी बनी। बरसना रुक गया था। आकाश निर्मल हो गया था। चारों ओर हर चीज़ धुली हुई थी। बचपन में हृदय का आनंद कागज़ की नोका में लहराता था। पर अब बचपन कहाँ! यात्रा तो चलती ही रहेगी। नदी-तीरे खड़ा हो गया। इतनी वर्षा में ही पानी बढ़ गया था, पर कुछ ही।

सोचा था कि इन नदी माँ के साथ-साथ इनके मुहाने तक चलूँगा। पर ऐसा न हो पाया, न हो पाएगा ही। अच्छा ही है।

ये जो युगों से बहती आई हैं, बिंदु से बिंदु को मिलाती आई हैं, उन्हें नाप पाना मेरे जैसे बिंदु के शतांश के लिए संभव है क्या? यदि जड़ दूरी को नाप भी लेता तो क्या वह उन्हें नापना हो पाता?

माँ की गरिमा को कौन नाप पाया है !

प्रणाम है तुम्हारी इस गरिमा को। प्रणाम है तुम्हें। प्रणाम है तुम्हारी कथा को।

अंतर से प्रणाम किया। पर अहंकारी देह झुक न पाई नतशिर होकर माँ के सम्मुख। लौट पड़ा।

ताल तलैयों में पानी भर गया। खेतों में भी। मेढकों ने सुर मिलाए :

मेक मेंको, मेक मेंको
दुआर छेंको, मेक मेंको
मेंको मेंको मेंको मेंको

धुले आकाश में जो सूर्य उदय होता है वह कितना नेत्ररंजक! ग्रीष्म की धूल बैठ गई। वातावरण निर्मल हो गया।

खेतों में लोग आ गए। किसानों ने हल-बैल सँभाले। स्त्रियाँ घास चिखुरने लगीं। बच्चे कौतुक देखने लगे। सबकी देह कीचड़ हो गई फिर भी सब लगे हैं। यह वर्षा मंगल है। यह है श्रम का आमंत्रण।

मेंड़-मेंड़ चल रहा था कि रपटकर गिर गया। कपड़ों में कीचड़ पुत गई। पर खिसियाहट की हँसी न हँसा। अच्छा ही लगा। जहाँ इतने लोग वर्षा मंगल कर रहे हैं, मैं ही कैसे वंचित रहूँ ! माँ धरती के चंदन का लेप मिला। इस प्रसाद के सौभाग्य की वेला को प्रणाम है ! प्रणाम है !

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. भ्रमण करने के लिए समय की कमी क्यों नहीं थी?
2. नदी के पानी के इस्तेमाल के तरीके क्यों बढ़ते गए?
3. तट-कथा के प्रत्येक बिंदु से क्या तात्पर्य है?
4. लेखक ने तट-कथा को चिरंतन कथा क्यों कहा है?
5. लेखक अपने आपको अधिक कहने-सुनने में क्यों असमर्थ पाता है?
6. मन की कथा कब सीमित हो जाती है?
7. मन सदैव क्यों उड़ता रहता है?
8. 'मन, तू पार उतरि कहँ जइहौ ।
   आगे पंथी पंथ न कोई, कूच मुकाम न पइहौ।'
   इन पंक्तियों में कवि कहता है कि यात्रा का प्रयास व्यर्थ है। दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर पर निशान लगाइए —

(क) आगे का पथ अति दुर्गम है।

(ख) इस यात्रा का कोई ओर-छोर नहीं है।

(ग) तू जहाँ है, वहीं विश्राम कर लेना ठीक है।

(घ) रास्ते में भटकने का डर है।

9. लेखक ने धरती की साँस किसे कहा है? क्यों?
10. कपड़ों के कीचड़ से सन जाने पर भी लेखक अपने पर हँस क्यों नहीं पाया?
11. लेखक ने माँ धरती के चंदन का लेप किसे कहा है?

लिखित

1. मन जानी-पहचानी राहों को उपेक्षित कर अगम-दुर्गम पथों की ओर क्यों जाता है?
2. गाँव के लड़कों का पानी माँगना किस लोक धारणा को दर्शाता है?
3. 'आद्या की तुष्टि-निश्वास में भी गंध होती है।' इस पंक्ति में किस ओर संकेत है?
4. गिरती हुई बूँदों से बनते हुए विभिन्न दृश्य-चित्रों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
5. आशय स्पष्ट कीजिए –

   (क) मन देस-देस घूमा-भटका, पर आज आकर वह सुवास बिंदु पाया जहाँ मन टिका है। असंख्य बूँदें गिरीं बादलों ने भटकना छोड़ा तब धरती ने सुवास दी।

   (ख) यदि जड़ दूरी को नाप भी लेता तो क्या वह उन्हें नापना हो पाता?
6. 'धरती की गंध' शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए। इसके स्थान पर कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक सुझाइए ।

भाषा-अध्ययन

इस रचना में ठेठ आंचलिक परिवेश उभरकर आया है। आंचलिक भाषा के प्रयोग छाँटिए और उनके मानक रूप लिखिए ।

योग्यता -विस्तार

1. प्रत्येक अंचल विशेष की पृथक शब्दावली होती है। इस रचना में ग्राम्य अंचल के शब्दों की भरमार है। फणीश्वरनाथ रेणु, कुबेरनाथ, विवेकी राय जैसे आंचलिक

लेखकों की रचनाएँ पढ़िए और उनमें वर्णित अंचलों की भाषा का परिचय प्राप्त कीजिए।

2 मूलतः यात्रा वर्णन होने के कारण इसमें 'यात्रा वृत्तांत' विधा के निम्नलिखित तत्त्व देखने को मिलते हैं –

(क) यात्रा का प्रयोजन

(ख) घटनाक्रम की गतिशीलता

(ग) यात्रा के दौरान बदलते दृश्य-चित्र

(घ) मार्ग के विभिन्न स्थानों के निवासियों की जीवन-शैली

(ङ) लोक संस्कृति की झलक

पाठ को ध्यान से पढ़िए और उन अंशों को छाँटिए, जिनमें उपर्युक्त तत्त्व उभरकर आए हैं।

शब्दार्थ और टिप्पणी

चिलचिलाती धूप : तेज़ धूप

चौसर : एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार-चार गोटियों से खेला जाता है

चरवाहा : ढोर चराने वाला

गोरू : चौपाया, ढोर, गाय-भैंस आदि

तट-कथा : नदी किनारे के निवासियों की सभ्यता-संस्कृति की कथा

चिरंतन : शाश्वत, नित्य

उपेक्षित : जिसकी ओर ध्यान न दिया गया हो

कूच मुकाम : प्रस्थान करने का स्थान

पइहौ : पाओगे

सेवार : सिवार, एक जलीय पौधा, शैवाल

बटलोई : पतीली

अहरा : कंडे जलाकर सुलगाया जाने वाला चूल्हा

ओसारा : बरामदा, मकान में खुली जगह

ऊष्मा : ताप

घाम : धूप

लहरा : वर्षा का एक झोंका

मिठाय जाते : मीठे हो जाते

बिड़र : अलग-अलग

गमक : महक

सुवास : सुगंध

वृत्त : गोला

नेत्ररंजक : आँखों को सुख देने वाला

चिखुरना : जुताई के बाद घास निकालना



कमला रत्नम

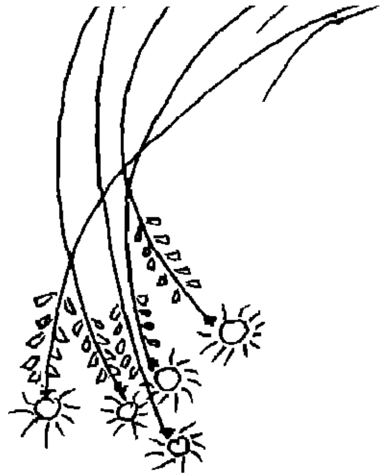
श्रीमती कमला रत्नम का जन्म प्रयाग में सन 1914 में हुआ था। इन्होंने संस्कृत भाषा और साहित्य की उच्च शिक्षा प्राप्त की। ये बड़े उदार विचारों वाली महिला थीं। जात-पाँत के बंधनों को तोड़कर इन्होंने केरलवासी श्री पेराला रत्नम से विवाह किया।

इनके पति विदेश-सेवा में थे। उन्होंने भारत के राजदूत के रूप में कई देशों में काम किया। उनके साथ कमला जी ने भी देश-विदेश का भ्रमण किया। कमला जी ने राजदूत की पत्नी के रूप में विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार करने की दिशा में बहुत कार्य किया। लोगों से मिलने-जुलने, उनकी विचारधारा को समझने, अपने विचारों एवं संस्कृति से लोगों को प्रभावित करने की कला में ये निपुण थीं।

कमला जी शिक्षण से भी संबद्ध थीं। दिल्ली के रामजस स्कूल की लोकप्रिय प्रधानाचार्या के रूप में इन्हें हमेशा याद किया जाएगा। सन 1991 में इनका स्वर्गवास हो गया।

कमला जी को बच्चों के लिए लिखने का शौक था। इनकी पुस्तक **अक्षर गीत** बड़ी लोकप्रिय सिद्ध हुई थी। हिंदी की जानी-मानी पत्रिकाओं में ये लिखा करती थी। देश-विदेश की विभूतियों से साक्षात्कार करने का इन्हें शौक था। उच्चकोटि के विद्वानों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों एवं समाजसुधारकों से अपनी भेंट का विवरण इन्होंने संस्मरणों के रूप में लिखा और प्रकाशित करवाया।

प्रस्तुत पाठ भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन के बारे में कमला जी का संस्मरण है। लेखिका ने अपनी कलात्मक शैली में ज़ाकिर साहब के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उनकी रुचियों की विविधता, उनकी धार्मिक सहिष्णुता, राष्ट्रपति पद के अनुकूल उनकी गरिमा, अपने परिजनों के प्रति उनकी भाव-प्रवणता आदि विशेषताएँ उभर कर पाठक के सम्मुख आ जाती हैं।



शिक्षक से राष्ट्रपति

तीन मई 1969 को मैं सवेरे सात, साढ़े-सात बजे अपने पढ़ने के कमरे में बैठी थी कि फ़ोन की घंटी बजी, सचिव सुधाकर ने राजदूत (श्री पेराला रत्नम) को बताया कि प्रातःकाल के पहले बुलेटिन में समाचार आया है कि राष्ट्रपति ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु हो गई है, अचानक दिल के दौरे से।

पहले दो राष्ट्रपतियों को मैं पहचानती थी, परंतु ज़ाकिर हुसैन से व्यक्तिगत रूप से परिचित थी। उनको मैं तब से जानती थी, जब वे बिहार के राज्यपाल पद से निवृत्त होकर भारत के उपराष्ट्रपति-पद पर नियुक्त हुए थे। समय-समय पर हमें उनसे किसी न किसी संबंध में मिलने जाने का सौभाग्य प्राप्त होता रहता था। ज़ाकिर साहब की जन्मभूमि इटावा थी – उत्तर प्रदेश की भूमि, गंगा-यमुना नदी की भूमि। शायद उनसे मिलते समय मेरे मन में जो प्यार उमड़ता था वह एक ही प्रदेश की मिट्टी बोलती थी। कुछ बातें हैं उनकी जो भूली नहीं जा सकतीं।

मुझ पर जो विश्वास प्रकट किया है उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यह भावना इस वजह से और भी प्रबल हो जाती है कि भारत के महान सपूत डॉ. राधाकृष्णन के बाद मुझसे इस पद को सँभालने के लिए कहा गया। मैं उनके कदमों पर चलने की कोशिश करूँगा, लेकिन उनकी बराबरी कैसे कर सकूँगा?"

भारत के वे असली सपूत थे, इसका सबूत उन्होंने पदारूढ़ होने के एक दिन पहले तब दिया जब वे दिल्ली में शृंगेरी के जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य से भेंट करने गए। जगद्गुरु के सामने पुष्प और फल रखते हुए उन्होंने कहा था — आपका आशीर्वाद चाहिए और शंकराचार्य ने राष्ट्रपति के सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दिया था। ऐसी ही एक और घटना याद आती है। उपराष्ट्रपति-निवास के अहाते में एक दिन सवेरे घूम रहे थे तो देखा कि माली के घर में कीर्तन हो रहा है। फिर क्या था, टहलते हुए उधर चले गए और सबके साथ एक कोने में दरी पर बैठ गए। जब कुरसी लाने के लिए कहा गया तो बोले, "भगवान के घर में सब बराबर होते हैं।" — और दरी पर ही बैठे रहे। पटियाला में पंजाबी विश्वविद्यालय में गुरु गोबिंद सिंह के संस्थान की नींव रखने को आपसे कहा गया तो बोले, "आपने मुझसे इस पवित्र संस्थान की नींव रखने को कहा है। इससे मुझे याद आता है कि अमृतसर में दरबार साहब की नींव डालने के लिए भी एक मुसलमान को ही बुलाया गया था," और यह कहते-कहते उनका गला भर आया, आँखों से आँसू बहने लगे। बड़े-बड़े योद्धा सिख सरदार श्रोताओं की भी उस समय आँखें भर आईं।

अपने साफ़-सुथरे सुरुचिपूर्ण खादी के कपड़ों और सुरुचि से सँवारी सफ़ेद दाढ़ी के बीच चमकते हलके गुलाबी गौर वर्ण मुखमंडल से ज़ाकिर साहब प्रेम और आत्मीयता में गांधी जी के अंतिम उत्तराधिकारी नज़र आते थे। देश के आने वाले बच्चे बापू को भूल न जाएँ, इस संबंध में उन्होंने एक बार कहा था, "आप आज्ञा दें तो इस अवसर से लाभ उठाकर गांधी जी के संबंध में कुछ आपसे कहूँ। उनको जानने और समझने से उनके काम को समझना और उसमें जी-जान से लगना ज़रा सरल हो सकता है। यह इसलिए और भी करना चाहता

हूँ कि अब दिन पर दिन उन लोगों की संख्या घट रही है जिन्होंने गांधी जी को देखा था, उनके साथ काम किया था, उनके बताए हुए रास्ते पर चले थे। जब वे दुनिया से गए तो ये लोग बच्चे थे। बहुत से पैदा भी नहीं हुए थे। उनकी गिनती अब दिन पर दिन बढ़ती ही जाएगी। नया काल होगा, नए हाल होंगे, नए जंजाल होंगे, ऐसा न हो कि यह नई नस्ल गांधी जी और उनके कार्यों की तह में जो विचार थे उनको भुला बैठे। ऐसा हुआ तो हमारी सबसे मूल्यवान पूँजी बरबाद हो जाएगी।"

ज़ाकिर साहब से मिलने के लिए समय प्राप्त करने में देर नहीं लगती थी। एक बार मेरी एक सहेली ऑस्ट्रेलिया से भारत की यात्रा करने आई। अपने देश में वे भारतीयों की शिक्षा के लिए धन एकत्र किया करती थीं। एक भारतीय बच्चे को उन्होंने गोद भी ले लिया था। ज़ाकिर साहब ने तुरंत उनसे मिलने के लिए समय दिया और देर तक बैठे उनसे उनके कार्य, उनकी भारत यात्रा के बारे में सुनते रहे। हिंदी सीखने के बारे में एक बार जब उनसे प्रश्न किया गया तो उन्होंने कहा, "मेरे परिवार के एक बच्चे ने जब गांधी जी से ऑटोग्राफ़ माँगा तो उन्होंने अपने हस्ताक्षर उर्दू में किए, उसी दिन से मैंने अपने मन में निश्चय कर लिया कि हिंदी भाषियों को अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही दिया करूँगा।"

एक बार रामलीला में जनता ने उनसे रामचंद्र जी का तिलक करने के लिए कहा। ज़ाकिर साहब खुशी से आए और तिलक किया। इस पर कुछ उर्दू अखबारों ने एतराज़ किया। ज़ाकिर साहब ने जवाब दिया, "इन नादानों को मालूम नहीं है कि मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ। किसी खास धर्म का नहीं।"

ज़ाकिर साहब राष्ट्रपति भवन में सादगी और विनम्रता के साथ कला-प्रियता को भी ले आए थे। उनकी आँखों में ब्रिटेन के अभिमान के अवशेष शीशे के टुकड़ों के समान खटके। उन्होंने मुगल उद्यान को न केवल सुरक्षित रखा अपितु अपने व्यक्तित्व के वैभव से उसकी वृद्धि भी की। उनके समय में राष्ट्रपति-भवन के बगीचों में 400 किस्म के नए गुलाब लगाए

गए, अनेक रंग-बिरंगे पशु-पक्षी, हिरन, मोर, सारस, कबूतर, राजहंस आदि भारत के कोने-कोने से मँगवा कर रखे गए। जानवरों से उनका प्रेम इतना घनिष्ठ था कि राष्ट्रपति भवन में उनके साथ उनका प्रिय तोता, मैना और गाय भी आए थे।

गांधी जी की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए उन्होंने 'बुनियादी तालीम' के लिए दिल्ली में 'जामिया मिल्लिया' की नींव रखी थी और अरसे तक बहुत ही कम वेतन पर उन्होंने इस संस्था की सेवा की थी और चूँकि जामिया के पास पैसे बहुत कम थे, वे हर महीने अपनी तनख्वाह कम करते गए थे और 75 रुपए पर आकर रुके थे। काम वे इतना अधिक करते थे कि एक बार जब घर वालों ने उनको आराम करने के लिए कहा तो उन्होंने जवाब दिया "आराम कैसे करूँ? तनख्वाह तो काम करने की लेता हूँ।"

हमारे देश में बहुत बोलने और भाषण देने की जो बीमारी है इसे वे सख्त नापसंद करते थे। कहते थे "ईश्वर ने बोलने के लिए मुँह एक दिया है और सुनने के लिए कान दो। इसलिए हमें सुनना ज़्यादा चाहिए, बोलना कम।" उन्होंने कभी अनावश्यक भाषण नहीं दिया। जब-जब उनसे सार्वजनिक रूप से बोलने को कहा गया, वे उठे और बड़ी नरमी से संक्षिप्त और सादे रूप में अपनी बात कह दी, जैसे अपने मित्रों और बच्चों से बात कर रहे हों। शिक्षा-मंत्रियों के एक सम्मेलन में उन्होंने कहा था, "ऐसा लगता है, आज़ादी के बाद से हम लोगों ने या तो उद्घाटन किए हैं या फिर भाषण दिए हैं। मैंने तय किया है कि अगर मुझसे बन पड़ा तो भविष्य में कोई उद्घाटन नहीं करूँगा। यह मैं जानता हूँ कि आप लोग मुझे छोड़ेंगे नहीं, मुझे तो यह भी डर है कि कहीं आप लोग उद्घाटन-कला पर भी कोई सम्मेलन न कर बैठें और उसका उद्घाटन करने को भी आप मुझसे कहें।" बुद्ध-जयंती-उद्यान में एक बार वन-महोत्सव पर उन्होंने कहा था, "पेड़ की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह चुपचाप खड़ा रहता है और सबको फल और छाया देता है। भारत को आज चुप नेताओं की ज़रूरत है।"

उन्होंने लिखा और बहुत लिखा। जर्मनी जाकर उन्होंने वर्षों शिक्षा और अर्थशास्त्र की बारीकियों का अध्ययन किया था। उनकी 'कछुआ और खरगोश' वाली कहानी हम सबके

लिए बहुत महत्त्व रखती है। उनका खरगोश सोता नहीं। मंज़िल पर पहुँचने से पहले उस पर एक शिकारी कुत्ता आक्रमण कर देता है। अंत में दोनों में से कोई भी नहीं जीतता। ज़िंदगी में हार-जीत का जितना महत्त्व है उतना ही महत्त्व साथ-साथ चलने का है। ज़ाकिर साहब ने हमें यह समझाने की कोशिश की, पर हम नहीं समझे। इसी कहानी में एक व्यक्ति जटिल संस्कृत बोलता है, तो दूसरा उससे बढ़कर ऊँट की बलबलाहट जैसी पेट की तलहटी को उलट कर रख देने वाली अरबी-बहुल उर्दू बोलता है। दोनों ही जनता से दूर हैं। आसमान में सबके लिए जगह है – पंडित, उलेमा और उसके लिए भी जो इन दोनों से दूर केवल अपनी ज़रूरत की बात कहना चाहता है। संस्कृत की सीमाओं को छूती हिंदी और अरब फ़ारस को पार करती हुई उर्दू दोनों ही आपसी दौड़ में जीतने वाली नहीं हैं। दोनों ही रहेंगी और अपने-अपने क्षेत्र की शोभा बढ़ाएँगी, परंतु साथ ही साथ आसमान की बहुत-सी जगह उन भाषाओं को भी देनी पड़ेगी जिनमें अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, तमिल, रूसी सभी भाषाओं के शब्द हैं और जो लोगों की ज़रूरतों को पूरा करती हैं, उनके दिलों का भार हलका करती हैं, दुख के आँसू पोंछती हैं और खुशी में हँसी की फुहार छोड़ती हैं। ज़ाकिर साहब के संपूर्ण व्यक्तित्व में उनके हर काम में हमें उस भारतीय भाषा के दर्शन होते थे।

भारतीय संस्कृति की इस अनूठी हस्ती के धरती से उठ जाने पर सैंकड़ों श्रद्धांजलियाँ प्रस्तुत की गईं। उनमें आकाशवाणी पर भाई जसदेव सिंह की आँखों देखी श्रद्धांजलि अत्यंत मर्मस्पर्शी थी। ज़ाकिर साहब का जनाज़ा जब अपने अंतिम विश्रामस्थल जामिया पहुँचने के लिए कवि रहीम की कब्र के नज़दीक पहुँचा तो उद्घोषक को अब्दुल रहीम खानखाना की ये पंक्तियाँ याद आ गईं –

"जो रहीम मन हाथ है, मनुवा कहु कित जाहि,
जल में ज्यों छाया परी, काया भीजत नाहिं।"

धरती माँ ने अंत में ज़ाकिर साहब के लिए अपनी गोद खोल दी। ज़ाकिर साहब अपने उन समस्त प्यारे पौधों की खाद बन गए जिनको रोपने, सजाने, सँवारने में उन्होंने सारा जीवन लगाया था।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. लेखिका डॉ. राधाकृष्णन और राजेंद्र बाबू की किन विशेषताओं से प्रभावित हुई?
2. लेखिका के मन में डॉ. ज़ाकिर हुसैन के प्रति प्यार उमड़ने का क्या कारण था?
3. लेखिका को डॉ. ज़ाकिर हुसैन के पास बैठने से आत्मीयता और विश्वास का अनुभव क्यों होता था?
4. महात्मा गांधी ने हिंदी को फैलाने के लिए क्या कारण दिए?
5. उद्घोषक को डॉ. ज़ाकिर हुसैन के जनाज़े के समय रहीम का कौन-सा दोहा याद हो आया?

लिखित

1. डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने महात्मा गांधी के हिंदी प्रेम से क्या प्रेरणा प्राप्त की?
2. विभिन्न धर्मों के प्रति डॉ. ज़ाकिर हुसैन की आदर भावना किन-किन उदाहरणों से व्यक्त होती है?
3. लेखिका ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में दिए गए डॉ. ज़ाकिर हुसैन के भाषण की प्रशंसा किन शब्दों में की?
4. डॉ. ज़ाकिर हुसैन के विचार से गांधी जी को जानने-समझने की आवश्यकता क्यों उठ खड़ी हुई है?
5. " ऐसा हुआ तो हमारी सबसे मूल्यवान पूँजी बरबाद हो जाएगी" – इस कथन में 'मूल्यवान पूँजी' किसे कहा गया है और उसके बरबाद हो जाने का डर क्यों हुआ?
6. इस पाठ के उन अंशों को चुनिए, जिनमें डॉ. ज़ाकिर हुसैन के साथ लेखिका की आत्मीयता झलकती है।
7. डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने लोक-व्यवहार में किस प्रकार की भाषा के प्रयोग पर बल दिया और क्यों?
8. "भारत को आज चुप नेताओं की ज़रूरत है" – डॉ. ज़ाकिर हुसैन के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
9. इस पाठ में डॉ. ज़ाकिर हुसैन के चरित्र की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरी हैं? उनमें से किस विशेषता ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया और क्यों?

भाषा-अध्ययन

1. नीचे दिए गए उपसर्ग एवं प्रत्यययुक्त शब्दों के मूल शब्द बताइए –
   प्रभावित, औपचारिक, सुरुचि, अनावश्यक, प्रबल, व्यक्तित्व, आत्मीयता, भारतीय।
2. इस पाठ में अरबी-फ़ारसी के अनेक शब्द आए हैं। उनमें से कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। उनके हिंदी रूप लिखिए –
   तनख्वाह, एतराज़, बेशकीमती, नापसंद, ज़बान, सबूत, इरादा, खुशहाली ।

योग्यता-विस्तार

1. डॉ.ज़ाकिर हुसैन के भाषणों के संग्रह में से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के 30वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर दिए गए भाषण को पढ़िए और कक्षा में उसकी विशेषता पर चर्चा कीजिए।
2. डॉ. ज़ाकिर हुसैन से पूर्व के राष्ट्रपतियों – डॉ. राजेंद्र प्रसाद और डॉ. राधाकृष्णन के संबंध में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उनकी जीवनियाँ पढ़िए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बुलेटिन : संक्षिप्त सूचना, समाचार

दीक्षांत समारोह : किसी विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्रों को उपाधि अथवा प्रमाण-पत्र आदि प्रदान करने के लिए आयोजित समारोह

महिमा : महत्ता, सौंदर्य

रूह : आत्मा

अविस्मरणीय : कभी न भूलने योग्य

इंसाफ़ : न्याय

पदारूढ़ : पद पर आसीन या सुशोभित

नस्ल : प्रजाति

एतराज़ : आपत्ति

उलेमा : आलिम (विद्वान) का बहुवचन

जनाज़ा : शव, अरथी

उद्घोषक : घोषणा करने वाला, आँखों देखा हाल सुनाने वाला

रामचंद्र शुक्ल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म बस्ती ज़िले के अगौना गाँव में सन 1884 में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के पास के अंग्रेज़ी स्कूल में हुई थी जहाँ इन्होंने उर्दू और अंग्रेज़ी का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद इन्होंने ड्राइंग मास्टरी का डिप्लोमा पास किया और ये मिर्ज़ापुर के मिशन स्कूल में ड्राइंग पढ़ाने लगे। मिर्ज़ापुर में अपने रिश्तेदार उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के संपर्क में आकर ये हिंदी और संस्कृत पढ़ने लगे। स्वाध्याय द्वारा इन्होंने संस्कृत, अंग्रेज़ी, हिंदी और बँगला के प्राचीन साहित्य का गंभीर अध्ययन किया।

हिंदी साहित्य में इनका प्रवेश कवि और निबंधकार के रूप में हुआ। इन्होंने बँगला और अंग्रेज़ी भाषा के कुछ सफल अनुवाद भी किए। प्रारंभ में इन्होंने **सरस्वती** और **नागरी प्रचारिणी पत्रिका** में स्फुट लेखन किया। उन दिनों इन्होंने तत्कालीन प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पत्रों में भी लिखा।

सन 1893 में हिंदी और नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार के लिए वाराणसी में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई थी। सभा की एक योजना **हिंदी शब्द सागर** के निर्माण की थी। सन 1910 में इस कोश में सहायक संपादक के रूप में शुक्ल जी की नियुक्ति हुई। फिर ये काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्यापक बने। कालांतर में हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने और मृत्युपर्यंत (सन 1941) वहीं कार्य करते रहे।

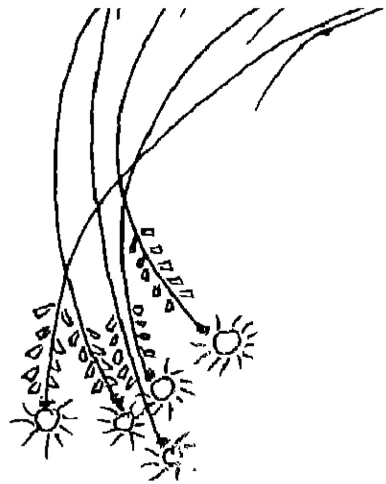
शुक्ल जी उच्चकोटि के निबंधकार और आलोचक थे। वस्तुतः उन्होंने हिंदी आलोचना को एक नई दिशा प्रदान की। इनकी पुस्तक **तुलसीदास** से हिंदी में प्रौढ़ आलोचना-पद्धति का प्रारंभ हुआ।

निबंध के क्षेत्र में भी रामचंद्र शुक्ल का जोड़ नहीं। **चिंतामणि** में दिए गए मनोवैज्ञानिक निबंधों में सूक्ष्म निरीक्षण, गंभीर चिंतन और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का अद्भुत संयोग है। इनकी

भाषा प्रांजल और सूत्रपरक है। निबंधों की शैली सजीव, प्रौढ़ एवं भावानुकूल है। उत्साह, श्रद्धा, भक्ति, ईर्ष्या, करुणा आदि भावनाओं पर श्रेष्ठ निबंधों की रचना शुक्ल जी ने की है।

आचार्य शुक्ल के प्रसिद्ध ग्रंथ हैं – **तुलसीदास, जायसी-ग्रंथावली की भूमिका, सूरदास, चिंतामणि** (तीन भागों में), **हिंदी साहित्य का इतिहास, रस मीमांसा** आदि।

प्रस्तुत निबंध आत्मनिर्भरता शुक्ल जी का ऐसा निबंध है जिसमें शुक्ल जी ने स्वावलंबन के महत्त्व का प्रतिपादन किया है, साथ ही जीवन में सफलता दिलाने में सहायक नम्रता, अध्यवसाय जैसे अन्य चारित्रिक गुणों पर भी प्रकाश डाला है।



आत्म-निर्भरता

इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्म-संस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतंत्रता परम आवश्यक है — चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्म-निर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे। ये बातें आत्म-मर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है — हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे कर्म, हमारे भोग, हमारे घर की और बाहर की दशा, हमारे बहुत-से अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों

का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है, जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चटपट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच, अपनी राह आप निकालती है।

अब तुम्हें क्या करना चाहिए, इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा, दूसरा कोई नहीं दे सकता। कैसा भी विश्वास-पात्र मित्र हो, तुम्हारे इस काम को वह अपने ऊपर नहीं ले सकता। हम अनुभवी लोगों की बातों को आदर के साथ सुनें, बुद्धिमानों की सलाह को कृतज्ञतापूर्वक मानें, पर इस बात को निश्चित समझकर कि हमारे कामों से ही हमारी रक्षा व हमारा पतन होगा, हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतंत्रता को दृढ़तापूर्वक बनाए रखना चाहिए। जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर न होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को न देखेंगे कि यह रास्ता कहाँ ले जाता है। चित्त की स्वतंत्रता का मतलब चेष्टा की कठोरता या प्रकृति की उग्रता नहीं है। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। जो मनुष्य अपना लक्ष्य जितना ही ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।

संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़ चित्त मनुष्य हो गए हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। राजा हरिश्चंद्र के ऊपर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आईं, पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। उनकी प्रतिज्ञा यही रही –

"चंद्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।
पै दृढ़ श्री हरिश्चंद्र कौ, टरै न सत्य विचार।।"

महाराणा प्रतापसिंह जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे, परंतु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते

रहने की सम्मति दी, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा की चिंता जितनी अपने को हो सकती है, उतनी दूसरे को नहीं। एक बार एक रोमन राजनीतिक बलवाइयों के हाथ में पड़ गया। बलवाइयों ने उससे व्यंग्यपूर्वक पूछा,"अब तेरा किला कहाँ है?" उसने हृदय पर हाथ रखकर उत्तर दिया, "यहाँ।" ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए यही बड़ा भारी गढ़ है। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा एक-न-एक नया अगुआ ढूँढ़ा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते हैं, वे आत्म-संस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते। उन्हें स्वयं विचार करना, अपनी सम्मति आप स्थिर करना, दूसरों की उचित बातों का मूल्य समझते हुए भी उनका अंधभक्त न होना सीखना चाहिए। तुलसीदास जी को लोक में इतनी सर्वप्रियता और कीर्ति प्राप्त हुई, उनका दीर्घ जीवन इतना महत्त्वमय और शांतिमय रहा, सब इसी मानसिक स्वतंत्रता, निद्र्वंद्वता और आत्म-निर्भरता के कारण। वहीं उनके समकालीन केशवदास को देखिए जो जीवन भर विलासी राजाओं के हाथ की कठपुतली बने रहे, जिन्होंने आत्म-स्वतंत्रता की ओर कम ध्यान दिया और अंत में आप अपनी बुरी गति की। एक इतिहासकार कहता है – "प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके हाथ में है। प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन-निर्वाह श्रेष्ठ रीति से कर सकता है। यही मैंने किया है और यदि अवसर मिले तो यही करूँ।" इसे चाहे स्वतंत्रता कहो, चाहे आत्म-निर्भरता कहो, चाहे स्वावलंबन कहो, जो कुछ कहो, यह वही भाव है जिससे मनुष्य और दास में भेद जान पड़ता है, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से राम-लक्ष्मण ने घर से निकल बड़े-बड़े पराक्रमी वीरों पर विजय प्राप्त की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से हनुमान ने अकेले सीता की खोज की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से कोलंबस ने अमरीका समान बड़ा महाद्वीप ढूँढ़ निकाला। चित्त की इसी वृत्ति के बल पर कुंभनदास ने अकबर के बुलाने पर फतेहपुर सीकरी जाने से इनकार किया और कहा था –

"मोको कहा सीकरी सों काम।"

इस चित्त-वृत्ति के बल पर मनुष्य इसलिए परिश्रम के साथ दिन काटता है और दरिद्रता के दुख को झेलता है जिससे उसे ज्ञान के अमित भंडार में से थोड़ा-बहुत मिल जाए। इसी

चित्त-वृत्ति के प्रभाव से हम प्रलोभनों का निवारण करके उन्हें सदा पद-दलित करते हैं, कुमंत्रणाओं का तिरस्कार करते हैं और शुद्ध चरित्र के लोगों से प्रेम और उनकी रक्षा करते हैं। इसी चित्त-वृत्ति के प्रभाव से युवा पुरुष कार्यालयों में शांत और सच्चे रह सकते हैं और उन लोगों की बातों में नहीं आ सकते जो आप अपनी मर्यादा खोकर दूसरों को भी अपने साथ बुराई के गड्ढे में गिराना चाहते हैं। इसी चित्त-वृत्ति के प्रताप से बड़े-बड़े लोग ऐसे समयों में भी, जबकि उनके साथियों ने उनका साथ छोड़ दिया है, अपने महत्त्वकार्यों में अग्रसर होते गए हैं और यह सिद्ध करने में समर्थ हुए हैं कि निपुण, उत्साही और परिश्रमी पुरुषों के लिए कोई अड़चन ऐसी नहीं, जो कहे कि "बस यहीं तक, और आगे न बढ़ना।" इसी चित्त-वृत्ति की दृढ़ता के सहारे दरिद्र लोग दरिद्रता और अपढ़ लोग अज्ञता से निकलकर उन्नत हुए हैं तथा उद्योगी और अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्धि का मार्ग निकाला है। इसी चित्त-वृत्ति के आलंबन से पुरुष-सिंहों को यह कहने की क्षमता हुई है, "मैं राह ढूँढूँगा या राह निकालूँगा।" यही चित्त-वृत्ति थी जिसकी उत्तेजना से शिवाजी ने थोड़े से मराठे सिपाहियों को लेकर औरंगज़ेब की बड़ी भारी सेना पर छापा मारा और उसे तितर-बितर कर दिया। यही चित्त-वृत्ति थी जिसके सहारे एकलव्य बिना किसी गुरु या संगी-साथी के जंगल के बीच निशाने पर तीर पर तीर चलाता रहा और अंत में एक बड़ा धनुर्धर हुआ। यही चित्त-वृत्ति है जो मनुष्य को सामान्य जनों से उच्च बनाती है, उसके जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण करती है तथा उसे उत्तम संस्कारों को ग्रहण करने के योग्य बनाती है। जिस मनुष्य की बुद्धि और चतुराई उसके दृढ़ हृदय के आश्रय पर स्थित रहती है, वह जीवन और कर्म-क्षेत्र में स्वयं भी श्रेष्ठ और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है। प्रसिद्ध उपन्यासकार स्कॉट एक बार ऋण के बोझ से बिलकुल दब गए। मित्रों ने उनकी सहायता करनी चाही, पर उन्होंने यह बात स्वीकार नहीं की और स्वयं अपनी प्रतिभा का सहारा लेकर थोड़े समय के बीच अनेक उपन्यास लिखकर लाखों रुपए का ऋण अपने सिर पर से उतार दिया।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. आत्म-संस्कार के लिए प्रायः क्या आवश्यक माना गया है?
2. मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए कौन-सा गुण होना चाहिए?
3. युवाओं को सदा क्या स्मरण रखना चाहिए?
4. आत्म-मर्यादा के लिए कौन-सी बातें आवश्यक हैं?
5. नम्र व्यक्ति वही है जो –
   (क) दूसरों का मुँह जोहता रहता है।
   (ख) स्वयं को तुच्छ मानता है।
   (ग) सक्षम होकर भी विनत है।
   (घ) सदा नीची दृष्टि रखता है।
6. लेखक ने सच्ची आत्मा किसे माना है?
7. हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतंत्रता क्यों बनाए रखनी चाहिए?
8. 'आत्म-निर्भरता' शब्द 'आत्म' और 'निर्भरता' शब्दों के योग से बना है। 'आत्म' शब्द से प्रारंभ होने वाले और कोई पाँच शब्द बताइए।

लिखित

1. लेखक ने महाराणा प्रताप और राजा हरिश्चंद्र के उदाहरणों के माध्यम से क्या समझाना चाहा है?
2. किस प्रकार के व्यक्ति आत्म-संस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर पाते?
3. लेखक तुलसी और केशव की तुलना द्वारा क्या सिद्ध करना चाहता है?
4. चित्त-वृत्ति की महत्ता को दर्शाने के लिए लेखक ने क्या-क्या उदाहरण दिए हैं?
5. आशय स्पष्ट कीजिए –
   (क) युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं।

(ख) जो मनुष्य अपना लक्ष्य जितना ही ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।

(ग) मैं राह ढूँढूँगा या राह निकालूँगा ।

भाषा-अध्ययन

निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए –

मर्यादा, स्वतंत्रता, अध्यवसाय, विश्वास, उत्साह ,आत्मा, सार्थकता, संस्कार ।

योग्यता-विस्तार

लेखक ने आत्म-निर्भरता के प्रसंग में कुछ महापुरुषों के उदाहरण दिए हैं। उन महापुरुषों के अतिरिक्त कुछ अन्य महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग पढ़िए, जो आत्म-निर्भरता के महत्त्व को उजागर करते हों।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आत्म-निर्भरता : अपने पर निर्भर रहने की भावना

मर्यादा : सदाचार, प्रतिष्ठा, सीमा

पैरों के बल खड़ा होना : स्वावलंबी बनना

आकांक्षाएँ : इच्छाएँ, कामनाएँ

दूसरों का मुँह ताकना : दूसरों से मदद की उम्मीद या अपेक्षा करना

क्षीण : कमज़ोर, दुर्बल

प्रज्ञा : बुद्धि, विवेक, मति

बेड़ा : नैया, जीवन रूपी नौका

उग्रता : तीव्रता, तेज़ी

उच्चाशय : उच्च विचारों वाला

टरै : टलना

बलवाई : विद्रोही

अनुयायी : अनुसरण करने वाला

आत्म-संस्कार : आत्मा का परिष्कार, आत्म-शुद्धि, अपने आपको सुधारने की क्रिया

अंधभक्त : बिना सोचे-समझे किसी की बात को मानने वाला

सर्वप्रियता : सभी को प्यारा लगने का भाव

समकालीन : एक ही काल के

विलासी : सुख-भोग में लगा रहने वाला व्यक्ति

प्रलोभन : लालच

निवारण : दूर करना

पद दलित करना : दबाना, पैरों तले कुचलना

कुमंत्रणा : बुरी सलाह

चित्त-वृत्ति : मन का भाव, चित्त की अवस्था

अग्रसर : आगे बढ़ना

अज्ञता : अज्ञानता

अध्यवसायी : उद्यमशील, परिश्रमी

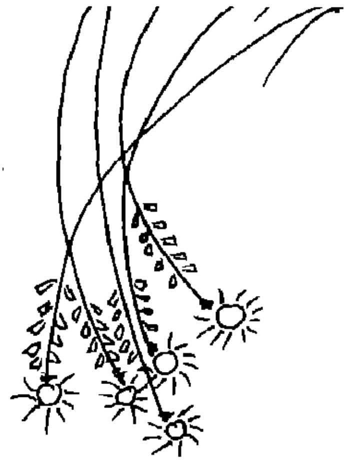
फणीश्वरनाथ 'रेणु'

प्रसिद्ध कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार प्रदेश के पूर्णिया जनपद के गाँव औराही हिंगना में सन 1921 में हुआ था।

'रेणु' को हिंदी का प्रथम आंचलिक कथाकार माना जाता है। यद्यपि वृंदावन लाल वर्मा जैसे कुछ कथाकारों की रचनाओं में भी आंचलिकता के तत्त्व पाए जाते हैं, तथापि आंचलिक शब्दावली एवं वातावरण के चित्रण के कारण 'रेणु' की आंचलिकता औरों से विशिष्ट हो उठती है। गहरी मानवीय संवेदना के कारण 'रेणु' अभावग्रस्त जनता की बेबसी और लाचारी को स्वयं भोगते-से लगते हैं। किंतु इस संवेदनशीलता के साथ यह भरोसा भी जुड़ा है कि आज के त्रस्त मानव में अपनी जीवन-दशा को बदल लेने का सामर्थ्य भी है। 'रेणु' की मृत्यु सन 1977 में हुई।

'रेणु' के उपन्यासों के नाम हैं —**मैला आँचल, परती परिकथा** और **कितने चौराहे**। उनके कहानी संग्रह हैं — **ठुमरी, आदिम रात्रि की महक, अगिनखोर** आदि। उनकी कहानी **तीसरी कसम उर्फ़ मारे गए गुलफ़ाम** पर फ़िल्म भी बन चुकी है। **श्रुत-अश्रुत पूर्व** पुस्तक में उनके ललित निबंध, संस्मरण, रिपोर्ताज जैसी विविध विधाओं की प्रतिनिधि रचनाएँ संकलित हैं। उनके निबंधों में भी कथाकार की शैली की जीवंतता और रोचकता बनी रहती है।

प्रस्तुत कहानी **पंचलाइट** 'रेणु' की बहुचर्चित कहानी है। इस कहानी का आधार गाँव के टोलों की प्रतिस्पर्धा है। एक टोले की पंचायत के पास पेट्रोमैक्स है, दूसरे टोले की पंचायत इससे परेशान है। प्रतिस्पर्धा में आकर चंदा इकट्ठा किया जाता है और दूसरे टोले के पास भी पेट्रोमैक्स आ जाता है। लेकिन दूसरे टोले में पेट्रोमैक्स को जलाना किसी को नहीं आता। दूसरी पंचायत वालों से गैस जलवाना हेठी की बात होगी। तभी अपने टोले से बहिष्कृत युवक की ओर ध्यान जाता है जिसे गैस जलाना आता है। अपने आदमी द्वारा गैस जलवाने के निमित्त उसे क्षमा कर दिया जाता है। इस प्रकार टोले की लाज रह जाती है।



पंचलाइट

पिछले पंद्रह महीने से दंड-जुरमाने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमैक्स खरीदा है इस बार रामनवमी के मेले में। गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं। हरेक जाति की अलग-अलग 'सभाचट्टी' है। सभी पंचायतों में दरी, जाज़िम, सतरंजी और पेट्रोमैक्स है – पेट्रोमैक्स, जिसे गाँववाले पंचलाइट कहते हैं।

पंचलाइट खरीदने के बाद पंचों ने मेले में ही तय किया – दस रुपये जो बच गए हैं इससे पूजा की सामग्री खरीद ली जाए – बिना नेम-टेम के कल-कब्जेवाली चीज़ का पुन्याह नहीं करना चाहिए। अंग्रेज़बहादुर के राज में भी पुल बनाने के पहले बलि दी जाती थी।

मेले से सभी पंच दिन-दहाड़े ही गाँव लौटे; सबसे आगे पंचायत का छड़ीदार पंचलाइट का डिब्बा माथे पर लेकर और उसके पीछे सरदार दीवान और पंच वगैरह। गाँव के बाहर ही ब्राह्मण टोले के फुटंगी झा ने टोक दिया, "कितने में लालटेन खरीदी महतो?"

"......देखते नहीं है, पंचलैट है। बामनटोली के लोग ऐसे ही ताब करते हैं। अपने घर की ढिबरी को भी बिजली-बत्ती कहेंगे और दूसरों के पंचलैट को लालटेन !"

टोले-भर के लोग जमा हो गए। औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे सभी काम-काज छोड़कर दौड़े आए, "चल रे चल अपना पंचलैट आया है, पंचलैट !"

छड़ीदार अगनू महतो रह-रहकर लोगों को चेतावनी देने लगा, "हाँ दूर से, ज़रा दूर से ! छू-छा मत करो, ठेस न लगे !"

सरदार ने अपनी स्त्री से कहा, "साँझ को पूजा होगी, जल्दी से नहा-धोकर चौका-पीढ़ी लगाओ।"

टोले की कीर्तन मंडली के मूलगैन ने अपने भगतिया पच्छकों को समझाकर कहा, "देखो, आज पंचलैट की रोशनी में कीर्तन होगा। बेताले लोगों से पहले ही कह देता हूँ, आज यदि आखर धरने में टेढ़-बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकाट !"

औरतों की मंडली में गुलरी काकी गोसाईं का गीत गुनगुनाने लगी। छोटे-छोटे बच्चों ने उत्साह के मारे बेवजह शोरगुल मचाना शुरू किया।

सूरज डूबने के एक घंटा पहले से ही टोले-भर के लोग सरदार के दरवाज़े पर आकर जमा हो गए – पंचलैट, पंचलैट !

पंचलैट के सिवा और कोई गप नहीं, कोई दूसरी बात नहीं। सरदार ने गुड़गुड़ी पीते हुए कहा, "दुकानदार ने पहले सुनाया, पूरे पाँच कोड़ी पाँच रुपया। मैंने कहा कि दुकानदार साहेब, यह मत समझिए कि हम लोग एकदम देहाती हैं। बहुत-बहुत पंचलैट देखे हैं। इसके बाद दुकानदार मेरा मुँह देखने लगा। बोला, लगता है आप जाति के सरदार हैं। ठीक है, जब आप सरदार होकर खुद पंचलैट खरीदने आए हैं तो जाइए, पूरे पाँच कोड़ी में आपको दे रहे हैं।"

दीवानजी ने कहा, "अलबत्ता चेहरा परखने वाला दुकानदार है। पंचलैट का बक्सा दुकान का नौकर देना नहीं चाहता था। मैंने कहा, देखिए दुकानदार साहेब, बिना बक्सा पंचलैट कैसे ले जाएँगे। दुकानदार ने नौकर को डाँटते हुए कहा, क्यों रे ! दीवानजी की आँख के आगे 'धूरखेल' करता है, दे दे बक्सा !"

टोले के लोगों ने अपने सरदार और दीवान को श्रद्धा-भरी निगाहों से देखा। छड़ीदार ने औरतों की मंडली में सुनाया, "रास्ते में सन्न-सन्न बोलता था पंचलैट!"

लेकिन ......ऐन मौके पर 'लेकिन' लग गया ! रूदल साह बनिए की दूकान से तीन बोतल किरासन तेल आया और सवाल पैदा हुआ, पंचलैट को जलाएगा कौन !

यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आई थी। पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा। खरीदने के बाद भी। अब, पूजा की सामग्री चौके पर सजी हुई है, कीर्तनिया लोग ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं और पंचलैट पड़ा हुआ है।

गाँववालों ने आज तक कोई ऐसी चीज़ नहीं खरीदी, जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। कहावत है, भाई रे, गाय लूँ? तो दूहे कौन? .....लो मज़ा ! अब इस कल-कब्ज़ेवाली चीज़ को कौन बाले !

यह बात नहीं कि गाँव-भर में कोई पंचलैट बालने वाला नहीं, हरेक पंचायत में पंचलैट है, उसके जलाने वाले जानकार हैं। लेकिन सवाल है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ-लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। ज़िंदगी-भर ताना कौन सहे ! बात-बात में दूसरे टोले के लोग कूट करेंगे– तुम लोगों का पंचलैट पहली बार दूसरे के हाथ से ...... ! न, न ! पंचायत की इज्ज़त का सवाल है। दूसरे टोले के लोगों से मत कहिए।

चारों ओर उदासी छा गई। अँधेरा बढ़ने लगा। किसी ने अपने घर में आज ढिबरी भी नहीं जलाई थी। ......आज पंचलैट के सामने ढिबरी कौन बालता है!

सब किए-कराए पर पानी फिर रहा था। सरदार, दीवान और छड़ीदार के मुँह में बोली नहीं। पंचों के चेहरे उतर गए थे। किसी ने दबी आवाज़ में कहा, "कल-कब्ज़ेवाली चीज़ का नखरा बहुत बड़ा होता है।"

एक नौजवान ने आकर सूचना दी, "राजपूत टोली के लोग हँसते-हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट के सामने पाँच बार उठो-बैठो, तुरंत जलने लगेगा।"

पंचों ने सुनकर मन-ही-मन कहा, "भगवान ने हँसने का मौका दिया है, हँसेंगे नहीं?" एक बूढ़े ने आकर खबर दी, "रूदल साह बनिया भारी बतंगड़ आदमी है। कह रहा है, पंचलैट का पंप ज़रा होशियारी से देना!"

गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुँह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले? वह जानती है कि गोधन पंचलैट बालना जानता है। लेकिन, गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बंद है। पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रुपया जुरमाना! न देने पर हुक्का-पानी बंद। .....आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाए! मुनरी उसका नाम कैसे ले? और उधर जाति का पानी उतर रहा है।

मुनरी ने चालाकी से अपनी सहेली कनेली के कान में बात डाल दी– "कनेली! ....चिंगो, चिध चिन .....!" कनेली मुसकराकर रह गई– "गोधन तो बंद है!" मुनरी बोली, "तू कह तो सरदार से!"

"गोधन जानता है पंचलैट बालना!" कनेली बोली।

"कौन, गोधना? जानता है बालना! लेकिन ...।"

सरदार ने दीवान को देखा और दीवान ने पंचों की ओर, पंचों ने एकमत होकर हुक्का-पानी बंद किया है। सलीमा का गीत गाकर आँख का इशारा मारने वाले गोधन से गाँव-भर के लोग नाराज़ थे। सरादार ने कहा, "जाति की बंदिश क्या, जबकि जाति की इज्ज़त ही पानी में बही जा रही है। क्यों जी दीवान?"

दीवान ने कहा, "ठीक है।"

पंचों ने भी एक स्वर में कहा, "ठीक है गोधन को खोल दिया जाए।"

सरदार ने छड़ीदार को भेजा। छड़ीदार वापस आकर बोला, "गोधन आने को राज़ी नहीं हो रहा है। कहता है, पंचों की क्या परतीत है? कोई कल-कब्ज़ा बिगड़ गया तो मुझे दंड-जुरमाना भरना पड़ेगा।"

छड़ीदार ने रोनी सूरत बनाकर कहा, "किसी तरह गोधन को राज़ी करवाइए, नहीं तो कल से गाँव में मुँह दिखाना मुश्किल हो जाएगा।"

गुलरी काकी बोली, "ज़रा मैं देखूँ कहके !"

गुलरी काकी उठकर गोधन के झोंपड़े की ओर गई और गोधन को मना लाई। सभी के चेहरे पर नई आशा की रोशनी चमकी। गोधन चुपचाप पंचलैट में तेल भरने लगा। सरदार की स्त्री ने पूजा की सामग्री के पास चक्कर काटती हुई बिल्ली को भगाया। कीर्तन-मंडली का मूलगैन मुरछल के बालों को सँवारने लगा। गोधन ने पूछा, "इसपिरिट कहाँ है? बिना इसपिरिट के कैसे जलेगा?"

....लो मज़ा ! अब यह दूसरा बखेड़ा खड़ा हुआ ! सभी ने मन-ही-मन सरदार, दीवान और पंचों की बुद्धि पर अविश्वास प्रकट किया — बिना बूझे-समझे काम करते हैं ये लोग ! उपस्थित जन-समूह में फिर मायूसी छा गई। लेकिन, गोधन बड़ा होशियार लड़का है। बिना इसपिरिट के ही पंचलैट जलाएगा — "थोड़ा गरी का तेल ला दो !" मुनरी दौड़कर गई और एक मलसी गरी का तेल ले आई। गोधन पंचलैट में पंप देने लगा।

पंचलैट की रेशमी थैली में धीरे-धीरे रोशनी आने लगी। गोधन कभी मुँह से फूँकता, कभी पंचलैट की चाबी घुमाता। थोड़ी देर के बाद पंचलैट से सनसनाहट की आवाज़ निकलने लगी और रोशनी बढ़ती गई, लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है !

अंत में पंचलाइट की रोशनी से सारी टोली जगमगा उठी तो कीर्तनिया लोगों ने एक स्वर में, महावीर स्वामी की जय-ध्वनि के साथ कीर्तन शुरू कर दिया। पंचलैट की रोशनी में सभी के मुसकराते हुए चेहरे स्पष्ट हो गए। गोधन ने सबका दिल जीत लिया।

सरदार ने गोधन को बहुत प्यार से बुलाकर कहा, "तुमने जाति की इज़्ज़त रखी है। तुम्हारा सात खून माफ़। खूब गाओ सलीमा का गाना !"

गुलरी काकी बोली, "आज रात मेरे घर में खाना गोधन !"

कीर्तनिया लोगों ने एक कीर्तन समाप्त कर जय-ध्वनि की – 'हो । जय हो...' पंचलैट के प्रकाश में पेड़-पौधों का पत्ता-पत्ता पुलकित हो रहा था।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. गाँव वाले पैट्रोमैक्स को पंचलाइट क्यों कहते थे?
2. पंचलाइट खरीदने के बाद पंचों ने मेले में क्या तय किया?
3. पंचलाइट के आने पर टोले वालों के इतने उत्साहित होने का क्या कारण था?
4. पंचलाइट के जलाने को लेकर टोले वाले इतने परेशान क्यों हो उठे?
5. पंचायत के लोग गोधन को पंचायत में लेने के लिए क्यों तैयार हो गए?
6. प्रस्तुत कहानी का मुख्य विषय क्या है? सही विकल्प छाँटिए –
   (क) किसी नई वस्तु के आने पर गाँव वालों का उत्साह
   (ख) बिना सोचे-समझे की गई खरीद का दुष्परिणाम
   (ग) गाँव के विभिन्न टोलों की एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा
   (घ) समुदाय के सम्मान की रक्षा के समक्ष व्यक्तिगत दोष क्षम्य
7. निम्नलिखित आंचलिक शब्दों के मानक हिंदी रूप बताइए –
   बालना, मूलगैन, भगतिया, कीर्तनिया, परतीत ।

लिखित

1. टोले वालों ने अपने सरदार और दीवान को श्रद्धाभरी निगाहों से क्यों देखा?
2. पंचायत के लोग गोधन से किन-किन कारणों से नाराज़ थे?

3. प्रस्तुत पाठ हमारे गाँवों के किन-किन रीति-रिवाजों और मान्यताओं की ओर संकेत करता है?
4. गोधन द्वारा पंचलाइट को पंप करने से लेकर पंचलाइट के जलने तक लोगों के मन में उठे भावों का अपनी कल्पना के आधार पर वर्णन कीजिए ।
5. इस कहानी के उन अंशों को छाँटिए जिनसे गाँव वालों का भोलापन, निश्छलता और सादगी प्रकट होती है।
6. इस कहानी का कोई अन्य शीर्षक सुझाइए और उसकी उपयुक्तता सिद्ध कीजिए।

भाषा-अध्ययन

इस पाठ में 'पानी' को लेकर कुछ मुहावरे आए हैं जैसे पानी फिरना । इस प्रकार के कुछ अन्य मुहावरे छाँटकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

योग्यता-विस्तार

ग्राम-जीवन से संबंधित कुछ अन्य कहानियाँ पढ़िए । उनमें से जो कहानी अच्छी लगे उसे कक्षा में सुनाइए ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सभाचट्टी : सभा स्थल, चबूतरा
पंचलाइट : पेट्रोमैक्स, मिट्टी के तेल या गैस से जलने वाली लालटेन
जाज़िम : बड़ी चादर
सतरंजी : शतरंजी, रंग-बिरंगे सूत से बनी दरी या बिछावन
नेम-टेम : नियम-मुहूर्त, सायत
पुन्याह : शुभारंभ
ताब : घमंड, अभिमान
ढिबरी : कुप्पी, सूत की बत्ती लगी टीन की डिबिया जो मिट्टी का तेल डालकर जलाई जाती है
मूलगैन : मुख्य गायक
पच्छकों : पक्ष के लोगों, समूह, टोली

आखर धरना : बोल बोलना, स्वर उठाना
टेढ़-बेढ़ : गलत बोलना, ठीक स्वर न उठाना
बैकाट : बायकॉट, बहिष्कार
बेवजह : अकारण
गुड़गुड़ी : छोटा हुक्का
पाँच कोड़ी : सौ (एक कोड़ी बीस की होती है)
धूरखेल करना : धूर्तता करना, चालाकी करना
किरासन : कैरोसिन, मिट्‌टी का तेल
बालने वाला : जलाने वाला
ताना : व्यंग्य
कूट करना : व्यंग्य करना, ताने मारना
भारी बतंगड़ : बड़ा बातूनी, बातें बनाने वाला
पानी उतरना : बेइज्जती होना, मान-सम्मान नष्ट होना
सलीमा : सिनेमा
परतीत : विश्वास
मुरछल : चँवर
इस्पिरिट : स्प्रिट, ज्वलनशील तरल पदार्थ
मलसी : काठ की छोटी कटोरी
सात खून माफ़ करना : सब अपराध क्षमा करना

मोहनदास करमचंद गांधी

मोहनदास करमचंद गांधी को संसार महात्मा गांधी के नाम से जानता है। हर भारतवासी उनके नाम से परिचित है। उनका जन्म गुजरात के पोरबंदर नगर में 1869 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा भारत में पाने के बाद उन्होंने इंग्लैंड से बैरिस्टरी की परीक्षा पास की। भारत लौटकर वे वकालत करने लगे ।

पोरबंदर के धनी व्यवसायी दादा अब्दुल्ला शेठ के कुछ मुकदमे दक्षिण अफ्रीका में चल रहे थे। उन मुकदमों की पैरवी करने के लिए अब्दुल्ला शेठ गांधी जी को मई 1893 में अफ्रीका ले गए।

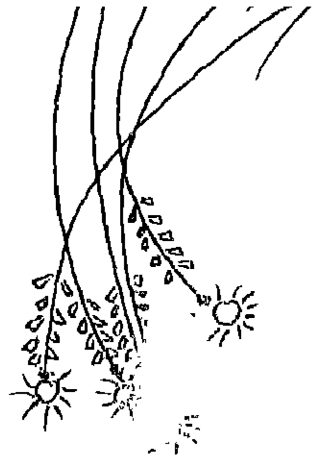
वहाँ भारतीयों की दुर्दशा देखकर गांधी जी ने उनके उद्धार के लिए आंदोलन चलाया । वह आंदोलन बिलकुल नए ढंग का था। इस आंदोलन का नाम उन्होंने 'सत्याग्रह' रखा । अफ्रीका में भारतीयों को सत्याग्रह का मंत्र सिखाकर गांधी भारत आए । यहाँ भी अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह का पाठ भारतीयों को सिखाया । फलस्वरूप हमें 15 अगस्त 1947 को आज़ादी मिली।

महात्मा गांधी की मातृभाषा गुजराती थी। लेकिन उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया और अपने अधिकांश भाषण हिंदी में ही दिए। सन 1918 के हिंदी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के वे सभापति बने । उन्होंने दक्षिण भारत में हिंदी-प्रचार की बृहद् योजना बनाई । वे हमेशा कहते थे, "स्वदेशाभिमान को स्थिर रखने के लिए हमें हिंदी सीखनी चाहिए।"

महात्मा गांधी राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद आदि महान विभूतियों की परंपरा में थे। सन 1948 ई. में एक धर्मांध ने गोली मार कर उनकी हत्या कर दी।

गांधी जी के विपुल साहित्य को उनकी मृत्यु के बाद भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने **संपूर्ण गांधी वाङ्मय** नाम से छापा है। इसके अनेक भाग अब तक छप चुके हैं।

प्रस्तुत पाठ **मेरा धर्म और मेरा ईश्वर** में गांधी जी ने ईश्वर एवं धर्म संबंधी अपने विचार व्यक्त किए हैं। गांधी जी की दृष्टि में अदृश्य किंतु अनुभूत जीवनदायी शक्ति ही ईश्वर है जो सर्वथा कल्याणकारी है। गांधी जी सभी धर्मों को उसी शक्ति, उसी परमसत्ता तक पहुँचने के अलग-अलग मार्ग मानकर 'सर्वधर्मसमभाव' पर बल देते हैं।



मेरा धर्म और मेरा ईश्वर

विविध धर्म एक ही जगह पहुँचाने वाले अलग-अलग रास्ते हैं। एक ही जगह पहुँचने के लिए हम अलग-अलग रास्तों से चलें तो इसमें दुःख का कोई कारण नहीं है। सच पूछो तो जितने मनुष्य हैं उतने ही धर्म भी हैं।

हमें सभी धर्मों के प्रति समभाव रखना चाहिए । इसमें अपने धर्म के प्रति उदासीनता आती हो, ऐसी बात नहीं, बल्कि अपने धर्म पर जो प्रेम है उसकी अंधता मिटती है। इस तरह वह प्रेम ज्ञानमय और ज़्यादा सात्त्विक तथा निर्मल बनता है।

मैं इस विश्वास से सहमत नहीं हूँ कि पृथ्वी पर एक धर्म हो सकता है या होगा। इसलिए मैं विविध धर्मों में पाया जानेवाला तत्त्व खोजने की और इस बात को पैदा करने की कि विविध धर्मावलंबी एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता का भाव रखें, कोशिश कर रहा हूँ।

मेरी सम्मति है कि संसार के धर्मग्रंथों को सहानुभूतिपूर्वक पढ़ना प्रत्येक सभ्य पुरुष और स्त्री का कर्तव्य है। अगर हमें दूसरे धर्मों का वैसा आदर करना है जैसा हम उनसे अपने

धर्म का कराना चाहते हैं तो संसार के सभी धर्मों का आदरपूर्वक अध्ययन करना हमारा एक पवित्र कर्म हो जाता है। दूसरे धर्मों के आदरपूर्ण अध्ययन से हिंदू धर्मग्रंथों के प्रति मेरी श्रद्धा कम नहीं हुई । सच तो यह है कि हिंदू शास्त्रों की मेरी समझ पर उनकी गहरी छाप पड़ी है। उन्होंने मेरी जीवन-दृष्टि को विशाल बनाया है।

सत्य के अनेक रूप होते हैं, इस सिद्धांत को मैं बहुत पसंद करता हूँ। इसी सिद्धांत ने मुझे एक मुसलमान को उसके अपने दृष्टकोण से और ईसाई को उसके स्वयं के दृष्टिकोण से समझना सिखाया है। जिन अंधों ने हाथी का अलग-अलग तरह से वर्णन किया वे सब अपनी दृष्टि से ठीक थे। एक दूसरे की दृष्टि से सब गलत थे, और जो आदमी हाथी को जानता था उसकी दृष्टि से सही भी थे और गलत भी थे।

जब तक अलग-अलग धर्म मौजूद हैं तब तक प्रत्येक धर्म को किसी विशेष बाह्य चिह्न की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन जब बाह्य चिह्न केवल आडंबर बन जाते हैं, अथवा अपने धर्म को दूसरे धर्मों से अलग बताने के काम आते हैं तब वे त्याज्य हो जाते हैं।

धर्मों के भ्रातृ-मंडल का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह एक हिंदू को अधिक अच्छा हिंदू, एक मुसलमान को अधिक अच्छा मुसलमान और एक ईसाई को अधिक अच्छा ईसाई बनाने में मदद करे । दूसरों के लिए हमारी प्रार्थना यह नहीं होनी चाहिए — ईश्वर, तू उन्हें वही प्रकाश दे जो तूने मुझे दिया है, बल्कि यह होनी चाहिए — तू उन्हें वह सारा प्रकाश दे जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है।

एक ऐसी रहस्यमयी शक्ति है जो सर्वत्र व्याप्त है। मैं उसे अनुभव करता हूँ, यद्यपि देखता नहीं हूँ। यह अदृश्य शक्ति अपना अनुभव तो कराती है, परंतु उसका कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता क्योंकि जिन वस्तुओं का मुझे अपनी इंद्रियों द्वारा ज्ञान होता है, उन सबसे वह बहुत भिन्न है। वह इंद्रियों की पहुँच के बाहर है।

मैं यह ज़रूर अनुभव करता हूँ कि जब मेरे चारों ओर हर चीज़ हमेशा बदलती रहती है, नष्ट हो रही है, तब इन सारे परिवर्तनों के पीछे कोई चेतन शक्ति ऐसी ज़रूर है जो बदलती नहीं है, जो सबको धारण किए हुए है, जो सृजन करती है, संहार करती है और फिर नया सृजन करती है। यह जीवनदायी शक्ति या सत्ता ही ईश्वर है, और चूँकि केवल इंद्रियों द्वारा दिखाई देनेवाली कोई भी चीज़ न तो स्थायी है और न हो सकती है, इसलिए एकमात्र ईश्वर का ही अंतिम अस्तित्व है।

यह शक्ति कल्याणकारी है या अकल्याणकारी? मैं देखता हूँ कि यह सर्वथा कल्याणकारी है, क्योंकि मुझे दिखाई देता है कि मृत्यु के बीच जीवन कायम रहता है, असत्य के बीच सत्य टिका रहता है और अंधकार के बीच प्रकाश स्थिर रहता है। इससे मुझे पता चलता है कि ईश्वर जीवन है, सत्य है और प्रकाश है। वही प्रेम है। वही परम मंगल है।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. एक ही जगह पहुँचने के लिए अलग-अलग रास्ते चुनना दुख की बात क्यों नहीं है?
2. हमें सभी धर्मों के प्रति समभाव क्यों रखना चाहिए?
3. 'सभी धर्मग्रंथों को सहानुभूतिपूर्वक पढ़ना' में 'सहानुभूतिपूर्वक' का आशय है –
   (क) आदर की भावना से
   (ख) उस धर्मानुयायी जैसी भावना से
   (ग) उदासीनता की भावना से
   (घ) सहयोग की भावना से
4. गांधी जी हम सबको सभी धर्मग्रंथों को पढ़ने की सलाह क्यों देते हैं?
5. गांधी जी ने अंधों और हाथी के उदाहरण द्वारा क्या समझाना चाहा है?
6. धर्म के बाह्य चिह्नों को त्यागने की आवश्यकता कब पड़ती है?

लिखित

1. प्रेम से अंधता मिट जाने का क्या परिणाम होता है?
2. गांधी जी धर्म के संबंध में किन बातों का प्रयास कर रहे हैं?
3. जो आदमी हाथी को जानता था उसकी दृष्टि से सभी अंधे सही भी थे और गलत भी थे — कैसे?
4. दूसरों के लिए हमारी प्रार्थना क्या होनी चाहिए और कैसे?
5. गांधी जी ने ईश्वरीय शक्ति को सर्वदा कल्याणकारी क्यों कहा है?
6. गांधी जी यह कैसे सिद्ध करते हैं कि ईश्वरीय शक्ति का अस्तित्व है?

भाषा-अध्ययन

सभी धर्मों का आदरपूर्वक अध्ययन करना हमारा **एक पवित्र कर्म** हो जाता है।
उपर्युक्त वाक्य में मोटे पदबंध में 'कर्म' शब्द संज्ञा है और 'पवित्र' शब्द 'कर्म' का विशेषण। 'एक' शब्द 'पवित्र' की विशेषता बता रहा है। विशेषण की विशेषता बताने वाला शब्द 'प्रविशेषण ' कहलाता है। इस पाठ में से ऐसे अन्य पदबंध छाँटिए और प्रविशेषणों को रेखांकित कीजिए।

योग्यता-विस्तार

1. 'सभी धर्म एक ही ईश्वर तक पहुँचने के अलग-अलग मार्ग हैं।' कक्षा में इस विषय पर चर्चा कीजिए ।
2. विभिन्न धर्मों के सूक्ति वाक्यों को चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए और उनकी समानताओं पर चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रेम की अंधता : अत्यधिक प्रेम के कारण उत्पन्न संकीर्णता अथवा मोह

सहिष्णुता : सहनशीलता

आडंबर : दिखावा

त्याज्य : छोड़ने योग्य

अंधों ने हाथी देखा : कई अंधों द्वारा हाथी को अलग-अलग ढंग से देखने की कहानी इस प्रकार है कि कुछ अंधों ने हाथी को छूकर देखा। एक ने उसके पैरों को छुआ और कहा कि यह तो खंभा है। दूसरे ने सूँड़ को छुआ और कहा कि यह तो रस्सी है। तीसरे ने उसके धड़ को छुआ और कहा कि यह तो दीवार है और चौथे ने कान को छूकर उसे सूप बताया। इसी प्रकार अन्य अंधों ने उसके अलग-अलग अंगों को छूकर उसे अलग-अलग नाम दिए।

विद्यानिवास मिश्र

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं भाषाविद् विद्यानिवास मिश्र का जन्म गोरखपुर ज़िले के पकड़डीहा ग्राम में सन 1926 में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मूलतः गाँव में ही हुई । उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद गए जहाँ से संस्कृत साहित्य में एम.ए. किया। तत्पश्चात गोरखपुर विश्वविद्यालय में शोध कार्य किया और पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

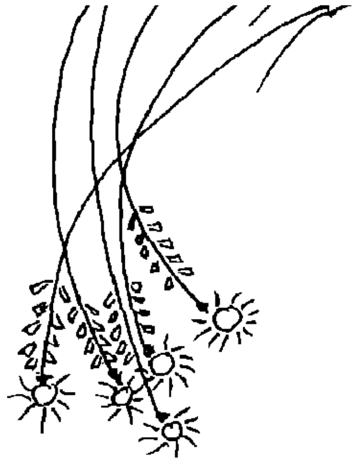
विद्यानिवास जी ने कुछ समय के लिए उत्तर प्रदेश और विंध्य प्रदेश के सूचना विभागों में काम किया । बाद में अध्यापन करने लगे । शिक्षा के क्षेत्र में काम करते हुए आपने कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा में निदेशक का पद तथा काशी विद्यापीठ और संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में कुलपति के पदों को सुशोभित किया। बीच में दो वर्षों के लिए अमरीका के बर्कले विश्वविद्यालय में भी अध्यापन किया। आजकल स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

मिश्र जी का रचना-जगत बड़ा व्यापक और विशद है। उनकी भाषा शैली विविधतापूर्ण है, जिसमें एक ओर तो संस्कृत बहुल शब्दावली की छटा देखने को मिलती है तो दूसरी ओर लोकभाषा की तरलता और ताज़गी। विद्यानिवास जी को निसर्गतः कवि-हृदय मिला है।

उनकी प्रमुख गद्य की पुस्तकों के नाम हैं –

छितवन की छाँह, तुम चंदन हम पानी, मैंने सिल पहुँचाई, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है, संचारिणी, कौन तू फुलवा बीनन हारी, हिंदी की शब्द संपदा, हिंदू **धर्म, जीवन में सनातन की खोज, रीति विज्ञान, भारतीय भाषा दर्शन की पीठिका** आदि। इनके कविता संग्रह का नाम **पानी की पुकार** है।

मेरा गाँव मेरा घर ललित शैली में लिखा गया निबंध है। भारत के विभिन्न भागों में नौकरी करते हुए लेखक के सम्मुख बार-बार उसके स्थायी पते का प्रश्न उठा है। यह प्रश्न उसको बड़ी असमंजस की स्थिति में डाल देता है, क्योंकि वह किस आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दे । किस गाँव, किस शहर का अपने स्थायी पते के रूप में उल्लेख करे जबकि संपूर्ण भारत ही उसका घर है। लेकिन साथ ही वह यह भी नहीं भूल पाता कि वह हिंदुस्तान के एक गाँव की मिट्टी से जुड़ा है, जिसकी मोहक-मादक स्मृतियाँ उसमें ऐसी रच-बस गई हैं कि वह कहीं भी रहने पर अपने आपको बेघर नहीं पाता है।



मेरा गाँव मेरा घर

जब कोई पूछता है, आपका शुभस्थान? तो मैं बड़े असमंजस में पड़ जाता हूँ। कई बार कागज़ों पर भरना पड़ता है, स्थायी पता क्या है, वर्तमान पता क्या है, तब भी कुछ देर के लिए सोचना पड़ता है। स्थायी पता क्या लिखूँ — क्या कोई स्थायी पता होता भी है? सकूनत या निवास जब राजनीतिक रूप लेकर सामने आता है, तो और भी गहरा अंतद्‌र्वंद्‌व होता है। मैं रीवाँ सरकारी नौकरी में 1952 में गया तो शुरू-शुरू में कुछ लोगों ने यही उड़ाया कि उत्तर प्रदेश का आ गया, विंध्य प्रदेश को उत्तर प्रदेश में मिला देगा । दो-ढाई वर्षों से आगरा में हूँ, तो कुछ लोगों ने जो स्वयं शायद आगरा में जन्मे नहीं और बरसों से आगरा रहकर आगरा जनपद की ब्रज-संस्कृति से कोई स्पर्श जिन्होंने नहीं रखा, नारा बुलंद किया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश का भोजपुरी क्यों यहाँ आ गया!

ऐसी स्थितियाँ मन को बहुत व्यथित करती हैं। कैसे कहूँ कि उस गाँव का नहीं हूँ, जहाँ जन्मा, उन शहरों का नहीं हूँ जहाँ मैंने अध्ययन किया, उन जगहों का नहीं हूँ, जिन्होंने मुझे ठौर-ठिकाना दिया, और उस व्यापक देश का नहीं हूँ, जिसने हर विदेश-यात्रा के पूर्व

रूमाल में गाँठ लगाई, जिसने हर विदेश-यात्रा को स्वदेश की पहचान के लिए एक नई कसौटी बनाया, और जिसका होकर मैं अपने को बराबर अस्तित्ववान पाता रहा? कैसे कहूँ कि ब्रज का नहीं हूँ, वृंदावन-बिहारी के निकुंजों का नहीं हूँ? कैसे कहूँ कि बनारस के बनारसी रंग का नहीं हूँ? कैसे कहूँ कि राप्ती, गंगा, जमुना, गोमती, तमसा, नर्मदा का नहीं हूँ? कैसे कहूँ कि उन वनराजियों का नहीं हूँ, जो बचपन में गाँव से दो कोस दूर से शुरू होती थीं, और कोसों चली जाती थीं, जो विंध्यप्रदेश की यात्राओं को सुरभित और मधुच्छायित करती थीं और जिन्होंने बाहर की यात्राओं में नीरव प्राण-संचार किया है? किसी एक का मोह छोड़ पाना मेरे लिए संभव नहीं, तो फिर इन निर्मम प्रश्नों का उत्तर कैसे दूँ?

सुविधा के लिए जहाँ जन्म हुआ, उसे जन्म-स्थान कह सकता हूँ। जहाँ मेरा तो नहीं, पर मेरे भाइयों का अपना घर बना हुआ है, उसे स्थायी पता कह सकता हूँ। और जहाँ मैं इस समय रहता हूँ, उसे वर्तमान पता लिख सकता हूँ। पर मन कहता है कि ये सभी उत्तर, सभी समाधान आधे सही हैं, पूरे सही नहीं। पूरा सही तो सब मिलकर होता है और वह कहीं किसी फ़ॉर्म या रजिस्टर में दर्ज नहीं हो सकता ।

कहीं भी रहूँ, यह नहीं छूटता कि मैं हिंदुस्तान के एक गाँव का हूँ, ऐसे गाँव का जो शहर से बहुत दूर है। वहाँ तक आज भी कोई सड़क, कोई रेल नहीं पहुँची। जो एक नदी की दो धाराओं के बीच वाले क्षेत्र में पड़ता है, जहाँ बाढ़ आती है, जहाँ सूखा पड़ता है, जहाँ नहरें नहीं, नलकूप नहीं, जहाँ मिट्टी में पंचायत राज की ज़हरीली जातिवादी राजनीति अभी घुल नहीं पाई है।

यह नहीं छूटता कि बिना कोई परीक्षा पास किए, या किसी स्कूल में गए मेरे बाबा ने बचपन में रामायण, महाभारत और हितोपदेश-पंचतंत्र की पूरी कहानी सुना दी थी । उस निखालिस भदेस भोजपुरी इलाके के प्राइमरी स्कूल के अध्यापक ने मुझे दर्जा चार तक ही ऐसी हिंदी सिखा दी थी कि कभी भी उसके बाद व्याकरण और वर्तनी की भूल हिंदी लिखने-बोलने में नहीं हुई और यादवचंद्र चक्रवर्ती का अंकगणित ऐसा मश्क करा दिया था कि

अंग्रेज़ी स्कूल में दर्जा सात में भरती हुआ तो गणित के मास्टर पीठ पर इस बात के लिए स्नेहपूर्वक एक धौल देते थे कि क्या तू पेट में गणित पढ़ता रहा !

मैं कच्ची मिट्टी के घर में पैदा हुआ। उसके आँगन के पच्छिम में एक बड़ा दालान था, उसी में गरमी की दुपहरी अपनी दीदी के साथ खेलते बीतती थी। एक दिन अधपकी इमली खा रहा था, कोई आता दिखा, उसका चिया (बीज) भी जल्दी में निगल गया। इमली कमबख़्त होती ही ऐसी है कि उसके लिए जीभ ललच जाती है, पर इमली होती है प्रतिषिद्ध! अब दीदी मुझसे तीन वर्ष बड़ी थी, उसे चिंता हुई कि उसका बीज पेट में जमेगा, अंकुर बड़ा होगा, पेड़ बड़ा होगा, तब चोरी पकड़ी जाएगी। किया क्या जाए? कई दिनों तक नाना प्रकार के उपाय सोचे गए, पर हम लोगों ने इस गोपनीय रहस्य को किसी को बताया नहीं। एकाध महीने बाद विश्वास हो गया कि बीज कच्चा था, जमेगा नहीं, तो हम दोनों को बड़ी निश्चिंतता हुई। समय बीतता गया, मेरे सामने ही नया पक्का मकान बना, लकड़ी के खंभों और दरवाज़े की नक्काशी घंटों देखता रहता था। बढ़ई बताता रहता था – यह बेल है, यह कमल है, यह चिरई-चिरवा है – मैं गट्-गट् पीता रहता था।

मेरे घर के पच्छिम में कुम्हार का घर था। मिट्टी के घड़े, सकोरे, हाथी, घोड़े गढ़े जाते थे। बड़ा कुतूहल होता था। चक्का नाचता है, गीली मिट्टी का लोंदा हाथ का स्पर्श पाकर कैसे-कैसे आकार लेता जा रहा है! पूर्व की तरफ़ शिवधनी अहीर का घर था। नागपंचमी का दिन, मैं साढ़े चार वर्ष का था। शिवधनी बहू पंचरंगी साड़ी पहनकर पंचइया पूजने चली। शिवधनी ने मुझसे मज़ाक किया – भाई साहब, इससे ब्याह करोगे? रंगों के जादू से प्रभावित होकर कह दिया – हाँ, इससे विवाह करूँगा। और अपने बाबा से भी कह दिया कि मैं तो इस पंचरंगी चुनरी वाली से ब्याह करूँगा। बाबा ने कहा – दुर पगले, तुम्हारे लिए नई दुलहिन लाएँगे। पर मेरी ज़िद देखकर शिवधनी ने कहा कि भाई, अब तुम्हीं इसे रखो। पर यह ब्याह बड़ा महँगा पड़ा। मैं बड़ा हुआ, पढ़ने जाता था तो अपने दरवाज़े पर अपने बच्चे से कहती कि जाओ अपने दादा से कपड़े लत्ते का खर्च लो। मैं शर्म से गड़ जाता। हाईस्कूल तक सारे

रिश्तेदार लोगों ने मेरा अच्छा मज़ाक बना रखा था। मैं दौड़कर दरवाज़े से निकल जाना चाहता था कि कहीं मुठभेड़ न हो जाए, पर उस गोपी ने (नाम आज तक नहीं जानता, विवाहित बहू गाँव में किसी की दुलहिन या माँ के ही रूप में जानी जाती है) मेरा विवाह होने पर भी अपना हक कायम रखा। मेरी पत्नी को दही की दहेंड़ी भेंट करने आई, तो बोली कि आपकी मैं जेठ सौत हूँ। तब तक उस शर्मीले रिश्ते पर हँसी आने लगी थी, क्योंकि तब तक वह काफ़ी प्रौढ़ा हो चली थी। मुझसे चार-पाँच साल छोटे तो उसके बच्चे थे जो किशोरावस्था में प्रवेश कर रहे थे। पर एक लंबे अरसे तक मेरी पहली भूल मुझे नाहक परेशान किए रही।

उत्तर की ओर एक और अहीर का घर था। बिरजू अहीर गाँव में कम रहते थे, कुछ जादुई कारबार था उनका। घर सँभालती थी उनकी पत्नी, जिन्हें पहले हम दिलराज की माई के रूप में जानते थे। फिर दिलराज रंगून गया, वहीं उसकी मृत्यु हो गई, तो लखराज की माई के नाम से उन्हें जाना जाने लगा। बाद में लखराज की भी मृत्यु हो गई और उनको बाबूराम की अइया (दादी) नाम से पुकारा जाने लगा। शिवधनी बहू के रिश्ते में तो बस केवल चिंता ही चिंता थी, पर लखराज की माई मेरी माँ की सखी थी और जब तक जिईं तब तक उन्हीं की जमाई दही मैंने गाँव में खाई। लखराज की माँ, जैसे भी होता, मेरे लिए बिना छिनी सजाव दही कटोरे में नहीं, दहेंड़ी में लाती। पता नहीं किस टेलीपैथी से उन्हें संदेश प्राप्त हो जाता, छुट्टियों में घर जाते ही वे दही लेकर हाज़िर हो जातीं। मेरे घर उत्सवों में वे ही दही जमातीं।

आज घर की बात सोचता हूँ तो वह इमली का बीज, लगता है, जिंदगी के लिए अम्लान लगाव के रूप में एक छतनार पेड़ बन गया है। इसकी पत्तियाँ जब नई-नई आती हैं तो लगता है, लगाव हरा हो गया है और पत्तियाँ तो मुँह में ललक का पानी भर देती हैं।

कुम्हार का चाक, बढ़ई की रुखानी और दही की दहेंड़ी – ये पीछे छूटकर भी पीछे नहीं छूटे। कुछ-न-कुछ नया आकार ग्रहण करने के लिए ज़िंदगी कितनी बार रौंदी गई, कितनी बार चाक पर चढ़ी, कितने रूप उसने पाए, कितने रंग पाए और कितनी आँचों में पकी। पककर निकली तो कितनी नदियों-कूपों के जल को उसने अपनी गंध से सुरभित

किया, अपनी अग्नितप्त काया के स्पर्श से शीतल किया। कुम्हार मुसकराता रहा, मिट्टी सीझती रही भीगने से, पकने से, टूटने से ! एक बड़ी कजरारी आँखों वाला शिशु बस चकित होता रहा — इतना अद्‌भुत, इतनी साधारण मिट्टी और ये रूपांतर ! विधाता का चाक घूमता ही जा रहा है, उनका एक आँवा बुझता नहीं कि दूसरा सुलगता रहता है, और प्यास है कि हज़ारों-हज़ारों घड़ों से, सकोरों से बुझती नहीं। बढ़ई की रुखानी चोट-पर-चोट करती जा रही है। इतनी निछोह चोट और इतना सँभाल कि काठ की जो अपनी बुनावट है, वह अनउभरी न रह जाए, कहीं ज़्यादा चिनगी न निकल जाए, कहीं संकल्पित फूल न बिगड़ जाएँ, कहीं रेखा न कट जाए — बचपन में इस बात पर ही मुग्ध रहता था।

आज जब चारों ओर देखता हूँ कि पेड़ ठूँठ हो गए हैं, छायाएँ तना बन गई हैं, पल्लवन-कुसुमन केवल दहन बन गया है और रस देने वाली, रस लेने वाली जड़ें उखड़ गई हैं, उनका ऊर्ध्वमुखी चितान भयभीत करने लगा है तो बढ़ई की याद आती है। वही इन सूखी जड़ों को श्यामल निकुंज बना सकता है। पर न बढ़ई है, न उसकी रुखानी, अब बस रंदा है जो ज़िंदगी को चौरस करता जा रहा है।

और हाँ दही, दही में वैसी जमावट ही नहीं। शायद दूध उतना उफनता नहीं। शायद दहेंड़ी उतनी सोंधियाई नहीं जाती। शायद उतनी धीमी आँच के लिए उतना धैर्य नहीं दिखता। पनियल-सा दही जमता है। ऊपर से चीनी डालकर मीठा किया जाता है। अब मलाईदार दही पचता भी तो नहीं। लखराज की माँ का दही शायद उसकी उस वत्सलता की ही एक परिणति थी। ठीक-ठीक तो हिसाब लगा नहीं सकता, इतना कह सकता हूँ कि वह दही कहीं लगी हुई है, छूटती नहीं ।

अब दही नहीं जमता, मन ज़रूर जम गया है। ऐसा जम गया है कि कोई भी ताप उसे पिघला नहीं पाता । ज़िंदगी में ताप कम नहीं है, पर मन है कि ज्वालामुखी के ऊपर बर्फ़ की चादर बना हुआ है। ऐसे में दही की स्निग्ध जमावट एकमात्र अवलंब है, जो कहीं मन को प्रेरित करे कि जमना पिघलने के लिए होता है। पिघलकर असंख्य-असंख्य लोगों की शिराओं में रक्त की तीव्र धार का प्रवाह बनने के लिए होता है।

एक अजनबी शहर में रहता हूँ, जहाँ पर हर क्षण चौकन्ना रहना पड़ता है। मैं अगर अजनबी शहरों और परिवेशों में आत्मीयता की पुकार लगा पाता हूँ तो इसलिए कि मेरा एक गाँव-घर ऐसा है, जो बराबर मेरे साथ है। और मैं हताश होना चाहूँगा, तो भी होने नहीं दिया जाऊँगा । उस गाँव-घर के कारण ही कहीं भी रहूँ, बेघर नहीं होने पाऊँगा, सभी प्रकार के वनवास आवास बनते रहेंगे ।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. लेखक के सरकारी नौकरी में रीवाँ आने पर वहाँ के लोगों ने क्या कहा?
2. लेखक के आगरा आने पर किस प्रकार के लोगों को आपत्ति हुई?
3. लेखक अपने प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों को क्यों नहीं भूल पाया?
4. लेखक शिवधनी की पत्नी का नाम क्यों नहीं जानता था?
5. 'एक बड़ी कजरारी आँखों वाला शिशु बस चकित होता रहा।' यह शिशु कौन था और उसके चकित होने का क्या कारण था?
6. तत्सम शब्दों के तद्भव और तद्भव शब्दों के तत्सम रूप बताइए — मृत्यु, सूखा, श्यामल, खंभा, पूर्वी, जेठ, पच्छिम, अग्नि, धैर्य, बहू ।

लिखित

1. लेखक को कौन से प्रश्न निर्मम लगते हैं और वह उनका उत्तर देने में अपने को असमर्थ क्यों पाता है?
2. 'पर मन कहता है कि ये सभी उत्तर, सभी समाधान आधे सही हैं, पूरे सही नहीं।' लेखक किन समाधानों की बात कर रहा है और उसे ये सभी समाधान पूरे सही क्यों नहीं लगते?
3. लेखक की पहली भूल क्या थी? किन-किन अवसरों पर लेखक को उसके कारण परेशानी उठानी पड़ी?

4. लेखक को बढ़ई की याद क्यों आई?
5. दही की दहेंड़ी पीछे छूटकर भी क्यों नहीं छूटी?
6. लेखक अजनबी शहरों और परिवेशों में आत्मीयता की पुकार कैसे लगा पाता है?
7. आशय स्पष्ट कीजिए —
   (क) *वह इमली का बीज, लगता है ज़िंदगी के लिए अम्लान लगाव के रूप में एक छतनार पेड़ बन गया है।*
   (ख) विधाता का चाक घूमता ही जा रहा है। उनका एक आवाँ बुझता नहीं कि दूसरा सुलगता रहता है।
   (ग) अब बस रंदा है, जो ज़िंदगी को चौरस करता जा रहा है।
   (घ) *अब दही नहीं जमता, मन ज़रूर जम गया है।*
   (ङ) सभी प्रकार के वनवास आवास बनते रहेंगे ।
8. 'लेखक के लिए पूरा देश ही उसका घर है।' टिप्पणी कीजिए ।
9. इस पाठ के किन अंशों से ठेठ ग्रामीण संस्कृति की झलक मिलती है?
10. प्रस्तुत पाठ ललित निबंध है। ललित निबंध के निम्नलिखित तत्त्वों की पहचान इस पाठ से कीजिए ।

    (क) वैयक्तिकता (ख) आत्मीयता (ग) लोक तत्त्व
11. आपको लेखक के बचपन की कौन-सी घटना रोचक लगी? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

भाषा-अध्ययन

निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम-चिह्न लगाइए —

- इतना अद्भुत इतनी साधारण मिट्टी और ये रूपांतर
- जब कोई पूछता है आपका शुभस्थान तो मैं बड़े असमंजस में पड़ जाता हूँ
- कैसे कहूँ कि ब्रज का नहीं हूँ वृंदावन-बिहारी के निकुंजों का नहीं हूँ

योग्यता-विस्तार

1. 'बचपन की वह घटना, जो भुलाए नहीं भूलती' — अपने अनुभव के आधार पर इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए ।
2. ऐसी कुछ कविताओं का संकलन कीजिए, जिनमें ग्रामीण परिवेश की झलक मिलती हो ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

असमंजस : दुविधा, समझ में न आना कि क्या करें यह या वह
सकूनत : निवास, रहने का स्थान
अंतद्र्वंद्व : भीतर ही भीतर चलने वाला द्वंद्व, परस्पर विरोधी भावों का संघर्ष
व्यथित : दुःखी
रूमाल में गाँठ लगाना : याद रखने के लिए रूमाल में गाँठ लगाई जाती है, स्मरण करना
कसौटी : मापदंड, परख, जाँच
अस्तित्ववान : विद्‌यमान होना
निकुंज : सघन वृक्षों और लताओं से आवृत स्थान, लतामंडप
वनराजि : जंगल की पगडंडी, वन की ओर जाने वाला सँकरा रास्ता
सुरभित : सुगंधित
मधुच्छायित : सरस, रसमयी
निखालिस : विशुद्ध, जिसमें और किसी वस्तु की मिलावट न हो
भदेस : ठेठ देहाती
मश्क : अभ्यास
धौल देना : खुले हाथ से पीठ पर आघात करना या मारना
प्रतिषिद्ध : निषिद्ध, जिसके लिए मना हो
गोपनीय : छुपाने योग्य
नक्काशी : लकड़ी आदि ठोस सतह पर बेल-बूटे खोदना
कुतूहल : जिज्ञासा, जानने की इच्छा
लोंदा : किसी गीली वस्तु का पिंड
पंचइया : नागपंचमी
नाहक : व्यर्थ
रुखानी : बढ़ई का एक औज़ार जिससे लकड़ी काटते हैं या उसमें छेद करते हैं
निछोह : जिसमें छोह या प्रेम न हो
रंदा : लकड़ी को समतल करने का औज़ार
ज्वालामुखी : वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, राख तथा जले और पिघले हुए पदार्थ समय-समय पर निकलते रहते हैं
हताश : जिसकी आशा नष्ट हो गई हो, निराश

पद्य - खंड

भूमिका

कविता क्या है?

साहित्य में दो प्रमुख शैलियाँ हैं : गद्य और कविता। जब हम अपने विचारों को विस्तारपूर्वक तर्क और प्रमाण सहित व्याकरण सम्मत भाषा में प्रस्तुत करते हैं, तब हम गद्य-शैली का प्रयोग कर रहे होते हैं और जब अपने भावों और विचारों को छंद, लय, ताल, स्वर में बाँधकर (कभी-कभी प्रतीकों या अमूर्त बिंबों के सहारे) प्रकट करते हैं तो कविता-शैली का। यही काव्य और गद्य का स्थूल अंतर है। कभी-कभी कविता में छंद, स्वर, ताल आदि का निर्वाह नहीं भी किया जाता, तब भी वह कविता रहती है। काव्यत्व कविता के द्वारा प्रस्तुत भावानुभूति पर अधिक टिका होता है, उसे प्रस्तुत करने की शैली पर कम। कविता की सृष्टि तभी होती है जब कवि के हृदय में अनुभूति की तीव्रता होती है और होता है भावों का ऐसा आवेग जो फूट पड़ने को आतुर हो। यह भाव या विचार हमारे मन को छू जाता है। कविता का अभिव्यक्ति-कौशल, छंद, तुक, वर्ण-प्रयोग, शब्द-चयन, अलंकार आदि पाठक के सौंदर्य-बोध को तीव्र करते हैं।

कविता पढ़ने का उद्देश्य

कविता पाठक के मन को छूकर उसे ऐसा आनंद देती है, जिसे वह शब्दों में कठिनता से अभिव्यक्त कर पाता है। वह आनंद के लिए पढ़ी-सुनी जाती है, विचार उसमें कलात्मकता से पिरोया जाता है। कविता का उद्देश्य जीवन के अनुभवों की कलात्मक अभिव्यक्ति भी है। वह पाठक की भावनाओं का उदात्तीकरण करती है और उसके सौंदर्य-बोध का परिष्कार भी। मानव-मन का स्वभाव है कि वह सौंदर्य, माधुर्य और लालित्य की ओर सहज ही आकृष्ट होता है। कविता इस मनोवृत्ति की पूर्ति करती है। कविता मानव-प्रेम, प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम, त्याग, स्नेह, संवेदनशीलता जैसी सद्वृत्तियों को जगाती है तथा मन को कोमल, उदार और संवेदनशील बनाती है।

विद्यार्थियों के किशोर मन को तो कविता बहुत ही प्रभावित करती है। किशोरावस्था में हृदय की गहराइयों में अनेक भावनाएँ उभर रही होती हैं, मन कुछ विशेष कर गुज़रने को प्रतिक्षण तत्पर रहता है। कविता से उनमें नई तरंग और नई स्फूर्ति जगती है। उन्हें लगता है जैसे कवि उन्हीं की भावनाओं को अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त कर रहा है।

अन्य सभी साहित्यिक विधाओं – नाटक, कहानी, उपन्यास आदि की अपेक्षा कविता का प्रभाव अधिक गहरा और स्थायी होता है। कविता पढ़ने से भावानुभूति के अतिरिक्त सौंदर्यानुभूति से भी विद्यार्थी परिचित होते हैं। वाचन क्षमता तथा सौंदर्य-विवेचन की क्षमता का विकास भी कविता पढ़ने-पढ़ाने के उद्देश्य हैं। कवि अपनी बात को प्रभावी और आकर्षक बनाने के लिए अलंकार आदि अनेक उपादानों का सहारा लेता है। ऐसे ही कुछ उपादानों का परिचय देने का यहाँ प्रयास किया जा रहा है।

छंद, लय और प्रवाह

कविता सामान्यतः किसी छंद विशेष में बँधी होती है। छंदबद्ध कविता में मात्राओं की निश्चित संख्या अथवा वर्णों के निश्चित क्रम को भी ध्यान में रखा जाता है। पहले प्रकार के छंद मात्रिक कहलाते हैं और दूसरे वर्णिक। दोहा, रोला, चौपाई आदि मात्रिक छंद हैं तथा सवैया, कवित्त आदि वर्णिक। आधुनिक कविता में लय पर तो ध्यान दिया जाता है, किंतु छंद-विधान को अधिक आवश्यक नहीं समझा जाता, फिर भी छंद-विधान की उपयोगिता में कमी नहीं आई है। लय और प्रवाह के लिए छंद की उपयोगिता समझ कर कवियों ने नए-नए छंद बनाए हैं।

छंद-विधान में यति, गति, लघु-गुरु के साथ-साथ लय को प्रधान स्थान प्राप्त है। छंदोबद्ध कविता में वर्णों की आवृत्ति, शब्दचयन और तुक से नाद सौंदर्य उत्पन्न होता है जो उसके रसास्वादन में सहायक बनता है। इसीलिए लयात्मक कविता पाठ को सराहा जाता है। तुक और गेयता कविता के अनिवार्य तत्त्व नहीं हैं, पर कविता के समग्र प्रभाव को अधिक आस्वाद युक्त बनाने में वे भी सहायक होते हैं। दुष्यंत कुमार की कविता का एक अंश द्रष्टव्य है –

मेरी तो आदत है
रोशनी जहाँ भी हो

उसे खोज लाऊँगा
कातरता, चुप्पी या चीखें,
या हारे हुओं की खीज
जहाँ भी मिलेगी
उन्हें प्यार के सितार पर बजाऊँगा।

उपर्युक्त पंक्तियों में कहीं तुक नहीं है, पर लय का सहज प्रवाह है। यह लय ही कविता को सुपाठ्य और सुग्राह्य बनाती है।

शब्द-विन्यास

कविता में शब्द-चयन का विशेष महत्त्व होता है। शब्द-विन्यास के लिए कवि व्याकरण के नियमों का सदा पालन नहीं करता। वह कोमल या कठोर शब्दों के प्रयोग से विशेष वातावरण का निर्माण करता है। प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी आदि छायावादी कवियों ने शब्द-चयन और रूप-विन्यास में बड़ी सतर्कता बरती है। प्रसाद की निम्नलिखित पंक्तियों में कोमल शब्दावली का प्रयोग देखिए –

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा
किसलय का अंचल डोल रहा

यहाँ 'खग-कुल कुल-कुल' में जो गूँज उभर रही है वह अन्य शब्दों द्वारा संभव नहीं। कठोर शब्दों के प्रयोग के लिए भूषण की नीचे लिखी पंक्तियाँ देखिए –

भूषण भनत नाद-बिहद नगारन के,
नदी-नद मद गैबरन के रलत है।

तो नरेंद्र शर्मा ने सीधे-सरल शब्दों के सहारे कायरता के अपावन रूप को इस प्रकार उभारा है –

'युद्धं देहि कहे' जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर !
या तो जीत प्रीति के बल पर,

या तेरा पथ चूमे तस्कर।
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन !
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

'युद्धं देहि कहे जब पामर' पंक्ति ललकार द्वारा जूझने का संकेत दे रही हैं। 'प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है, पर कायरता अधिक अपावन !' कहकर कवि उनकी शक्ति-सामर्थ्य को प्रेरित कर अगली पंक्ति में उसके गिरे हुए रूप का चित्रण करता है। अंतिम पंक्ति में 'कुछ भी बन, बस कायर मत बन' को सुनकर तो ललकार जैसे चरमसीमा पर पहुँच जाती है। यह है शब्द-प्रयोग का चातुर्य और कवि का कौशल।

अलंकार योजना

कवि कभी शब्दों में और कभी अर्थ में चमत्कार लाकर कविता को सजाता है। ये सजावटी 'उपकरण' ही अलंकार कहलाते हैं। वर्णों या शब्दों के द्वारा अलंकरण हो तो उसे शब्दालंकार कहते हैं, अर्थ से हो तो उसे अर्थालंकार। भूषण की निम्नलिखित पंक्तियों में दोनों प्रकार के अलंकारों का सौंदर्य द्रष्टव्य है –

भुज-भुजगेस की बै संगिनी भुजंगिनी-सी
खेदि-खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति, मीन
पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।

छायावादी कवियों में भी अलंकरण की प्रवृत्ति मिलती है। अमूर्त की मूर्त से या मूर्त की अमूर्त से तुलना, मानवीकरण आदि उनके प्रिय अलंकार रहे हैं। आधुनिक कवियों में पुराने उपमानों के प्रति मोह कम है। वे अपनी बात कुछ प्रतीकों के माध्यम से कहते हैं या कविता में विविध प्रकार के बिंबों की सृष्टि करते हैं, यथा –

अंबर पनघट में डुबो रही –
तारा-घट ऊषा नागरी।

चित्रात्मकता

कवि और कलाकर सौंदर्य के चितेरे होते हैं। कलाकार अपनी सौंदर्यानुभूति को रेखाओं और रंगों के द्‌वारा उभारता है। कवि के उपकरण तो मात्र शब्द हैं, पर शब्दों से भी वह बड़ा ही मनोरम और सजीव चित्र खींच देता है। कविता को पढ़ने-सुनने से ही पाठक या श्रोता के मस्तिष्क में साकार चित्र खिंच जाता है, उसे लगता है जैसे वह सब कुछ अपनी आँखों से देख रहा है। 'मेघ आए' का यह चित्र देखें –

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की।
'बरस बाद सुधि लीन्हीं' –
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।



कविता की सराहना

पिछले पृष्ठों पर कविता के कुछ उपादानों – छंद, लय, प्रवाह, अलंकार, शब्द-विन्यास या चित्रात्मकता की चर्चा की गई। किंतु केवल इनका प्रयोग मात्र ही कविता नहीं है। कविता का प्राण-तत्त्व है उसका भाव, उसकी समग्रता से हमारे हृदय पर पड़ा प्रभाव। उसी को कविता का आस्वाद कहते हैं। शेष उपादान तो उसके शरीर के अंग हैं। कविता की सराहना तभी की जा सकती है जब हम उसके आत्मत्व का साक्षात्कार कर सकें। कविता का आनंद टुकड़ों में नहीं, समग्रता में है। जब हम कवि की अनुभूति से तादात्म्य करते हैं तभी उसकी कविता का आस्वाद कर पाते हैं। यह आस्वाद प्रत्येक पाठक को भिन्न रूप में होता है। पर यह आस्वाद ऐसा होता है जिसे वह सरलता

से अभिव्यक्त नहीं कर पाता। शिक्षार्थी भी उसे अनुभव कर सकते हैं, यदि वे नीचे लिखी बातों का अनुपालन करें।

काव्यपाठ

काव्यपाठ कविता को सराहने का पहला सोपान है। कविता गद्य नहीं है, अतः गद्य की भाँति नहीं पढ़ी जाती। कविता में निहित लय ही उसे गद्य से भिन्न बनाती है इसलिए लय को पकड़ना सामान्य काव्यपाठ की पहली शर्त है। लय का निर्धारण काव्य पंक्तियों में विद्यमान गति, विरामचिह्न, गुरु-लघु मात्रा एवं तुक से होता है। आधुनिक कविता में विराम चिह्न न हों, लय अवश्य होती है। भावों के अनुकूल उचित विराम स्थल बनाकर ही काव्य पाठ किया जाना चाहिए। प्रस्तुत संकलन की अधिकांश कविताएँ तुकांत हैं। कुछ में तो गेयतत्त्व भी है। दुष्यंत कुमार की कविताएँ मुक्त छंद में हैं, पर उनमें आरोह-अवरोह और लय की अद्भुत क्षमता है। 'गांधी जी के जन्मदिन पर' कविता को लीजिए –

लँगड़ाकर चलते हुए पाँवों को
कंधा दूँगा
गिरी हुई पद-मर्दित पराजित **विवशता को**
बाँहों में उठाऊँगा।
इस समूह में
इन अनगिनत अचीन्हीं आवाज़ों में
कैसा दर्द है !
कोई नहीं सुनता !
पर इन **आवाज़ों** को
और इन **कराहों** को
दुनिया सुने मैं ये चाहूँगा।



उपर्युक्त पंक्तियों में पूर्ण विराम और आश्चर्यबोधक चिह्न विराम का स्थल संकेतित करते हैं, पर इन विराम चिह्नों के अतिरिक्त कविता में मोटे छपे शब्द स्वर में आरोह चाहते हैं – दो

स्थानों पर आत्म-विश्वास और दृढ़ संकल्प को व्यंजित करते हैं। यही नहीं, संपूर्ण कविता में ऐसे अनेक स्थल हैं। उन्हें पहचानकर दृढ़ स्वर में आरोह-अवरोहपूर्वक पढ़ने से कविता का संदेश सहज ही समझ में आ जाता है।

हिंदी की अधिकांश कविताएँ मात्रिक छंदों में लिखी गई हैं। उन्हें पढ़ने में सावधानी की आवश्यकता है कि कहीं मात्राएँ घट-बढ़ न जाएँ। संयुक्ताक्षरों का ठीक उच्चारण न करने पर कविता की लय टूट जाएगी। तब वह बेसुरी और कर्णकटु लगेगी। अतः कविता पाठ करते समय उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

समग्र भाव

प्रत्येक कविता को बार-बार पढ़ा जाना चाहिए तभी उसकी मूल संवेदना और उसके कलापूर्ण पक्ष दोनों स्पष्ट हो सकेंगे। जहाँ तक कविता के भाव या विचार का प्रश्न है, वह संपूर्ण कविता के समग्र प्रभाव पर टिका होता है। अलंकार, चित्रात्मकता, शब्द प्रयोग आदि कौशल पूरी कविता में व्यक्त हो सकते हैं और उसके किसी अनुच्छेद, पंक्ति या शब्द विशेष में भी। कविता की समुचित सराहना के लिए हम संपूर्ण से खंड की ओर अग्रसर होते हैं। तभी हम कविता के बाहरी उपादानों की समुचित सराहना कर सकते हैं।

प्राचीन आचार्यों ने कविता के प्रभाव को ही रस नाम दिया है, क्योंकि वह भी एक स्वाद ही है, जिसका हम मानसिक स्तर पर आस्वादन करते हैं। वस्तुतः संपूर्ण कविता का प्रभाव ही उसका रस है। उस कविता से कभी हम फड़क उठते हैं, कभी द्रवित होते हैं, कभी हँसते हैं, कभी चकित होते हैं – ये ही कविता के 'रस' हैं। ऐसे नौ-दस रस कविता में माने जाते हैं। पर कविता रसों की सीमा में न भी आ रही हो तो भी आनंद देती है। 'आनंद' या 'आस्वाद' प्रत्येक कविता का अपना होता है।

कुछ कविताएँ ऐसी भी हो सकती हैं जिनमें कवि का मंतव्य सर्वथा स्पष्ट न होता हो। कवि जानबूझ कर कुछ संकेत कर देता है और शेष अस्पष्ट ही रहने देता है। यह भी उसकी एक कला है। ऐसे स्थलों में एकाधिक अर्थ संभव हो सकते हैं – अतः एक ही अर्थ का आग्रह उचित नहीं।

कविता का पूर्ण आस्वाद पाठक की रुचि, संवेदनशीलता और संस्कारों पर भी निर्भर करता है, पर ये गुण जन्मजात ही नहीं होते, अर्जित भी किए जाते हैं। बार-बार काव्य पाठ सुनने, काव्य चर्चा करने से उसकी अभिरुचि जाग्रत हो सकती है। शिक्षण की नई प्रविधियों में यह अधिक सरल है– जैसे इन कविताओं के टेप बनाए जा सकते हैं, किसी कवि को आमंत्रित कर उसकी कविता का पाठ कराया जा सकता है, कवि-दरबार आयोजित कर विभिन्न प्रकार की कविताओं से विद्यार्थियों को परिचित कराया जा सकता है। समर्थ शिक्षक कविता के पाठ को ही नहीं कक्षा के वातावरण को भी काव्यमय बना देते हैं।

वस्तुतः इन कविताओं के अर्थ जानना, अलंकार पहचान लेना या भावार्थ लिख लेना ही पर्याप्त नहीं हैं। बल इस बात पर दिया जाना चाहिए कि छात्र-छात्राएँ संकलन की अधिकाधिक कविताओं को कंठस्थ कर सकें, उचित अवसरों पर उन्हें लय तथा आरोह-अवरोह के साथ सुना सकें और उनमें से कुछ स्वरचित कविताओं के माध्यम से अपने आपको अभिव्यक्त कर सकें।

कबीरदास

भक्तिकालीन निर्गुण संत-परंपरा में कबीर का स्थान शीर्ष पर है। उनका जन्म लगभग सन 1398 में वाराणसी में हुआ था। कहा जाता है कि लगभग 120 वर्ष की लंबी उम्र पाकर सन 1518 के आस-पास उनकी मृत्यु मगहर में हुई।

कबीरदास का पालन-पोषण वाराणसी के नीरू नामक जुलाहे के यहाँ हुआ था। वे पढ़-लिख नहीं सके किंतु मानव प्रेम के ढाई आखर सीख कर वे पंडित हो गए। कबीर ऐसे समय में भारतीय क्षितिज पर उदित हुए जब भारतीय समाज कठिन परिवर्तन के दौर से गुज़र रहा था।

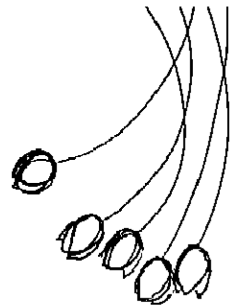
कबीर क्रांतदर्शी कवि थे। उनकी कविता में गहरी सामाजिक चेतना प्रकट होती है। उनके पास अनुभव से प्राप्त अथाह ज्ञान था। उनकी कविता सहज ही मर्म को छू लेती है। एक ओर धर्म के बाह्य आडंबरों पर उन्होंने गहरी और तीखी चोट की है तो दूसरी ओर आत्मा-परमात्मा के विरह-मिलन के भावपूर्ण गीत गाए हैं।

कबीर की रचनाएँ मुख्यतः 'कबीर ग्रंथावली' में संकलित हैं किंतु कबीर पंथी 'बीजक' को ही मान्यता प्रदान करते हैं। उनकी कतिपय रचनाएँ 'गुरु ग्रंथ साहब' में भी संकलित हैं। अपनी रचनाओं में उन्होंने दोहा-चौपाई और पद शैली का प्रयोग अधिक किया है। उनकी साखियों की भाषा में राजस्थानी, पंजाबी मिश्रित हिंदी दिखाई पड़ती है। उनकी भाषा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सधुक्कड़ी नाम दिया है। साधु-संतों के साथ अनेक स्थानों का भ्रमण करने के कारण उनकी भाषा में अनेक भाषाओं के शब्दों का मिश्रण हो गया है।

'रमैनी' और 'सबद' में गाए जाने वाले पदों का संकलन है जिनमें पूरबी हिंदी का प्रयोग हुआ है। कबीर की भाषा ऊबड़-खाबड़ अवश्य है किंतु सूक्ष्म भावों को प्रकट करने की उसकी क्षमता असाधारण है।

कबीर का मूल्यांकन करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है– "ऐसे थे कबीर – सर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़, भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के सामने प्रचंड, दिल के साफ़, दिमाग के दुरुस्त, जन्म से अस्पृश्य, कर्म से वंदनीय।"

यहाँ कबीर के दो सबद (पद) और पाँच साखियाँ दी जा रही हैं। पहले सबद में ब्रह्म की सर्वव्यापकता का चित्रण है। दूसरे सबद में संसार की असारता का वर्णन है। संकलित साखियों में सद्गुरु महिमा, माया की छलना और ब्रह्म से तादात्म्य की इच्छा व्यक्त की गई है तथा बाह्याचारों पर चोट की गई है।



सबद (पद)

मोकों कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो तेरे पास में ।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ।
ना तो कौने क्रिया-कर्म में, नहीं योग बैराग में ।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में ।
कहैं कबीर सुनो भई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में ।।



रहना नहिं देस बिराना है।
यह संसार कागद की पुड़िया, बूँद पड़े घुल जाना है।
यह संसार काँट की बाड़ी, उलझ-पुलझ मरि जाना है।
यह संसार झाड़ औ झाँखर, आग लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है।।

साखी

सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार ।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार ।।

माया मुई न मन मुवा, मरि-मरि गया सरीर ।
आसा त्रिष्णाँ नाँ मुई, यौं कहि गया कबीर ।।

नैनाँ अंतरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेउँ ।
नाँ हौं देखौं और कूँ, नाँ तुझ देखन देउँ ।।

माला पहरै मनमुखी, ताथैं कछू न होइ ।
मन माला कौं फेरताँ, जुग उजियारा सोइ ।।

केसौं कहा बिगाड़िया, जे मूँडै सौ बार ।
मन कौं काहे न मूँडिए, जामैं बिषै बिकार ।।

प्रश्न - अभ्यास

सबद (पद)

मौखिक

1. पहले पद में 'मैं' और 'तेरे' शब्द किसके सूचक हैं?
2. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता-फिरता है?
3. कबीर के मत में ईश्वर कहाँ विद्यमान है?
4. 'देस' शब्द से कबीर का क्या तात्पर्य है?
5. कवि ने संसार को 'कागद की पुड़िया' क्यों कहा है?
6. कबीर की दृष्टि में इस नश्वर संसार में मनुष्य का एकमात्र सहारा कौन है?

लिखित

1. कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?
2. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?
3. संसार को 'बिराना' या 'पराया' कहने का क्या आशय है?
4. संसार की नश्वरता बताने के लिए कबीर ने क्या-क्या उदाहरण दिए हैं?

योग्यता-विस्तार

1. कबीर के उन पदों को ढूँढ़ कर पढ़ें, जिनमें उन्होंने बाह्याडंबरों का विरोध किया है।
2. संसार की नश्वरता और सतगुरु के महत्त्व से संबंधित कबीर के कुछ पद और साखियाँ याद कर कक्षा में सुनाइए ।

साखी

मौखिक

1. कबीर ने सतगुरु की महिमा को अनंत क्यों कहा है?

2. वे कौन-सी चीज़ें हैं जो शरीर के मरने पर भी नहीं मरती हैं?
3. कबीर का ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?
4. किन साखियों में कबीर ने वाह्याडंबरों पर व्यंग्य किया है?

लिखित

1. कबीर ने मन के संकेत पर चलने वाले व्यक्ति द्वारा माला फेरने को ईश्वर का स्मरण क्यों नहीं माना है?
2. बालों को मूँड़ने और मन को मूँड़ने में क्या अंतर है?
3. अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण छाँट कर लिखिए।
4. भाव स्पष्ट कीजिए –
   (क) लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार ।
   (ख) मन माला कौं फेरताँ, जुग उजियारा सोइ ।।
   (ग) मन कौं काहे न मूँडिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

देवल : देवालय, मंदिर
काबा : मुसलमानों का पवित्र तीर्थस्थल
बिराना : पराया
बाड़ी : बगीचा
अनँत (अनंत) : असीम, अपार,
उपगार : उपकार
मुई : मर गई
अंतरि : अंदर,
मनमुखी : मन के संकेत पर चलने वाला
केसौं (केशों) : बालों ने
जुग : युग (जीवन- काल)
मूँडिए (मूँड़ना) : सिर के बाल उतारना, साफ़ करना
बिषै बिकार : सांसारिक वासनाएँ

मीराबाई

हिंदी की कवयित्रियों में मीराबाई का अप्रतिम स्थान है। मीरा ने कृष्ण सौंदर्य का मार्मिक चित्रण किया है। कृष्ण-भक्ति के बहुत सुंदर गीत मीरा ने लिखे हैं। मीरा का जन्म सन 1498 में जोधपुर (राजस्थान) के कुड़की गाँव में राव रत्नसिंह राठौर के परिवार में हुआ था। बचपन में ही माँ के स्वर्गवासी हो जाने के बाद मीरा को अपने पितामह के साथ रहना पड़ा। पितामह कृष्ण के परम भक्त थे। उनकी कृष्ण-भक्ति से प्रभावित होकर मीरा बचपन से ही कृष्ण-भक्ति में रत हो गईं।

मीरा का विवाह मेवाड़ के राणा साँगा के सबसे बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। उन्हें मीरा की कृष्ण-भक्ति अच्छी न लगती थी। वे चाहते थे कि मीरा घर-गृहस्थी के कामों में रुचि ले। लेकिन मीरा थीं कि साधु-संतों की सेवा करने में ही सुख-संतोष पाती थीं।

मीरा के इस आचरण से ससुराल वाले दुखी रहते थे। समाज में भी मीरा के बारे में तरह-तरह की बातें कही जाने लगीं किंतु मीरा अपने कृष्ण-प्रेम में इतनी दीवानी थीं कि कोई भी उन्हें भक्ति मार्ग से हटा न सका।

पति के दिवंगत होने के बाद मीरा ने मेवाड़ छोड़ दिया। वे वृंदावन में रहने लगीं। कालांतर में वृंदावन छोड़ कर वे द्वारका में बस गईं। वहीं सन 1546 में उनकी मृत्यु हो गई।

मीरा की भक्ति मुख्यतः माधुर्य भाव की भक्ति है। उनमें कहीं-कहीं दैन्य और दास्य भाव की छाया भी मिलती है। मीरा के विरह-वेदना के गीत हिंदी ही नहीं, भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि हैं। मीरा की रचना सूरदास की पद-परंपरा में बँधी गेय कविता है। उनकी सरल भाषा में राजस्थानी एवं गुजराती का सुखद मिश्रण है। मीरा के पदों का संग्रह 'मीरा पदावली' के नाम से मिलता है।

कृष्ण के प्रेम में निमग्न मीरा ने कृष्ण को ही अपना सर्वस्व मान लिया था। यही बात पहले पद में कही गई है। मीरा पारिवारिक संबंधों और कुल की मर्यादा का त्याग कर संतों की संगति में रहने लगी है। कृष्ण-प्रेम की बेल को आँसुओं से सींचकर उसने आनंद का फल प्राप्त किया है।

दूसरे पद में मीरा ने होली खेलते हुए कृष्ण की लीला का ऐसा जीवंत चित्रण किया है, मानो सब कुछ मीरा की आँखों के सामने घटित हुआ हो ।

पद

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ।
जाके सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई ।
तात-मात, भ्रात-बंधु, आपनो न कोई ।
छाँड़ि दई कुल की कानि, कहा करि है कोई ।
संतन ढिंग बैठि-बैठि, लोक-लाज खोई ।
अँसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम-बेलि बोई ।
अब तो बेल फैल गई, आणंद फल होई ।
भगति देखि राजि भई, जगत देखि रोई ।
दासी मीराँ लाल गिरधर, तारो अब मोही ।।

होली खेलत हैं गिरधारी ।
मुरली चंग बजत डफ न्यारो, संग जुवति ब्रजनारी ।
चंदन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी ।
भरि-भरि मूठि गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ।
छैल छबीले नवल कान्ह संग, स्यामा प्राण पियारी ।
गावत चार धमार राग तहँ, दै-दै कल करतारी ।
फागु जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ्यो रस ब्रज भारी ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मोहनलाल बिहारी।।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. किस पंक्ति से पता चलता है कि मीरा श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थी?
2. मीरा को आनंद-फल प्राप्ति के लिए क्या-क्या करना पड़ा?
3. श्रीकृष्ण किनके साथ होली खेल रहे हैं?
4. संपूर्ण ब्रज रसमय क्यों हो उठा है?

लिखित

1. 'कहा करि है कोई' पंक्ति मीरा के किस मनोभाव को प्रकट करती है –
   (क) समाज की उपेक्षा
   (ख) परिवार का निरादर
   (ग) कृष्ण की भक्ति
   (घ) मन की धृष्टता
2. इन पदों में प्रयुक्त अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण छाँटकर लिखिए ।
3. भाव स्पष्ट कीजिए –
   (क) अब तो बेल फैल गई, आणंद फल होई ।
   (ख) भगति देख राजि हुई, जगत देखि रोई ।
4. मीरा के पद के आधार पर श्रीकृष्ण द्वारा खेली गई होली का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

योग्यता-विस्तार

1. मीरा के कुछ पद याद कीजिए और कक्षा में सुनाइए ।
2. श्रीकृष्ण द्वारा खेली गई ब्रज की होली और आज की होली में क्या अंतर है? चर्चा कीजिए ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कानि : लोक-लज्जा, मर्यादा

ढिंग : पास, समीप

चंग : डफ की शक्ल का एक बाजा

धमार : फाग के गीत, एक ताल

रसखान

रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहीम था। उनका जन्म पिहानी के एक संपन्न पठान परिवार में सन 1548 में हुआ था। बचपन में ही ये दिल्ली चले गए। वहाँ रहते हुए सन 1556-57 में पड़े भीषण अकाल और गदर को देखकर वे ब्रज चले गए। वहाँ वे बहुत दिनों तक रामचरित मानस का पाठ सुनते रहे। संभवतः रामचरित मानस के प्रभाव ने इन्हें काव्य रचना की ओर प्रवृत्त किया।

इन्होंने कृष्ण को आधार बना कर ब्रज में रहते हुए कृष्ण भक्ति के पद लिखे। इनके कवित्त-सवैयों को सुनकर प्रेमीजन रसमग्न हो जाया करते थे। रसखान के कवित्त-सवैये अपने माधुर्य, पद-योजना और छंद-भंगिमा के कारण प्रभावपूर्ण बन गए हैं। **प्रेमवाटिका, रसखान शतक** और **सुजान रसखान** इनकी उपलब्ध पुस्तकें हैं। **रसखान रचनावली** नाम से इनकी रचनाओं का संग्रह भी मिलता है। रसखान संबंधी ग्रंथों के सूक्ष्म अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि उनकी प्रामाणिक रचनाएँ केवल दो हैं -- **सुजान रसखान** और **प्रेमवाटिका**।

रसखान की रचनाओं के विषय में डॉ. विजयेंद्र स्नातक ने लिखा है-- "रसखान की कविता का मूलभाव भक्ति है। कृष्ण भक्ति से आकृष्ट होकर, उन्होंने दिल्ली नगर छोड़कर ब्रजभूमि में रहना तय किया था किंतु उनकी भक्ति में प्रेम, शृंगार और सौंदर्य की त्रिवेणी का प्रवाह सतत बना रहा। सौंदर्य के मनोरम चित्र उन्होंने श्रीकृष्ण के रूप-लावण्य की छवि को प्रस्तुत करने के लिए अंकित किए हैं। बालकृष्ण की छवि के लिए वात्सल्य भाव से परिपूर्ण कई सवैये उन्होंने लिखे हैं।" सन 1628 में उनकी मृत्यु हुई।

यहाँ रसखान के दो पद दिए जा रहे हैं। पहले पद में कवि ने श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों के निश्छल प्रेम को अभिव्यक्ति दी है। श्रीकृष्ण का सामीप्य पाने के लिए गोपियाँ कुछ भी करने को तैयार हैं किंतु सौतिया डाह के कारण वे कृष्ण की मुरली को अपने होंठों से लगाना नहीं चाहतीं।

दूसरे पद में रसखान श्रीकृष्ण के बाल-सौंदर्य का वर्णन करते हुए उन लोगों के भाग्य को सराहते हैं जिन्हें क्षण भर के लिए भी श्रीकृष्ण के सामीप्य का सुख मिल सका है।

सवैये

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं गुंज की माल गरें पहिरौंगी ।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी ।।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सो तेरे कहें सब स्वाँग करौंगी ।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी ।।

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजनी बाजति पीरी कछोटी ।।
वा छबि को रसखानि बिलोकत वारत काम कला निज कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गयौ माखन रोटी ।।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. सखी के कहने पर गोपी क्या-क्या स्वाँग भरने को तैयार हैं?
2. गोपी कृष्ण की मुरली को अपने अधरों से क्यों नहीं लगाना चाहती?
3. गोपियाँ कृष्ण के किस रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हैं?
4. कौवे के भाग्य को क्यों सराहा गया है?

लिखित

1. आपके विचार से सखी ने गोपी से कृष्ण का ही रूप धारण करने का आग्रह क्यों किया होगा?
2. दूसरे सवैये के आधार पर कृष्ण के बाल-सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. 'या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी,' पंक्ति गोपी के किस मनोभाव को प्रकट करती है?

योग्यता-विस्तार

रसखान द्वारा रचित बाल-सौंदर्य के कुछ सवैयों को पढ़िए और उनकी तुलना पूर्व पठित सूरदास के बाल-सौंदर्य वर्णन से कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

गुंज : एक पौधे से प्राप्त एक विशेष प्रकार का दाना, घुँघची

गरें : गले

स्वाँग : रूप धरना, भेस बनाना, नकल करना

अधरा : होंठ

पीरी : पीली

कछोटी : घुटने तक की कसी हुई धोती

भूषण

हिंदी में वीररस की कविता लिखने वाले कवियों में भूषण का स्थान सर्वोपरि है। भूषण का वास्तविक नाम घनश्याम था। भूषण का जन्म उत्तर प्रदेश में कानपुर के निकट यमुना नदी के किनारे बसे गाँव तिकवाँपुर में लगभग सन 1613 में हुआ था। 'कवि भूषण' की उपाधि चित्रकूट के राजा हृदयराम के पुत्र रुद्र ने उन्हें प्रदान की थी जैसा कि 'शिवराज भूषण' के एक दोहे की इस पंक्ति से पता चलता है — **कवि भूषन पदवी दई हृदयराम सुत रुद्र**। हिंदी के प्रसिद्ध कवि चिंतामणि और मतिराम भूषण के भाई थे।

आजीविका के लिए तिकवाँपुर छोड़कर भूषण दक्षिण भारत की ओर चले गए। वहाँ उन्होंने अनेक राजाओं का आश्रय प्राप्त किया किंतु मुख्य रूप से शिवाजी और छत्रसाल के आश्रय में रहकर ही भूषण ने काव्य रचना की।

मिश्र बंधुओं और रामचंद्र शुक्ल ने भूषण का समय सन 1613 से 1715 के मध्य माना है। कहते हैं कि कवि भूषण ने छह ग्रंथ लिखे थे। इनमें से ये तीन ग्रंथ उपलब्ध हैं — **शिवराज भूषण, शिवाबावनी** और **छत्रसाल दशक**।

भूषण की सारी रचनाएँ मुक्तक पद्धति में लिखी गई हैं। इनकी कविता वीररस प्रधान है। इसमें चारों प्रकार के वीरों का वर्णन है — युद्धवीर, दानवीर, धर्मवीर और दयावीर।

यहाँ उनके दो कवित्त दिए जा रहे हैं। पहले कवित्त में कवि ने शिवाजी की चतुरंगिणी सेना, विशेषकर गज-सेना के युद्धक्षेत्र की ओर प्रस्थान करने पर होनेवाली हलचल का जीवंत चित्रण किया है।

दूसरे कवित्त में कवि ने छत्रसाल की बरछी की विशेषताएँ बताते हुए छत्रसाल की वीरता का वर्णन किया है।

कवित्त

साजि चतुरंग-सैन अंग मैं उमंग धारि,
        सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषण भनत नाद-बिहद नगारन के,
        नदी-नद मद गैबरन के रलत है।
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल-गैल,
        गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि-धारा मैं लगत जिमि,
        धारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

भुज-भुजगेस की बै संगिनी भुजंगिनी-सी,
        खेदि-खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धँसि जाति, मीन
        पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।
रैया राव चंपति के छत्रसाल महाराज,
        भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी परछीने ऐसे परे पर छीने बीर,
        तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. नगाड़ों की ध्वनि का हाथियों के समूह पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. आकाश में चमकता सूर्य तारे-सा क्यों दिखाई देने लगता है?
3. 'भुज भुजगेस...', कवित्त में मुख्य रूप से किसका वर्णन किया गया है –
   (क) छत्रसाल के शौर्य का
   (ख) छत्रसाल की बरछी का
   (ग) छत्रसाल के साहस और दानवीरता का
   (घ) छत्रसाल द्वारा लड़े गए भयानक युद्ध का
4. कवि ने छत्रसाल की बरछी की तुलना मछली से क्यों की है?

लिखित

1. पहले कवित्त के आधार पर युद्ध-प्रयाण का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. छत्रसाल की बरछी और भुजंगिनी में क्या साम्य है?
3. छत्रसाल की बरछी के कारण शत्रु सेना की दशा कैसी हो गई?
4. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए –
   (क) ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल-गैल,
   गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है।
   (ख) तारा सो तरनि धूरि-धारा मैं लगत जिमि,
   थारा पर पारा पारावार यों हलत है।
   (ग) पच्छी परछीने ऐसे परे पर छीने बीर,
   तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के ।

योग्यता-विस्तार

भूषण के कुछ और कवित्त याद करके ओजस्वी स्वर में कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

चतुरंग सैन : चतुरंगिणी सेना (गज, अश्व, रथ और पैदल इन चार अंगों से युक्त सेना)

सरजा : शिवाजी की उपाधि

गैबरन : हाथी

रलत : बहना

ऐल-फैल : कोलाहल

खैल-भैल : समूह की हलचल

गैल-गैल : प्रत्येक मार्ग में, गली-गली में

ठैल-पैल : भीड़भाड़, ठेल-पेल

खलक : संसार

उसलत : उखड़ते हैं

तरनि : सूर्य

थारा : थाली

पारावार : समुद्र

भुजगेस : शेषनाग

भुजंगिनी : नागिन

खेदि-खेदि : खदेड़कर, भगाकर

दीह : दीर्घ, बड़ा

बखतर : कवच

पाखरन : हाथी की पीठ पर पड़ी हुई लोहे की जाली

परवाह : प्रवाह, धारा, बहाव

रैयाराव : राजा की पदवी

चंपति : राव चंपराय शाह, छत्रसाल का पिता

पच्छी : पक्षी

परछीने : जिसके पंख कटे हों

रामनरेश त्रिपाठी

हिंदी काव्य की द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के समर्थ कवियों में रामनरेश त्रिपाठी का स्थान उल्लेखनीय है। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद के कोइरीपुर ग्राम में सन 1881 में हुआ था। इनके पिता भगवद्भक्त और रामायण-प्रेमी थे। पिता की गहरी छाप इनके व्यक्तित्व पर पड़ी।

त्रिपाठी जी को विधिवत स्कूली शिक्षा नहीं मिल सकी। अपने अध्यवसाय से इन्होंने हिंदी, बँगला तथा अंग्रेज़ी का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया और राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्यों में लग गए। इन्हें भ्रमण करना अत्यंत प्रिय था। देशी रियासतों के राजे-महाराजे इनके मित्र थे और उन्हीं के कारण इनकी भ्रमण योजनाएँ चलती थीं। लगभग 20 हज़ार किलोमीटर पैदल यात्रा कर इन्होंने हज़ारों ग्राम गीतों का संकलन किया और उनका भाष्य भी किया।

साहित्य के क्षेत्र में इन्होंने विविध रूपों में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इन्होंने हिंदी, उर्दू, संस्कृत और बँगला के प्रतिनिधि काव्य-संकलनों का संपादन किया। इनका यह कार्य **कविता कौमुदी** के नाम से आठ भागों में छपा है तथा हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण माना गया। बाल साहित्य के क्षेत्र में इन्होंने असाधारण योग दिया है। इन्होंने सन 1931 से 41 तक **वानर** नाम की पत्रिका संपादित तथा प्रकाशित की। यह पत्रिका बच्चों के बीच अत्यंत लोकप्रिय थी। **बाल कथा कहानी** के नाम से इन्होंने रोचक और शिक्षाप्रद कहानियों के कई संग्रह बच्चों के लिए तैयार किए। इन्हें हिंदी बाल-साहित्य का जनक कहना गलत न होगा। इनकी मृत्यु सन 1962 में हुई।

इनकी चार काव्य कृतियाँ उल्लेखनीय हैं – **मिलन**, **पथिक**, **मानसी** और **स्वप्न**। इनमें **मानसी** फुटकर कविताओं का संग्रह है। शेष तीनों कृतियाँ खंड काव्य हैं जिनका विषय प्रेम कहानियाँ हैं।

यहाँ कवि की देश-प्रेम संबंधी एक कविता दी जा रही है। इसमें भारत की मनोहारी प्रकृति और समृद्धि का चित्रण है और मनुष्य के आपसी आत्मीय संबंधों पर गर्व प्रकट किया गया है।



वह देश कौन-सा है?

मन-मोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?

जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?

नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है?

जिसके बड़े रसीले फल-कंद-नाज मेवे,
सब अँगने सजे हैं, वह देश कौन-सा है?

जिसके सुगंधवाले सुंदर प्रसून प्यारे,
दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है?

मैदान-गिरि-वनों में हरियालियाँ लहकतीं,
आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है?

जिसके अनंत धन से धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?

पृथ्वी निवासियों को जिसने प्रथम जगाया,
शिक्षित किया सुधारा, वह देश कौन-सा है?

छोड़ा स्वराज्य तृणवत् आदेश से पिता के,
वह राम था जहाँ पर, वह देश कौन-सा है?

निःस्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई भले जहाँ थे,
लक्ष्मण-भरत सरीखे, वह देश कौन-सा है?

निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े-लिखे हैं,
वे सब बता सकेंगे, वह देश कौन-सा है?

चालीस कोटि भाई सेवक सपूत जिसके,
भारत सिवाय दूजा, वह देश कौन-सा है?

प्रश्न -अभ्यास

मौखिक

1. भारत देश की प्राकृतिक रचना पर गर्व करने का क्या कारण है?
2. 'नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं' पंक्ति में सुधा की धारा से क्या आशय है?
3. भारत में पारिवारिक संबंध बड़े आत्मीय और मधुर रहे हैं। इसे बताने के लिए कवि ने क्या उदाहरण दिया है?
4. पिता के आदेश से राम ने स्वराज्य को तिनके की तरह छोड़ दिया – इससे राम के चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है –

   (क) स्वाभिमान और पितृभक्ति (ख) त्याग और अनासक्ति
   (ग) उदारता और करुणा (घ) क्रोध और हठ

5. निम्नलिखित पंक्ति को पढ़कर बताइए कि इसकी तुलना प्रस्तुत कविता की किन पंक्तियों से की जा सकती है –
'जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।'

लिखित

1. कविता के आधार पर भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कीजिए।
2. 'जिसके अनंत धन से धरती भरी पड़ी है', कवि के इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?
3. भारत की गौरव-गरिमा पर एक लेख लिखिए ।
4. कविता में भारत की चालीस करोड़ जनसंख्या का उल्लेख हुआ है। अब हम एक अरब की संख्या को पार कर चुके हैं। तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या से देश को किन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है?

योग्यता -विस्तार

देश-प्रेम से संबंधित कविताओं का एक एलबम तैयार कीजिए ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

मन-मोहिनी : मन को आकृष्ट करने वाली
रत्नेश : समुद्र
अँगने : आँगन
प्रसून : फूल
तृणवत् : तिनके के समान तुच्छ

जयशंकर प्रसाद

आधुनिक हिंदी कविता की एक प्रमुख प्रवृत्ति रही है – छायावाद । इस छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में सन 1889 में हुआ था। उन्होंने 'सुँघनी साहु' नाम के जिस वैश्य कुल में जन्म लिया वह प्रसाद की एक पीढ़ी पहले तक अत्यंत समृद्ध था। प्रसाद के पिता देवीप्रसाद साहु के यहाँ विद्वानों, कलाकारों आदि का बड़ा सम्मान होता था।

प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई । बाद में काशी के क्वींस कॉलेज में पढ़ने गए किंतु परिस्थितिवश आठवीं से आगे न पढ़ सके । तब उन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिंदी, फ़ारसी और उर्दू का अध्ययन किया । पिता-माता और बड़े भाई के निधन के कारण किशोरावस्था में ही प्रसाद को परिवार का उत्तरदायित्व सँभालना पड़ा ।

चित्राधार प्रसाद का पहला काव्य संग्रह है। इसकी स्फुट रचनाएँ प्रकृति विषयक तथा प्रेम और भक्ति संबंधी हैं। **कानन कुसुम** प्रसाद की खड़ी बोली की कविताओं का पहला संग्रह है। प्रसाद की अन्य काव्य पुस्तकें हैं – **झरना**, **महाराणा का महत्त्व**, **लहर**, **प्रेमपथिक**, **करुणालय**, **आँसू** और **कामायनी**। **कामायनी** प्रसाद का प्रसिद्ध महाकाव्य है जिसे आधुनिक हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माना जाता है।

कविताओं के साथ-साथ प्रसाद ने गद्य में भी रचना की। उन्होंने **तितली** और **कंकाल** नामक उपन्यास लिखे, परंतु **इरावती** उपन्यास अधूरा ही छोड़ गए । उन्होंने अनेक नाटकों की रचना की जिनमें **अजातशत्रु**, **स्कंदगुप्त** और **ध्रुवस्वामिनी** विशेष प्रसिद्ध हैं। उनकी कहानियों के भी पाँच संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

प्रसाद मूलतः प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति का सूक्ष्म सौंदर्य मुखरित हो उठा है जिनमें कहीं-कहीं आध्यात्मिक छाया (रहस्यवाद) का भान भी होता है। वे तत्सम प्रधान खड़ी बोली के प्रयोग में सिद्धहस्त माने जाते हैं। सन 1937 में प्रसाद का निधन हो गया।

संकलित कविता **प्रयाण-गीत** कवि के प्रसिद्ध नाटक **चंद्रगुप्त** से ली गई है। नाटक की एक स्त्री पात्र अलका भारत के अमर, दृढ़ प्रतिज्ञ, शूरवीर और साहसी युवकों का आह्वान करती है कि वे देश में घुस आए यवन शत्रुओं का डटकर सामना करें। उन्हें देश से बाहर कर अपनी विजय पताका लहराएँ।

दूसरी कविता में प्रातःकालीन सौंदर्य का चित्रण हुआ है। तारे डूबने लगे हैं। पनघटों पर चहल-पहल शुरू हो गई है। पक्षी चहचहा रहे हैं। कोंपलें लहलहा उठी हैं। ऐसे में किसी नवयुवती का सोए रहना उचित नहीं।

प्रयाण-गीत

हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती —
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती —
'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।'
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के — रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में — सुवाड़वाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो — बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

बीती विभावरी जाग री

बीती विभावरी जाग री !
अंबर पनघट में डुबो रही —
तारा-घट ऊषा नागरी ।
खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई —
मधु मुकुल नवल रस गागरी ।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए —
तू अब तक सोई है आली,
आँखों में भरे विहाग री ।

प्रश्न - अभ्यास

प्रयाण-गीत

मौखिक

1. हमारे देश की स्वतंत्रता जाग्रत-शुद्ध वाणी से किसका आह्वान कर रही है?
2. स्वतंत्रता के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है?
3. यह आह्वान हिमालय से ही करने के पीछे क्या कारण हो सकता है?
4. भारत भूमि की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है?
5. भारत के सपूतों की कीर्ति-रश्मियों को दिव्य-दाह के समान क्यों बताया है?
6. निम्नलिखित में से कौन-सा तथ्य इस कविता के कथ्य एवं शिल्प-सौंदर्य से मेल नहीं खाता —
   (क) इसमें संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग हुआ है।
   (ख) इसमें क्रोध का भाव झलकता है।
   (ग) छंद में भावों के अनुरूप ही लय, ध्वनि एवं क्षिप्रगति विद्यमान है।
   (घ) कविता शत्रुओं के प्रति भी विनम्रता बरतने का आग्रह करती है।
   (ङ) इसमें वीरता और ओज की प्रधानता है।

लिखित

1. स्वतंत्रता स्वयंप्रभा और समुज्ज्वला कैसे है? समझाकर लिखिए ।
2. 'अराति सैन्य सिंधु में —
   सुवाड़वाग्नि से जलो'
   इस पंक्ति के रूपक को स्पष्ट कीजिए ।

3. निम्नलिखित पंक्तियों का अलंकार सौंदर्य स्पष्ट कीजिए –
   (क) हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
   (ख) असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी

योग्यता-विस्तार

श्यामलाल पार्षद के 'झंडा ऊँचा रहे हमारा । विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' ध्वज गीत को याद कीजिए और उसकी तुलना प्रस्तुत गीत से कीजिए ।

बीती विभावरी जाग री

मौखिक

1. प्रातःकाल होने पर कवि किसे जगाना चाहता है?
2. प्रातःकाल में प्रकृति तथा मानव-जीवन में क्या हलचल होती है?
3. 'किसलय का अंचल डोल रहा' से कवि का क्या आशय है?
4. 'लो यह लतिका ....गागरी' में कवि ने लता को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

लिखित

1. कवि ने उषा, किसलय और लतिका में किन मानवी भावों और क्रिया-कलापों का आरोप किया है?
2. 'अंबर पनघट में डुबो रही, तारा-घट ऊषा नागरी' के रूपक को स्पष्ट कीजिए ।
3. 'खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा' पंक्ति के काव्य-सौंदर्य पर चार वाक्य लिखिए ।
4. अलकों में मलयज को बंद करने का क्या अभिप्राय है?
5. 'आँखों में भरे विहाग री' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

योग्यता -विस्तार

'उषा' पर अनेक कवियों ने कविताएँ लिखी हैं। ऐसी तीन कविताएँ चुनिए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

हिमाद्रि : हिमालय पर्वत

तुंगशृंग : ऊँची चोटी

स्वयंप्रभा : अपनी रोशनी से जगमगाने वाली

समुज्ज्वला : निर्मल, बेदाग

अमर्त्य : अमर

प्रशस्त पुण्य पंथ : खुला हुआ, सुविस्तृत, पवित्र मार्ग

कीर्ति रश्मियाँ : यश की किरणें

विकीर्ण : फैली हुई

दिव्य-दाह : अलौकिक ऊष्मा (निरंतर गर्म बनी रहने वाली)

अराति सैन्य....जलो : शत्रु की सेना के सागर में बड़वाग्नि बनकर जलो अर्थात् शत्रु की विशाल सेना को भस्म कर दो

प्रवीर : श्रेष्ठ वीर

विभावरी : रात्रि

नागरी : नागरिका, युवती

खग-कुल : पक्षीगण

किसलय : कोंपल

अंचल : आँचल

मधु मुकुल : मधुरस से भरी कली

गागरी : छोटा घड़ा

अमंद : कभी मंद न पड़ने वाला

अलकें : केशराशि

मलयज : चंदन

अलकों में मलयज बंद किए : सुगंधित केश लिए

आली : सखी

विहाग : रात में गाए जाने वाला एक राग

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का जन्म ग्वालियर राज्य के शाजापुर कस्बे के निकट मयाना गाँव में सन 1897 में हुआ। वैष्णव माता-पिता के साथ बचपन में कुछ दिनों नाथद्वारा में रहने के बाद पढ़ाई करने के लिए वे शाजापुर आ गए। शाजापुर से मिडिल पास करने के बाद वे उज्जैन चले गए जहाँ उन्होंने माधव कालेज में प्रवेश लिया। पढ़ाई करते समय उनके मन में पराधीन भारत की तस्वीर ही घूमती रहती थी। युवा 'नवीन' को राजनीति ने बड़ी तीव्रता से आकृष्ट किया। राजनीतिक जीवन से आकृष्ट होकर वे लखनऊ जा पहुँचे जहाँ 1916 का कांग्रेस अधिवेशन होने वाला था।

कांग्रेस के इसी अधिवेशन में 'नवीन' जी की भेंट माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त और गणेश शंकर विद्यार्थी से हुई। अगले ही वर्ष वे मैट्रिक पास कर कानपुर पहुँच गए जहाँ गणेश शंकर विद्यार्थी **प्रताप** नाम का अखबार प्रकाशित कर रहे थे। विद्यार्थी जी ने 'नवीन' को **प्रताप** में रख लिया और पढ़ाई के लिए उन्हें क्राइस्ट चर्च कालेज में भरती करा दिया। इस प्रकार **प्रताप** में काम करते हुए, 'नवीन' को पत्रकारिता का प्रशिक्षण मिल गया। विद्यार्थी जी के संपर्क का नतीजा यह रहा कि सन 1931 में गणेश शंकर जी की मृत्यु के बाद 'नवीन' ही **प्रताप** के मुख्य संपादक बने। सन 1960 में इनका स्वर्गवास हो गया।

प्रसिद्ध आलोचक देवीशंकर अवस्थी के शब्दों में "राजनीतिज्ञ और पत्रकार के समानांतर ही 'नवीन' के व्यक्तित्व का तीसरा पक्ष था, कविता-रचना। उनके कवि का मूल स्वर रोमांटिक था।" किंतु स्वतंत्रता-संग्राम में आने पर राष्ट्रीयता का स्वर उनके काव्य में अधिक मुखर हो उठा।

राजनीतिक व्यस्तता उन्हें व्यवस्थित नहीं रहने देती थी। इसीलिए वे अपनी कविताओं के प्रकाशन की ओर ध्यान नहीं दे पाते थे। किंतु लिखते वे अवश्य रहे। छपाने की ओर से लापरवाह

रहने के बावजूद उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उनमें प्रमुख हैं – **कुमकुम**, **रश्मि रेखा**, **क्वासि**, **अपलक**, **हम विषपायी जनम के** और **उर्मिला** महाकाव्य.।

स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के कारण उन्हें निरंतर जेल जाना पड़ा। उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाएँ जेल में ही लिखीं। सारे जीवन 'नवीन' उदार, फक्कड़ और मस्त रहे। मस्ती और फक्कड़पन उनकी समस्त रचनाओं में परिलक्षित होते हैं। प्रगतिशीलता भी उनकी कविता का एक बड़ा गुण है। उनकी भाषा शैली ओजस्वी और भावानुकूल है।

'नवीन' की एक कविता **हम अनिकेतन** यहाँ दी गई है जो सांसारिकता के प्रति अनासक्ति के भाव की अभिव्यक्ति करती है। कवि ने जीवन में विभिन्न प्रकार के अनुभव किए हैं किंतु कभी दुनियादार बनने की लालसा उनमें नहीं जगी। कवि जीवन के जिस मोड़ पर आ पहुँचा है, उसमें अब उसे दुनियादार बनने की इच्छा शेष नहीं रह गई है।

हम अनिकेतन

हम अनिकेतन, हम अनिकेतन !
हम तो रमते राम, हमारा क्या घर, क्या दर, कैसा वेतन?

अब तक इतनी यों ही काटी, अब क्या सीखें नव परिपाटी
कौन बनाए आज घरौंदा हाथों चुन-चुन कंकड़-माटी
ठाठ फ़कीराना है अपना, बाघंबर सोहे अपने तन ।

देखे महल, झोंपड़े देखे, देखे हास-विलास मज़े के
संग्रह के सब विग्रह देखे, जँचे नहीं कुछ अपने लेखे
लालच लगा कभी पर हिय में मच न सका शोणित उद्वेलन ।

हम जो भटके अब तक दर-दर, अब क्या खाक बनाएँगे घर
हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर
हम क्यों सनें ईंट-गारे में? हम क्यों बनें व्यर्थ में बेमन?

ठहरे अगर किसी के दर पर, कुछ शरमाकर कुछ सकुचाकर
तो दरबान कह उठा, बाबा, आगे जा देखो कोई घर
हम रमता बनकर बिचरे पर हमें भिक्षु समझे जग के जन ।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. कवि ने स्वयं को 'रमते राम' क्यों कहा?
2. दुनियादार कौन होता है?
3. कवि जीवन में अपना घर क्यों नहीं बना पाया?
4. रमते राम के प्रति समाज की क्या धारणा होती है?
5. कवि को क्या समझकर दरबान ने 'आगे जा देखो कोई घर' कह दिया?

लिखित

1. कवि के फ़कीराना ठाठ पर आठ-दस पंक्तियाँ लिखिए।
2. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए –
   (क) संग्रह के सब विग्रह देखे।
   (ख) हमने देखा सदन बने हैं लोगों का अपनापन लेकर।

योग्यता-विस्तार

'सफल जीवन जीने के लिए दुनियादार बनना ज़रूरी है–' इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद का आयोजन कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अनिकेतन : बिना घर का

रमते राम : केवल राम में ही रमण करने वाला, कहीं भी स्थायी रूप से घर बनाकर नहीं बसने वाला, घूमने-फिरने वाला

परिपाटी : रीति, ढंग

घरौंदा : बच्चों द्वारा रेत, मिट्टी से बनाया गया घर

फ़कीराना ठाठ : कुछ भी संग्रह करके न रखना, धन-वस्त्र, मकान आदि की चिंता न कर दर-दर भटकना

बाघंबर : बाघ की खाल का वस्त्र, वस्त्र के रूप में बाघ की खाल

संग्रह के सब विग्रह देखे : संग्रह किया हुआ सब बिखरता, नष्ट होता देखा

हमने देखा...अपनापन लेकर : ऊँचे-ऊँचे महल बनवाने वालों में मनुष्य के प्रति अपनेपन की भावना प्रायः समाप्त हो जाती है

दरबान : चौकीदार

सुमित्रानंदन पंत

उत्तरांचल प्रदेश के कुमाऊँ अंचल के कौसानी गाँव में प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन 1900 में हुआ। जन्म के छह घंटे बाद ही माँ को क्रूर मृत्यु ने छीन लिया। शिशु को उसकी दादी ने पाला-पोसा। शिशु का नाम रखा गया गुसाईं दत्त।

गुसाईं दत्त की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अल्मोड़ा में हुई। सन 1918 में वे अपने मँझले भाई के साथ काशी आ गए और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से मैट्रिक उत्तीर्ण करने के बाद वे इलाहाबाद चले गए। उन्हें अपना नाम पसंद नहीं था, इसलिए उन्होंने अपना नाम रख लिया– सुमित्रानंदन पंत। यहाँ म्योर कॉलेज में उन्होंने इंटर में प्रवेश लिया। महात्मा गांधी के आह्वान पर अगले वर्ष उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया और घर पर ही हिंदी, संस्कृत, बँगला और अंग्रेज़ी का अध्ययन करने लगे।

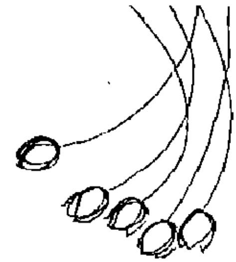
सुमित्रानंदन सात वर्ष की उम्र में ही, जब वे चौथी कक्षा में पढ़ रहे थे, कविता लिखने लग गए थे। सन 1907 से 1918 के काल को स्वयं कवि ने अपने कवि-जीवन का प्रथम चरण माना है। इस काल की कविताएँ **वीणा** में संकलित हैं। सन 1922 में **उच्छ्वास** और 1928 में **पल्लव** का प्रकाशन हुआ। सुमित्रानंदन पंत की कुछ अन्य काव्य कृतियाँ हैं – **ग्रंथि, गुंजन, ग्राम्या, युगांत, स्वर्ण-किरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन, चिदंबरा, सत्यकाम** आदि। सन 1977 में सुमित्रानंदन पंत का देहावसान हो गया।

अपने कृतित्व के लिए पंत जी को विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया । **कला और बूढ़ा चाँद** के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, **लोकायतन** पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार एवं **चिदंबरा** पर इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।

पंत जी की प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति-प्रेम और सौंदर्य की छटा मिलती है, जिसका उत्कर्ष उनकी छायावादी रचनाओं **पल्लव** और **गुंजन** में देखने को मिलता है। सन 1936 के आस-पास वे मार्क्सवाद से प्रभावित हुए। **युगांत** और **ग्राम्या** की अनेक रचनाओं पर मार्क्स का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कवि की उत्तरकालीन रचनाओं पर अरविंद की विचारधारा की छाप है।

पंत जी सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति और सचल दृश्यों के चित्रण में अन्यतम हैं। इनकी भाषा बड़ी सशक्त एवं समृद्ध है। मधुर भावों और कोमलकांत गीतों के लिए कवि सिद्धहस्त हैं।

आः धरती कितना देती है, कविता में कवि अपने बचपन की एक भूल को याद करते हुए धरती के रत्न प्रसविनी रूप का चित्रण कर रहा है। 'हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे' का संदेश देते हुए कवि ने मानवता की फसल उगाने के लिए समता, ममता और क्षमता के बीज बोने पर बल दिया है।



आः धरती कितना देती है !

मैंने छुटपन में छिपकर पैसे बोए थे,
सोचा था, पैसों के प्यारे पेड़ उगेंगे,
रुपयों की कलदार मधुर फसलें खनकेंगी,
और, फूल-फल कर, मैं मोटा सेठ बनूँगा !

पर बंजर धरती में एक न अंकुर फूटा,
बंध्या मिट्टी ने न एक भी पैसा उगला !
सपने जाने कहाँ मिटे, सब धूल हो गए !
मैं हताश हो, बाट जोहता रहा दिनों तक,
बाल कल्पना के अपलक पाँवड़े बिछाकर !
मैं अबोध था, मैंने गलत बीज बोए थे,
ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था !

अर्धशती हहराती निकल गई है तब से !
कितने ही मधु पतझर बीत गए अनजाने,
ग्रीष्म तपे, वर्षा झूलीं, शरदें मुसकाईं,
सी-सी कर हेमंत कँपे, तरु झरे, खिले वन !
औ' जब फिर से गाढ़ी ऊदी लालसा लिए,
गहरे कजरारे बादल बरसे धरती पर,

मैंने, कौतूहल वश, आँगन के कोने की
गीली तह को यों ही उँगली से सहलाकर
बीज सेम के दबा दिए मिट्टी के नीचे ।
भू के अंचल में मणि माणिक बाँध दिए हों !

मैं फिर भूल गया इस छोटी-सी घटना को,
और बात भी क्या थी, याद जिसे रखता मन !
किंतु, एक दिन, जब मैं संध्या को आँगन में
टहल रहा था, — तब सहसा मैंने जो देखा,
उससे हर्ष विमूढ़ हो उठा मैं विस्मय से !

देखा, आँगन के कोने में कई नवागत
छोटी - छोटी छाता ताने खड़े हुए हैं !
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की ,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्हीं, प्यारी,
जो भी हो, वे हरे - हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे,
डिंब तोड़ कर निकले चिड़ियों के बच्चों-से !

निर्निमेष, क्षण भर , मैं उनको रहा देखता,
सहसा मुझे स्मरण हो आया, — कुछ दिन पहिले,
बीज सेम के रोपे थे मैंने आँगन में,
और उन्हीं से बौने पौधों की यह पलटन
मेरी आँखों के सम्मुख अब खड़ी गर्व से,
नन्हें नाटे पैर पटक, बढ़ती जाती है !



तब से उनको रहा देखता, — धीरे-धीरे
अनगिनती पत्तों से लद, भर गयीं झाड़ियाँ,
हरे - भरे टँग गए कई मखमली चँदोवे ।
बेलें फैल गईं बल खा, आँगन में लहरा,
और सहारा लेकर बाड़े की टट्टी का
हरे - हरे सौ झरने फूट पड़े ऊपर को !
मैं अवाक् रह गया. वंश कैसे बढ़ता है !

छोटे तारों - से छितरे, फूलों के छींटे
झागों - से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर
सुंदर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से,
चोटी के मोती - से , आँचल के बूटों-से !

ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं !
कितनी सारी फलियाँ, कितनी प्यारी फलियाँ,
यह धरती कितना देती है ! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को !
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को !
बचपन में, छिः, स्वार्थ लोभ वश पैसे बोकर !

रत्न प्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ !
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं,
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की — जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ ।
हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे ।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. कवि ने बचपन में क्या सोचकर धरती में पैसे बोए थे?
2. अंकुर न फूटने का क्या कारण रहा?
3. पैसों से अंकुर न फूटने पर कवि को क्या अहसास हुआ?
4. कवि ने पुनः धरती में क्या बोया?
5. कवि ने सेम के बीजों को 'मणि-माणिक' क्यों कहा है?
6. कवि एक दिन अचानक आश्चर्य-मिश्रित हर्ष से क्यों भर उठा?
7. मानवता की सुनहली फसल उगाने से क्या आशय है?
8. कवि ने क्यों कहा है कि वह धरती के महत्त्व को नहीं समझ पाया था?

लिखित

1. धरती में दबे सेम के बीजों पर कवि ने क्या संभावना व्यक्त की है?
2. सेम के पौधों को देखकर कवि ने क्या कल्पनाएँ की हैं?
3. सेम के पौधों में क्रमशः आए किन परिवर्तनों को देखकर कवि अवाक् रह गया?
4. सेम की फलती-फूलती बेलों को देखकर कवि की धरती माता के प्रति क्या धारणा बनी?
5. इस कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?
6. सेम के फूलों की उपमा कवि ने किस-किस से दी है?
7. भाव स्पष्ट कीजिए —
   (क) ममता को रोपा था, तृष्णा को सींचा था!
   (ख) छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
   (ग) हरे -हरे सो झरने फूट पड़े ऊपर को !
   (घ) जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ ।
8. जड़ प्रकृति में मानवीय भावनाओं और क्रिया-कलापों का आरोप करना मानवीकरण कहलाता है। इस कविता से मानवीकरण अलंकार के दो उदाहरण छाँट कर लिखिए।

योग्यता-विस्तार

'हम जैसा बोएँगे वैसा ही पाएँगे' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन कीजिए ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कलदार : रुपये का सिक्का

पाँवड़ें : आदरणीय व्यक्तियों के पाँव रखकर चलने के लिए बिछाया जाने वाला कपड़ा

हहराती : गूँजती हुई, शोर करती हुई

नवागत : नए-नए आए हुए

डिंब : अंडा

निर्निमेष : टकटकी लगाकर, बिना पलक झपकाए

केदारनाथ अग्रवाल

प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल का जन्म सन 1911 में उत्तर प्रदेश के बाँदा ज़िले के कमासिन गाँव में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए ये इलाहाबाद चले गए और वहाँ से बी.ए. किया। इसके बाद आगरा विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की उपाधि प्राप्त कर ये बाँदा में वकालत करने लगे। वकालत करने के साथ-साथ बाँदा के राजनीतिक-सामाजिक जीवन में भी इनकी गहरी रुचि रही। हिंदी के प्रगतिशील आंदोलन से ये घनिष्ठ रूप से जुड़े रहे ।

कविता लिखने के लिए इनके इंटरमीडिएट के अध्यापक रामकृष्ण 'शिलीमुख' निरंतर इन्हें प्रेरित करते रहे। 'शिलीमुख' स्वयं हिंदी के लेखक-समीक्षक थे। उन्होंने युवा केदारनाथ की कुछ कविताएँ लखनऊ से प्रकाशित होने वाली **माधुरी** पत्रिका को भेजीं। कविताएँ छप गईं। उत्साहित होकर अग्रवाल जी विभिन्न कवि सम्मेलनों में जाने लगे।

विश्वविद्यालय में इनका परिचय 'हरिऔध', 'रसाल' जैसे वरिष्ठ कवियों से हुआ। नगर के अन्य कवियों के बीच उठते-बैठते ये नियमित रूप से कविता लिखने लगे। **नींद के बादल** इनका पहला कविता-संग्रह है जिसमें प्रेम संबंधी कविताएँ हैं। इनका दूसरा काव्य-संग्रह **युग की गंगा** है। इसमें दैनिक जीवन और प्राकृतिक सुषमा के हृदयस्पर्शी चित्र हैं। इनका तीसरा संग्रह है – **लोक तथा आलोक** जिसमें प्रगतिशील रचनाएँ हैं। इन कविताओं में शोषकों के प्रति तीव्र आक्रोश है, चुभता हुआ यथार्थ है और है भारत में वर्गहीन समाज की स्थापना का संकल्प। इन तीनों पुस्तकों की मर्मस्पर्शी रचनाओं का संकलन **फूल नहीं रंग बोलते हैं** में मिल जाता है।

प्रगतिवादी आंदोलन को जिन थोड़े से कवियों से बल मिला, उनमें केदारनाथ अग्रवाल प्रमुख हैं। इन्होंने मुक्त छंद और गीति छंद का प्रयोग सफलतापूर्वक किया है। इनका शब्द-चयन कलात्मक होता है और उनकी भावानुभूति यथार्थ पर आधारित रहती है। सन 2000 में इनका स्वर्गवास हो गया ।

यहाँ उनकी दो कविताएँ दी जा रही हैं। पहली कविता में कवि का आशावादी स्वर मुखरित हुआ है। वह असफलताओं से निराश न होकर निरंतर संघर्ष करते हुए जीवन को सुंदर बनाने और सँवारने का प्रयत्न करता है।

दूसरी कविता में छुट्टी का घंटा बजते ही स्कूल से निकलते जीते-जागते, हँसते-गाते बच्चों को देखकर कवि अपनी ढलती आयु भूलकर पुनः बचपन में लौट जाता है। इस कविता में कवि ने इसी अनुभूति को अभिव्यक्ति दी है।

मैं

हारा हूँ सौ बार
गुनाहों से लड़-लड़ कर,
लेकिन बारंबार लड़ा हूँ
मैं उठ-उठ कर,
इससे मेरा हर गुनाह भी मुझसे हारा
मैंने अपने जीवन को इस तरह उबारा।

डूबा हूँ हर रोज़
किनारे तक आ-आ कर,
लेकिन मैं हर रोज़
उगा हूँ जैसे दिनकर,
इससे मेरी असफलता भी मुझसे हारी
मैंने अपनी सुंदरता इस तरह सँवारी ।

छुट्टी का घंटा बजते ही...

छुट्टी का घंटा बजते ही स्कूलों से
निकल-निकल आते हैं जीते-जगते बच्चे,
हँसते-गाते चल देते हैं पथ पर ऐसे
जैसे भास्वर भाव वही हों कविताओं के
बंद किताबों से बाहर छंदों से निकले
देश-काल में व्याप रही है जिनकी गरिमा ।
मैं निहारता हूँ उनको, फिर-फिर अपने को,
और भूल जाता हूँ अपनी क्षीण आयु को !

प्रश्न - अभ्यास

मैं

मौखिक

1. अनेक बार गुनाहों से हारकर भी कवि अपने हर गुनाह को कैसे जीत पाया?
2. कवि ने अपनी असफलता पर कैसे विजय प्राप्त की?
3. 'किनारे तक आ-आकर डूबने' से कवि का क्या आशय है?

लिखित

1. कवि ने अपना जीवन उबारने और सँवारने का क्या रहस्य बताया है?
2. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए –

   डूबा हूँ हर रोज़ किनारे तक आ-आ कर
   लेकिन मैं हर रोज़ उगा हूँ जैसे दिनकर,
   इससे मेरी असफलता भी मुझसे हारी
   मैंने अपनी सुंदरता इस तरह सँवारी ।

योग्यता -विस्तार

1. इसी भाव की कुछ और कविताएँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।
2. 'निरंतर प्रयास करते रहने से सफलता अवश्य मिलती है' – इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

छुट्टी का घंटा बजते ही ...

मौखिक

1. कविता की किन पंक्तियों का भाव है – स्कूल की छुट्टी होते ही बच्चों के चेहरों पर ताज़गी और खिलखिलाहट आ जाती है?
2. स्कूल की सीमा से बाहर निकले बच्चों की तुलना किससे की गई है?
3. कवि को अपना बचपन कब याद आता है?

लिखित

1. बच्चों के चेहरों पर आई चमक की तुलना किससे की गई है और क्यों?
2. छंद पुस्तक से निकलकर देश-काल में कैसे व्याप्त हो जाता है?
3. छुट्टी होने पर स्कूल से निकलते बच्चों के उल्लसित मनोभावों का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।
4. कवि अपनी क्षीण आयु को कब और क्यों भूल जाता है?

योग्यता-विस्तार

पत्र-पत्रिकाओं में से बच्चों पर लिखी गई कविताओं का चयन कीजिए और कक्षा में पढ़कर सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

उधारा : उद्‌धार किया

भास्वर : चमकता हुआ

देश-काल में व्याप्त : हर देश और हर काल में विद्‌यमान

क्षीण आयु : ढलती हुई उम्र

नरेंद्र शर्मा

नरेंद्र शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में सन 1913 में हुआ। वहीं से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद ये इलाहाबाद चले गए और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया। कुछ दिनों के लिए ये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में भी काम करते रहे। इसके बाद वाराणसी के काशी विद्यापीठ में शिक्षक नियुक्त हो गए। उसी अवधि में कुछ समय के लिए राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लेने के कारण इनको नज़रबंद कर लिया गया।

मुंबई के फिल्म जगत ने नरेंद्र शर्मा को आकर्षित किया तो वे मुंबई चले गए। वहाँ वे फिल्मों के लिए गीत लिखते रहे। आकाशवाणी के निमंत्रण पर उन्होंने रेडियो की नौकरी स्वीकार कर ली। आकाशवाणी में **विविध भारती** कार्यक्रम के संचालक होकर उन्होंने हिंदी गीतों को प्रसारित करवाया । उनके कार्यकाल में हिंदी को बहुत बढ़ावा मिला और **विविध भारती** कार्यक्रम को अत्यंत लोकप्रियता मिली। साठ वर्ष के होने पर इन्होंने वहाँ से अवकाश प्राप्त किया। सन 1989 में इनका देहावसान हो गया।

नरेंद्र शर्मा छोटी उम्र से ही गीत लिखने लगे थे। अपने छात्र-काल में ही उनके दो गीत-संग्रह प्रकाशित हो गए थे।

काव्य-जगत में वे छायावादी कवि के रूप में आए किंतु उन्होंने अनेक प्रगतिवादी रचनाएँ भी लिखीं। व्यक्ति और समाज दोनों ही नरेंद्र शर्मा की कविता के प्रेरक तत्त्व रहे हैं। उनकी भाषा में कोमल और कठोर दोनों प्रकार के भावों को प्रकट करने की क्षमता है। पुरुषार्थ और दृढ़ता पर बल देना उनकी कविता की विशेषता है।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं — **प्रभात फेरी, प्रवासी के गीत, पलाश वन, प्रीति कथा, कामिनी, मिट्टी के फूल, हंसमाला, रक्तचंदन, कदली वन, द्रौपदी, प्यासा निर्झर, सुवर्ण, बहुत रात गए, उत्तर जय** आदि । उनकी कहानियों का एक संग्रह भी प्रकाशित हुआ है।

यहाँ नरेंद्र शर्मा की एक प्रसिद्ध कविता **कायर मत बन** दी जा रही है। इस कविता में कवि ने मनुष्य को कायर न बनने का संदेश दिया है। कवि कायरता को प्रतिहिंसा से अधिक अपावन मानता है। इसलिए वह मनुष्य से आग्रह करता है कि वह कुछ भी बने, पर कायर न बने।

कायर मत बन

कुछ भी बन, बस कायर मत बन !
ठोकर मार, पटक मत माथा,
तेरी राह रोकते पाहन !
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

ले-दे कर जीना, क्या जीना?
क़ब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने सींचा तुझको
बहा युगों तक खून-पसीना !
कुछ न करेगा? किया करेगा —
रे मनुष्य – बस कातर क्रंदन?
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

'युद्धं देहि' कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर !
या तो जीत प्रीति के बल पर,
या तेरा पथ चूमे तस्कर !

प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है,
पर कायरता अधिक अपावन !
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

तेरी रक्षा का न मोल है,
पर तेरा मानव अमोल है !
यह मिटता है, वह बनता है,
यही सत्य की सही तोल है !
अर्पण कर सर्वस्व मनुज को,
कर न दुष्ट को आत्म-समर्पण ।
कुछ भी बन, बस कायर मत बन !

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. कवि किसे ठोकर मारने की बात कहता है?
2. कवि किस प्रकार के जीवन को जीवन नहीं मानता?
3. 'कुछ न करेगा? किया करेगा -- रे मनुष्य -- बस कातर क्रंदन' पंक्ति में कौन-सा भाव प्रमुख है --
   (क) निष्क्रियता पर व्यंग्य करने का
   (ख) उलाहना देने का
   (ग) कर्म के लिए प्रेरित करने का
   (घ) चुनौती या ललकारने का
4. कवि ने प्रतिहिंसा को दुर्बलता क्यों कहा है?

लिखित

1. 'मानवता ने सींचा तुझको बहा युगों तक खून पसीना' का आशय स्पष्ट कीजिए ।
2. कायरता प्रतिहिंसा से भी अधिक अपावन है। कैसे?
3. कवि की दृष्टि में सत्य का सही माप क्या है?
4. सज्जन और दुष्ट के प्रति कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए? कविता के आधार पर लिखिए ।
5. इस कविता का मुख्य संदेश क्या है?

योग्यता-विस्तार

'प्रतिहिंसा दुर्बलता है' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

पाहन : पत्थर, मार्ग की बाधाएँ

कातर क्रंदन : आर्त्त विलाप, कष्ट से आकुल हो कर रोना

पामर : नीच, दुष्ट (शत्रु)

प्रतिहिंसा : हिंसा के बदले में की जाने वाली हिंसा

धर्मवीर भारती

धर्मयुग के संपादक के रूप में यश अर्जित करने वाले धर्मवीर भारती का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में सन 1926 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा सरकारी स्कूलों में पाई । उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और पी-एच.डी. की उपाधि अर्जित कर वहीं के हिंदी विभाग में शिक्षक हो गए । इसके पूर्व इलाहाबाद से छपने वाले साप्ताहिक **संगम** में उपसंपादक के रूप में काम किया। इन्हें शिक्षण की अपेक्षा पत्रकारिता से अधिक लगाव था। फलस्वरूप 1959 में विश्वविद्यालय छोड़कर ये **धर्मयुग** साप्ताहिक पत्र का संपादन करने के लिए मुंबई चले गए।

दूसरा सप्तक में विशिष्ट कवि के रूप में स्थान पाने के कारण उनकी गिनती प्रयोगवादी कवियों में की जाती है, किंतु मूलत: वे गीतकार ही हैं। रोमानी कवि के रूप में वे प्रेम और सौंदर्य के गायक कवि हैं। इसके लिए उन्होंने पौराणिक आख्यानों को भी अपने काव्य का विषय बनाया है। **अंधायुग** और **कनुप्रिया** इस के साक्षी हैं। इन दोनों पुस्तकों में भारती के काव्य शिल्प की एक नई भंगिमा दिखती है।

इन दोनों पुस्तकों के अलावा भारती की अन्य काव्य पुस्तकें हैं – **ठंडा लोहा** तथा **सात गीत वर्ष**। भारती ने विश्व साहित्य से चुन कर श्रेष्ठ कविताओं का हिंदी रूपांतर भी किया है।

कविता के साथ-साथ भारती ने उपन्यास, नाटक, कहानी और निबंध भी लिखे हैं। इन विधाओं में उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं – **गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ठेले पर हिमालय, कहनी-अनकहनी, बंद गली का आखिरी मकान** आदि। सन 1997 में धर्मवीर भारती का देहावसान हो गया ।

यहाँ उनकी दो कविताएँ दी जा रही हैं। पहली कविता का संदेश है कि जीवन में तुच्छ से तुच्छ और लघु से लघु समझी जाने वाली वस्तु अथवा व्यक्ति भी कभी असत्य और अन्याय से लड़ने में अत्यधिक उपयोगी और शक्तिशाली सिद्ध हो सकता है। महाभारत के 'चक्रव्यूह' प्रसंग को आधार बनाकर कवि ने इसी तथ्य को निरूपित किया है। चक्रव्यूह में घिरे, अकेले और निहत्थे रह गए अभिमन्यु ने अपने रथ के टूटे पहिए से असत्य पक्ष के ब्रह्मास्त्रों से लोहा लिया था।

दूसरी कविता में कवि की जीवन के प्रति गहन आस्था का चित्रण हुआ है। वह जीवन में स्वाभाविक रूप से आने वाली पराजय, असफलता और निराशाओं से निडर रहकर जीने का संकल्प लेता है और इनसे घबराए हुए व्यक्तियों को भी इनका वैसे ही धैर्यपूर्वक सामना करने की सलाह देता है, जैसे – कमल, पंथ और सूर्य रात का सामना कर प्रभात की प्रतीक्षा करते हैं।

टूटा पहिया

मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत !

क्या जाने कब
इस दुरूह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाय !

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली-निहत्थी आवाज़ को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें
तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ !
मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ



लेकिन मुझे फेंको मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले !

आस्था



रात :
पर मैं जी रहा हूँ निडर
जैसे कमल
जैसे पंथ
जैसे सूर्य

क्योंकि
कल भी हम खिलेंगे
हम चलेंगे
हम उगेंगे

और
वे सब साथ होंगे
आज जिनको रात ने भटका दिया है !

प्रश्न - अभ्यास

टूटा पहिया

मौखिक

1. रथ का टूटा पहिया स्वयं को न फेंके जाने की सलाह क्यों देता है?
2. दुरूह चक्रव्यूह का महाभारत के और आज के संदर्भ में क्या आशय है?
3. कवि ने अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों बताया है?
4. असत्य कभी सत्य को बर्दाश्त नहीं कर पाता – किस तथ्य को आधार बनाकर कवि ने इस ओर संकेत किया है?
5. ब्रह्मास्त्र क्या है?

लिखित

1. लघु से लघु और तुच्छ से तुच्छ वस्तु भी किन परिस्थितियों में अत्यधिक उपयोगी हो सकती है?
2. इतिहास की सामूहिक गति का सहसा झूठी पड़ जाने से क्या आशय है?
3. कवि के अनुसार सच्चाई टूटे पहियों का आश्रय लेने को कब विवश हो सकती है? आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

योग्यता-विस्तार

- 'महाभारत' का चक्रव्यूह प्रसंग पढ़िए और उस पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।

आस्था

मौखिक

1. कविता में 'रात' जीवन की किस सहज स्थिति का द्योतन करती है?
2. कवि ने रात से न डरने वाले किन-किन पदार्थों को चुना है?

3. क्या सोचकर कमल, पंथ और सूर्य रात के अँधेरे से नहीं डरते?
4. इस कविता के शिल्प-सौंदर्य से संबंधित निम्नलिखित तथ्यों में से सही तथ्यों को चुनिए –
   (क) कविता में कम से कम शब्दों में अधिक अर्थ भरने का प्रयत्न हुआ है।
   (ख) कविता में मात्रिक छंद का प्रयोग हुआ है।
   (ग) कविता में मुक्त छंद का प्रयोग हुआ है।
   (घ) कविता ब्रज भाषा में रचित है।

लिखित

1. कमल, पंथ और सूर्य किस आशा और विश्वास में रात बीतने की प्रतीक्षा करते हैं?
2. रात द्‌वारा भटकाने का आशय समझाकर लिखिए ।

योग्यता-विस्तार

1. धर्मवीर भारती के **ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष** और **अंधायुग** काव्य-कृतियों में से अपनी पसंद की पाँच कविताएँ अथवा अंश चुनिए और उन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाइए ।
2. 'जीवन में सुख-दुख का आना स्वाभाविक है'– इस विषय पर एक छोटा-सा लेख लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

दुरूह : कठिन

चक्रव्यूह : चक्र के आकार में सेना की स्थापना, महाभारत के युद्‌ध में द्रोणाचार्य ने इसी व्यूह की रचना की थी

अक्षौहिणी : चतुरंगिणी सेना का एक विभाग (जिसमें 109350 पैदल, 65610 घोड़े, 21870 रथ और इतने ही हाथी शामिल होते हैं)

दुस्साहसी : खतरे से भरा साहस करने वाला

महारथी : योद्‌धा

ब्रह्मास्त्र : ब्रह्मशक्ति से परिचालित अमोघ माना जाने वाला एक अस्त्र

इतिहासों की......आश्रय ले : ब्रह्मास्त्रों (जैसे आज के परमाणु बम) की सहायता से लड़े गए युद्ध की व्यापक विनाश लीला के बाद इतिहास की गति अवरुद्ध-सी जान पड़े और जो भी साधारण से साधारण व्यक्ति और टूटे पहिये जैसा हथियार शेष बचे, उससे ही इतिहास को नई गति मिले

आश्रय : आसरा,सहारा

निडर : जो डरे नहीं

पंथ : मार्ग

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

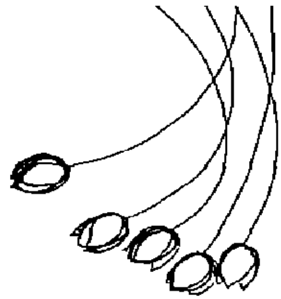
तीसरा सप्तक के विशिष्ट कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती ज़िले में सन 1927 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा के बाद पढ़ने के लिए बस्ती शहर के ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल में इन्होंने प्रवेश लिया । हाई स्कूल पास कर ये वाराणसी चले गए । इन्होंने वहाँ के क्वींस कॉलेज से इंटर परीक्षा उत्तीर्ण की। बी.ए. और एम. ए. इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया ।

कुछ समय के लिए इन्होंने अध्यापन किया, बाद में आकाशवाणी में नौकरी की। 'अज्ञेय' ने जब **दिनमान** का काम सँभाला तो सर्वेश्वर को उन्होंने उपसंपादक के रूप में ले लिया । **दिनमान** में सर्वेश्वर **चरचे और चरखे** स्तंभ का काम देखते थे। यह स्तंभ पाठकों के बीच बड़ा लोकप्रिय था। **दिनमान** छोड़, सर्वेश्वर बच्चों की पत्रिका **पराग** के संपादक बने । इसका कुशल संपादन जीवन के अंतिम समय तक करते रहे । सर्वेश्वर का देहावसान सन 1983 में हुआ ।

सर्वेश्वर ने छोटी उम्र से ही लिखना शुरू कर दिया था। इनकी कविताएँ लोगों को बहुत पसंद आती थीं। इनकी कल्पना-शक्ति बड़ी तीव्र थी । सर्वेश्वर की कविता में रोमानियत है। इनकी भाषा में स्वच्छता और स्पष्टता है। इनकी कविता के बारे में सुमित्रानंदन पंत ने कहा था कि सर्वेश्वर जन्मजात, अकृत्रिम कवि हैं। **नयी कविता** की पहचान कराने वाले कवियों में उनका विशेष योगदान है। उनकी कविताएँ उस नए मोड़ की सूचक हैं, जहाँ से नई कविता में नवीन दिशाओं और नए क्षितिजों के संधान की प्रक्रिया प्रारंभ होती है।

सर्वेश्वर की प्रमुख पुस्तकों के नाम हैं – **काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, जंगल का दर्द** और **खूँटियों पर टँगे लोग**। कविता के अलावा सर्वेश्वर ने उपन्यास, नाटक और कहानियाँ भी लिखी हैं। उनकी **लड़ाई** नामक कहानी बहुत चर्चित हुई थी।

यहाँ सर्वेश्वर की **मेघ आए** नामक कविता दी जा रही है। इस कविता में कवि ने आकाश में मेघों के आने का वर्णन गाँव में सजधज कर आए शहरी पाहुन के रूप में किया है। वर्षभर की प्रतीक्षा के बाद मेहमान के गाँव में आने पर उल्लास, उत्कंठा, सम्मान और उपालंभ का जो वातावरण बनता है, मेघ के आने पर वही वातावरण धरती और प्रकृति (पेड़-पौधों, नदियों और तालाबों आदि) में दिखलाई पड़ रहा है।



मेघ आए

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली,
दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली,
पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के ।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए,
बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के ।

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
'बरस बाद सुधि लीन्हीं'–
बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
हरसाया ताल लाया पानी परात भर के ।
मेघ आए बड़े बन -ठन के सँवर के ।

क्षितिज - अटारी गहराई दामिनि दमकी,
'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

प्रश्न - अभ्यास

मौखिक

1. कविता में मेघ के आगमन का चित्रण किस रूप में हुआ है ?
2. गली-गली में दरवाज़े-खिड़कियाँ क्यों खुलने लगीं ?
3. 'बरस बाद सुध लीन्हीं' में प्रिया के किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है –
   (क) प्रेम भाव की
   (ख) उपालंभ की
   (ग) उदारता की
   (घ) कृतज्ञता की

लिखित

1. मेघ के आगमन का बयार, पेड़, नदी, लता और ताल पर क्या असर हुआ ?
2. कविता से उन अंशों का चयन कीजिए जिनमें मानवीय भावनाओं और क्रिया-कलापों का आरोपण हुआ है।
3. शहरी पाहुन के आगमन पर गाँव में उमगे उल्लास के रूप को अपने शब्दों में लिखिए।
4. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए–
   (क) क्षितिज-अटारी गहराई दामिनी दमकी,
   'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की'
   (ख) बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।

5. स्तंभ 'क' में दिए गए शब्दों को स्तंभ 'ख' में दिए गए उनके सही प्रतीकार्थों से मिलाइए–

क	ख
बूढ़ा पीपल	गाँव की युवती
अकुलाई लता	परिवार का सदस्य
नदी	वियोग से व्याकुल प्रियतमा
ताल	गाँव का सम्माननीय बुज़ुर्ग

योग्यता - विस्तार

अपने शिक्षक की सहायता से केदारनाथ सिंह की 'बादल ओ', सुमित्रानंदन पंत की 'बादल' और निराला की 'बादल-राग' कविताओं को खोजिए और उनकी तुलना प्रस्तुत कविता से कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

आगे-आगे नाचती गाती बयार चली : वर्षा के आगमन की खुशी में हवा बहने लगी, शहरी मेहमान के आगमन की खबर सारे गाँव में तेज़ी से फैल गई

बाँकी चितवन : बाँकपन लिए दृष्टि, तिरछी नज़र

जुहार करना : आदर के साथ झुककर नमस्कार करना

क्षितिज-अटारी गहराई : अटारी पर पहुँचे अतिथि की भाँति क्षितिज पर बादल छा गए

दामिनी दमकी : बिजली चमकी, तन-मन आभा से चमक उठा

क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की : बादल नहीं बरसेगा का भ्रम टूट गया, प्रियतम अपनी प्रिया से मिलने नहीं आएगा यह भ्रम टूट गया

बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके : मेघ झर-झर बरसने लगे, प्रिया-प्रियतम के मिलन से खुशी के आँसू छलक उठे

दुष्यंत कुमार

हिंदी कविता में ग़ज़ल विधा को प्रतिस्थापित करने वाले कवि दुष्यंत कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के बिजनौर ज़िले के राजपुर नवादा में सन 1933 में हुआ था। अपने काव्य जीवन के प्रारंभ में दुष्यंत गीत लिखते थे और कवि सम्मेलनों में उन्हें गाया करते थे।

दुष्यंत कुमार की प्रारंभिक शिक्षा बिजनौर में ही हुई। उच्च शिक्षा के लिए ये इलाहाबाद आए। यहाँ से इन्होंने बी.ए. और एम.ए. किया। पढ़ाई के दिनों में प्रकाशकों के यहाँ बीच-बीच में ये अंशकालिक नौकरियाँ करते रहे। सरकारी नौकरी मिलने पर ये मध्य प्रदेश आ गए।

दुष्यंत कुमार का कवि हृदय अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल विधा तलाश रहा था। वह इनको ग़ज़ल के रूप में मिल गई। गीतकार और नई कविता के कवि के बीच का रास्ता खुल गया। ग़ज़ल विधा दुष्यंत के अनुकूल सिद्ध हुई। हिंदी पाठकों एवं श्रोताओं को एक सशक्त ग़ज़लकार मिल गया। दुष्यंत कुमार को लोगों ने हिंदी ग़ज़ल का प्रवर्तक कहा, हालाँकि त्रिलोचन जैसे अनेक कवि बहुत दिनों से हिंदी में ग़ज़ल लिख रहे थे।

आधुनिक हिंदी ग़ज़ल, गद्यगीत और काव्य नाटक के शिल्प में दुष्यंत कुमार की अपनी अलग पहचान है। अनुभूति की सच्चाई, अभिव्यक्ति की गहराई, आत्मीयता एवं सहजता उनके काव्य के प्राणतत्त्व हैं।

दुष्यंत कुमार की मृत्यु सन 1975 में हो गई। इनकी पुस्तकों के नाम हैं-**आवाज़ों के घेरे, जलते हुए वन के वसंत, सूर्य का स्वागत, एक कंठ विषपायी** और **साये में धूप।**

दुष्यंत कुमार की दो कविताएँ यहाँ दी जा रही हैं। पहली कविता में गांधी जी के बार-बार जन्म लेने की सच्चाई की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। दलित, क्षत-विक्षत, विवश और

अभावग्रस्त मानवता को उठाने और उसे सहारा देने के लिए इस संसार में गांधी को पुनः पैदा होना ही होगा, उस गांधी को जिसने जीवन में कठिन से कठिन यातना सहकर भी अंधेरे में भटकती जनता को जीने का मार्ग दिखाया ।

दूसरी कविता में इंगित है कि आज की दुनिया का वातावरण अनेक गंभीर समस्याओं और प्रश्नों के धुँधलके से आच्छन्न है। इनके समुचित समाधान के लिए सच्चाई की तह तक (सूर्य तक) जाने की ज़रूरत नहीं समझी जाती । ऐसा नहीं है कि इन पर विचार-विमर्श नहीं होता । पक्ष-विपक्ष में लंबी बहसें होती हैं किंतु वे किसी समुचित निष्कर्ष तक पहुँचें, उससे पहले ही निहित स्वार्थों के कारण समझौता हो जाता है।

गांधी जी के जन्मदिन पर

मैं फिर जनम लूँगा
फिर मैं
इसी जगह आऊँगा
उचटती निगाहों की भीड़ में
अभावों के बीच
लोगों की क्षत-विक्षत पीठ सहलाऊँगा
लँगड़ाकर चलते हुए पाँवों को
कंधा दूँगा
गिरी हुई पद-मर्दित पराजित विवशता को
बाँहों में उठाऊँगा ।

इस समूह में
इन अनगिनत अचीन्हीं आवाज़ों में
कैसा दर्द है !
कोई नहीं सुनता !
पर इन आवाज़ों को
और इन कराहों को
दुनिया सुने मैं ये चाहूँगा ।

मेरी तो आदत है
रोशनी जहाँ भी हो
उसे खोज लाऊँगा
कातरता, चुप्पी या चीखें,
या हारे हुओं की खीज
जहाँ भी मिलेगी
उन्हें प्यार के सितार पर बजाऊँगा ।

जीवन ने कई बार उकसाकर
मुझे अनुल्लंघ्य सागरों में फेंका है
अगन-भट्टियों में झोंका है,
मैंने वहाँ भी
ज्योति की मशाल प्राप्त करने के यत्न किए
बचने के नहीं,
तो क्या इन टटकी बंदूकों से डर जाऊँगा ?

तुम मुझको दोषी ठहराओ
मैंने तुम्हारे सुनसान का गला घोंटा है
पर मैं गाऊँगा
चाहे इस प्रार्थना सभा में
तुम सब मुझ पर गोलियाँ चलाओ
मैं मर जाऊँगा
लेकिन मैं कल फिर जनम लूँगा
कल फिर आऊँगा ।



मत कहो, आकाश में कुहरा घना है

मत कहो, आकाश में कुहरा घना है,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

सूर्य हमने भी नहीं देखा सुबह से,
क्या करोगे, सूर्य का क्या देखना है।

इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछी है,
हर किसी का पाँव घुटनों तक सना है।

पक्ष औ' प्रतिपक्ष संसद में मुखर हैं,
बात इतनी है कि कोई पुल बना है।

रक्त वर्षों से नसों में खौलता है,
आप कहते हैं, क्षणिक उत्तेजना है।

हो गई हर घाट पर पूरी व्यवस्था,
शौक से डूबे जिसे भी डूबना है।

दोस्तो! अब मंच पर सुविधा नहीं है,
आजकल नेपथ्य में संभावना है।

प्रश्न - अभ्यास
गांधी जी के जन्मदिन पर

मौखिक

1. लँगड़े पाँवों को कंधा देने का क्या तात्पर्य है ?
2. समूह में अनगिनत अचीन्हीं आवाजें किनकी हैं ?
3. समाज की किन कमज़ोरियों को गांधी जी प्यार की भाषा देना चाहते हैं ?

लिखित

1. गांधी जी के कौन-से अनुभव हैं जिनके कारण वे 'टटकी बंदूक' की कोई फ़िक्र नहीं करते?
2. गांधी जी पुनर्जन्म क्यों लेना चाहेंगे ?
3. कवि ने गांधी जी के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?
4. निम्नलिखित का भावार्थ स्पष्ट कीजिए –
   (क) मुझे अनुल्लंघ्य सागरों में झोंका है।
   (ख) मैंने तुम्हारे सुनसान का गला घोंटा है।
5. इस कविता के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए ।

योग्यता-विस्तार

1. सोहनलाल द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त और सुमित्रानंदन पंत ने भी गांधी जी पर कविताएँ लिखी हैं। उन्हें खोजकर पढ़िए और प्रस्तुत कविता से उनकी तुलना कीजिए ।
2. राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी के योगदान के आधार पर निम्नलिखित कथनों की सार्थकता सिद्ध कीजिए –
   (क) मेरी आदत है, रोशनी जहाँ भी हो उसे खोज लाऊँगा ।
   (ख) तो क्या इन टटकी बंदूकों से डर जाऊँगा ?

मत कहो, आकाश में कुहरा घना है

मौखिक

1. आकाश का घना कुहरा जीवन के किस पक्ष की ओर संकेत करता है ?
2. 'सूर्य का क्या देखना है ' में मुख्यतः किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है –
   (क) सच्चाई से डरने के भाव की
   (ख) समस्या के समाधान के प्रति उदासीनता की
   (ग) सूर्य के महत्त्व की स्वीकृति की
   (घ) कुहरे के प्रति ममत्व भाव की
3. कहीं-न-कहीं हर कोई दोषी है का भाव कविता की किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है ?
4. समस्याओं के समाधान न होने से उपजे जनता के गंभीर गुस्से को नेता लोग क्या कहकर टाल जाते हैं ?

लिखित

1. 'क्षणिक उत्तेजना है' कहकर समस्या से बचकर निकल जाना कहाँ तक उचित है ?
2. पक्ष-विपक्ष की बहसें किसी समुचित निष्कर्ष तक क्यों नहीं पहुँच पातीं।
3. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय समझाइए –
   (क) हो गई हर घाट पर पूरी व्यवस्था,
   शौक से डूबे जिसे भी डूबना है।
   (ख) दोस्तो, अब मंच पर सुविधा नहीं है।
   आजकल नेपथ्य में संभावना है।

योग्यता-विस्तार

साये में धूप दुष्यंत कुमार की गज़लों का संग्रह है। पुस्तकालय से यह पुस्तक लेकर इसमें से अपनी पसंद की गज़लें छाँटिए और उन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाइए ।

शब्दार्थ और टिप्पणी

क्षत-विक्षत : घायल

कंधा देना : सहारा देना

पद-मर्दित : पैरों से कुचली गई

अचीन्हीं : बेपहचानी, अनजानी

कातरता, चुप्पी.....बजाऊँगा : लोगों की कातरता, चुप्पी, चीख और खीज को प्यार के साथ दुनिया के सामने रखूँगा

अनुल्लंघ्य : (अन्+उत्+लंघ्य) जिसे लाँघा न जा सके

मुझे अनुल्लंघ्य सागरों में फेंका है : मेरे लिए भीषण कठिनाइयाँ पैदा कर दीं

अगन-भट्टी : आग की भट्ठी

टटकी : तुच्छ, छोटी-मोटी

मैंने तुम्हारे सुनसान का गला घोंटा है : निविड़ एकांत में रचे षड्यंत्रों को असफल बनाया है

आकाश का कुहरा : जीवन में व्याप्त समस्याएँ

पाँव घुटनों तक सना है : हर कोई दोषी है

क्षणिक उत्तेजना : क्षण भर रहने वाला आवेग

हो गई ....डूबना है : सब जगह बेईमानी के अवसर उपलब्ध हैं

आजकल नेपथ्य में संभावना है : नीतियाँ प्रायः एकांत में और गुप्त ढंग से तय होती हैं

